काव्य सरिता

(मैथिली कविता संग्रह)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक
गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा
(दरभंगा)
मो.-8986261756

काव्य सरिता

(मैथिली कविता संग्रह)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक
गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा
(दरभंगा)
मो.-8986261756

KAVYA SARITA : Maithili Poems by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2019, ₹ **150/-**

© लेखकायत्त

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला- दरभंगा
पिन- 847233 (बिहार)

प्रथम संस्करण : वर्ष 2019

पोथी प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : ₹ 150/-

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण

पूज्यवर पिताजी **स्व. बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. गोसाउनि देवीक**
पुण्यस्मृतिमे
सादर समर्पित ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

अभिनन्दन

(1)

नन्द कुमार अमन्द लेखनीसँ आनन्दक सृष्टि करैत
भरल **काव्य-सरिता** केँ नव-नव सुन्दर गीतक वृष्टि करैत
कवि-हृदयक उमड़ैत श्याम घन घुमड़ि-घुमड़ि झमझम बरिसैत
कय रहलै आह्वान– आउ, अपनहुँ नहाउ हेलैत-गबैत

(2)

थिक सरिताक स्वभाव– जखन जे जेना जतऽसँ जाइ मिलैत
सभकेँ लैत बढ़ैत चलय, नहि गुण-प्रकारमे भेद बुझैत
मानू सभकेँ अपन छुअनसँ तनक मैलकेँ अछि धो दैत
तदपि रहय निर्मले सदा ओ जेँ कि अनवरत रहय बहैत

(3)

अहू **काव्य-सरिता** मे बहि-बहि कविक विविध पद अछि उछलैत
भक्ति-वन्दना, ऋतुक योजना, नारि-गर्जना, पुरुष कनैत
झूमर, कजरी, साक्षरता, परिवार-नियोजन कहुँ मचलैत
बाढ़ि, वोट, आतंकवाद, टाकाक पटाका कतहु फुटैत

(4)

विविध रुचिक सभ रसक मनोरम पद-रचनामे निरत रहैत
संगहि कथा, निबन्ध, उपन्यासादि गद्य रहला विरचैत
मैथिलीक एकान्त सु-सेवक, कत पोथीक सनेस बँटैत
श्रील 'नन्द'जीकेँ अभिनन्दन एहि कृतिक हित छियनि करैत

दरभंगा
डॉ. जयकान्तमिश्र-जन्मदिवस
19 नवम्बर 2019

लेखकीय

प्रस्तुत पोथीमे वंदना, देवी गीत, नचारी, लोकभजन, लोकगीत आ सामाजिक राजनीतिक परिदृश्यक झांकी कविताक माध्यमे दर्शाओल जयबाक कारण एकर नाम काव्य सरिता देल गेल अछि ।

कविता साहित्यक ओ विधा थिक, जाहिसँ कम शब्दमे वा सांकेतिक रूपमे कोनो विषय वस्तुक उल्लेख कयल जा सकैछ । दोसर शब्दमे एहि विधाकेँ गागरमे सागर भरब कहल गेल अछि । हमरा साहित्य आ कवितासँ दूर-दूर धरि कोनो सम्बन्ध वा लगाव नहि छल मुदा लोक विधाक गीत-नाद हम वचपनहिसँ सुनैत-गबैत आबि रहल छलहुँ आ अही क्रममे हम लोक गीत कलाकारक रूपमे आकाशवाणी भागलपुरसँ जुड़लहुँ ।

ओहिठाम गपक क्रममे हमरा आदरणीय विरेन्द्र कुमार शुक्ला तत्कालीन सहायक केन्द्र निदेशकसँ कविता रचना करबाक परामर्श भेटल । हम कोनहुनाक' तीनटा कविताक रचना कयल, जकर प्रसारण सेहो आकाशवाणी भागलपुरसँ भेल आ अहीक संग हम श्रीमान् शुक्लाजीसँ दुनू हाथ जोड़ि कहलियन्हि, 'श्रीमान् ! हमरा लेल कोनो काज असम्भव नहि अछि, सिवाय एहि कविता लेखनक । आदरणीय शुक्लाजी हँसैत कहलन्हि, ''अहाँ खूब कविता लीखब । अहाँमे हम ओहि प्रतिभाकेँ देखि रहल छी ।''

हम पुछलिन्हि, ''ई गप अपने कोन आधार पर कहि रहल छी ?'' ओ कहलन्हि, ''कोयलाक खदानसँ मजदूर हीराकेँ सेहो कोयले

बुझि उठाक' फेकि दैत छैक मुदा पारखी लोक ओकरा उठाक ल' जाइत अछि आ तरासैत अछि । तखन ओ हीराक रूपमे अबैत छैक ।

आठ अप्रील 1991 बैसाख कृष्ण नवमी सोमक' हमर माय स्व० गोसाउनि देवी हमरा सभकेँ टूगर बना, अपना स्नेहसँ वंचित कयलन्हि । ओही वियोगमे शोकाकुल भावसँ हुनके चित्रकेँ सोझाँमे राखि किछु कविताक रचना कयलहुँ आ ताहि दिनसँ हमर कविता आ कथाक धारा फूटि पड़ल । एहि लेल हम आदरणीय विरेन्द्र शुक्ला जीकेँ आभार प्रकट करैत छियैन्हि जे हमरा सुखल मनमे कविताक अंकुर प्रस्फुटित कयलन्हि, जे मायक वियोगमे धरातल पर उतरल ।

सर्वप्रथम सार्वजनिक रूपसँ काव्य पाठक अवसर भगवान पुस्तकालय भागलपुरमे भेटल आ से अवसर प्रदान कयलन्हि, डा० विष्णु किशोर झा 'बेचन' तत्कालीन प्रतिकुलपति, तिलकामाँझी विश्वविद्यालय भागलपुर सम्प्रति मंत्री भगवान पुस्तकालय भागलपुर आ अध्यक्ष मिथिला परिषद भागलपुर । हलांकि ओ कार्यक्रम हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित कयल गेल छलैक मुदा डा० 'बेचन' मैथिलीक प्रति जे निष्ठा आ हमरासँ स्नेहकेँ रोकि नहि सकलाह आ हमरा विशेष रूपसँ बजौने रहथि । एहि लेल हम हुनकर सदैव अभारी रहबन्हि ।

हमर कर्मभूमि भागलपुर रहल अछि । अपन चाकरीक तैंतीस वर्ष हम ओतहि खपाओल आ ओहिठाम मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे लागल रहलहुँ । हलांकि ओ अंगिका क्षेत्र मानल जाइत अछि । ओहिठामक स्थानीय भाषा अंगिका थिक । ओ लोकनि मैथिलीक विरोध करैत छथि मुदा मैथिली कविक रूपमे हमरा ओहिठाम बहुत सम्मान भेटल । भागलपुरक सब कवि सम्मेलनमे मैथिल कविक रूपमे एक मात्र हम जाइते छलहु, सुदूर क्षेत्रमे सेहो ओ लोकनि हमरा ल' जाइत छलाह आ हम मैथिलीक प्रचार-प्रसारक निमित्त जाइत रहलहुँ । तेँ हम भागलपुरक कवि लोकनि सर्वश्री कविवर राजकुमार (हिन्दी मगही, अंगिका) रामावतार राही । हिन्दी, अंगिका) आमोद कुमार मिश्र (हिन्दी, अंगिका) एवं समस्त कविमित्रकेँ धन्यवाद ज्ञापित करैत छियनि ।

हम आभारी छी साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ सम्मानित, प्रखर आलोचक प्रो. डा. भीमनाथ झाजीक, जनिकर प्रचुर प्रोत्साहन आ आशीर्वाद हमरा भेटैत रहल अछि । पुनः आभारी छी साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित प्रखर आलोचक सेवा निवृत्ति लेखापाल डा. योगानन्द झाजीक, जनिकर रचनात्मक आ भावनात्मक सहयोग समय-समय पर भेटैत रहल अछि ।

कविता रचनामे श्रीमती अमल देवी हमर गृह संगिनिक असीम सहयोग भेटल अछि । ओ सतत हमरा प्रेरित करैत रहलीह अछि । संगहि डा. भुवन भूषण एवं गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंचक सब सदस्यकेँ रचनात्मक सहयोगक लेल धन्यवाद ।

पोथीमे दर्शाओल घटना, पात्र आ स्थान सब किछु काल्पनिक अछि । कदाचित कोनहु घटना-पात्र वा स्थान किनकहुँसँ मिलैत होअय, तँ एहि लेल क्षमा-प्रार्थी छी ।

पोथी प्रकाशन कार्य सुचारु रूपसँ सम्पादित करबाक लेल समस्त प्रिंटवेल परिवारकेँ धन्यवाद आ शुभकामना ।

सुखरात्रि
27.10.19

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'
उफरदाहा
दरभंगा- 847233
सम्पर्क- 8986261756

काव्य सरिता

काव्य सरिता

(मैथिली कविता संग्रह)

(१)

गणेश वंदना

जय गणेश गणनायक देवा ।।
सकल अमंगल मूल हटै अछि, सुमिरनसँ सब कष्ट कटै अछि ।
करु उद्धार हे देवक देवा ।।
माँ रक्षा लेल शीश कटौलहुँ, प्रथम पूज्य त्रिभुवनमे भेलहुँ ।
भोग लगै अछि लड्डू मेवा ।।
एकदंत भुज चारि सुशोभित, लम्बोदर गजवदन विनोदित ।
ऋद्धि-सिद्धि सब करइछ सेवा ।।

(२)

गणेश वंदना

गणराज विनायक विघ्नहरण ।
हे गौरीनंदन अयलहुँ शरण ।।
रिद्धि-सिद्धि के दाता प्रभु सब विघ्न अविद्या दूर करू ।
मंगल करु हे मंगलदाता, सकल अमंगल झट द' हरू ।
विपति हरू कत कयल यतन ।। गण० ।।
प्रथम पूज्य जगमे गौरीसुत, मोदक ग्रहण करै छी यौ ।
खन गौरी खन महादेव के कोड़मे मगन रहै छी यौ ।
खनहि दौड़ै छी सगरो भुवन ।। गण० ।।

सुर हित असुरक नाश करै छी, संतन के सुख दै छी यौ।
दुखिया केर दुःख दूर करै छी, आशा पूर्ण करै छी यौ।
सभ केर मेटिऔ ताप-तपन ।। ० ।।

(३)

गणेश वंदना

खेलइत छथि गौरी के अंगना ।
वक्रतुंड महाकाय गजानन, गौरी के ललना ।। ० ।।
लम्बोदर गजवदन मनोहर ।
महादेव गौरी सुत सुंदर ।
ऋद्धि-सिद्धि के दाता गणपति,
सकल विघ्न हरणा ।। ० ।।

एकदंत भुज चारि सुशोभित ।
चतुर सुजान महान विमलमति ।
लड्डूक भोग लगै छनि नितदिन
पुरबथि मनकामना ।। ० ।।

प्रथम पूज्य छथि सब देवनमे ।
दुष्टक नाश करै छथि क्षणमे ।
धावक सबसँ तेज जखन कि
वाहन छनि मुसना ।। ० ।।

(४)

गणेश वंदना

खर्वं स्थूलतनुः गजेन्द्रवदनं लम्बोदरम् सुन्दरम्
विघ्नेशं मधुरांधलुब्ध मधुपं व्यालोल गण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारिताहितजनं सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदम् कामदम् ।

गणपति गोर लगै छी यौ ।
महादेव गिरिजा केर नन्दन ध्यान धरै छी यौ ।।
आदि देव अहीँ सबसँ पहिने पूजल जाइ छी यौ।
रिद्धि सिद्धि सब नत मस्तक भऽ, चरण गहै छथि यौ ।। गणपति...
सब देवनमे होड़ भेल, अहाँ सबसँ पाछाँ यौ
मूस चढ़ल अहाँ सबसँ आगाँ बुद्धिक बल पर यौ ।। गणपति...
खन गौरी खन महादेवकेँ, कोड़ चढ़ल छी यौ ।
लम्बोदर गजवदन मनोहर, विघ्नहरण छी यौ ।। गणपति...
एकदन्त भुज चारि परम, आदर पाबै छी यौ ।
''नन्द''क विघ्न हरू गणनायक शरणागत छी यौ । गणपति...

(आकाशवाणी, भागलपुरसँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(५)

सरस्वती वंदना

दयामयि ! दिअ' एहेन वरदान ।
दूर करू तम अंतर्मन केर, भरि ज्योतिर्मय ज्ञान ।।
जप तप मंत्र ने पूजा जानी, और ने जानी ध्यान ।
हंसवाहिनी, वीणाधारिणि, करू जगक कल्याण ।।
जकरासँ जे चाहू कराबू, जानैछ सकल जहान ।
धवल वस्त्र मन अछि अति निर्मल, केओ नहि अहाँक समान ।।
सुर हित लेल अहाँ करबाओल, कैकेयीकेँ बदनाम ।
अहींक कृत्यसँ जगमे बढ़लनि, 'नन्द' राम केर मान ।।

(६)

सरस्वती वंदना

शारदे वर दिअ' हे अम्बे, शारदे माँ वर दिअ ऽऽ ।
मेटु तम अज्ञान, ज्ञानक ज्योतिसँ उर भरि दिअ ऽऽ ।
हंसवाहिनी शुभ्रवस्त्रा, मृदुल वीणाधारिणी ।
कमल आसन दिव्यरूपा, देवी विद्यादायिनी ।
हरू चित्तक दोष सबटा, शांति सरितामृत दिअ ऽऽ ।। शारदे...
सुरक लेल सुरसा जे बनलहुँ, मंथरा केर माँथ चढ़लहुँ ।
किछु ने दुर्लभ अछि अहाँसँ, काली केर अज्ञान हरलहुँ ।
सतत अर्चना करी अहीँकेँ ज्ञान आ प्रतिभा दिअ ऽऽ ।। शारदे...
मनक मरुस्थल के अपना, सुर-लय सँ भरि दिअ' ।
कंठ वाणीक मधुरतासँ सरस जीवन करि दिअ' ।
''नन्द'' स्नेहक दृष्टिसँ सब, कलुषता के हरि लिअ ऽऽ ।। शारदे...

(विधात्रीसँ)

(७)

माँ

सब केर माँ ममता केर मूर्ति ममता त्यागि गेलहुँ कतए माँ ।।
हम अनाथ बौआ-टौआ कऽ थाकि हारि कए एलहुँ माँ ।
कतबहु कनलहुँ कतबहु खिजलहुँ, किछुओ अहाँ ने सुनलहुँ माँ ।
कोन अपराध भेल हमरासँ सपनहुमे कहि जइतहुँ माँ ।।
दुःख जीवन केर लक्ष्य बनौलहुँ सुख सपनहु नहि देखलहुँ माँ ।
फुटि रहल छल किरण सुखक एक, देखए लेल नहि रहलहुँ माँ ।।
बनि माँझी दुःख केर सागरसँ, सब के छोड़ि पड़ेलहुँ माँ ।
छोड़ि अहाँ पतवार के पकड़त, सब बिचहि डुबि जाएत माँ ।।
के अवलम्ब अहाँ बिनु जननी, ककरा कहब अपन दुःख माँ ।
एहि पापी दिश केओ नहि ताकए, सब स्वारथमे आन्हर माँ ।।

क्षणमे की छल, क्षणहिमे की भेल, आँखि मुनि अहाँ लेलहुँ माँ ।
संतानक अपराध बिसरबै, ''नन्द''क माय गोसाउनि माँ ।।

(विधात्रीसँ)

(८)

माँ

माँ गै माँ, तू हम्मर माँ । माँ गै माँ तू सब केर माँ ।।
कतबहु दुःखमे धैर्य ने छोड़लें । कोन दुःखसँ सब नाता तोरलें ।।
सब के तो जुरबैत रहलें । हमरा बेरि किए मुँह फेरलें ।।
सब दिन सबके सनाथ केलें । कोन अपराध अनाथ केलें ।।
कतबहु पूत कपूत भेलौ । तोरा जँ सब बिसरि गेलौ ।।
तोरा नहि बिसरक चाहियौ । कानि कानि हम कते कहियौ ।।
नित दिन तोरे पर लागल ध्यान । सब लागै तोरा बिनु आन ।।
''नन्द''क जीवन केर अरमान । माय गोसाउनि बिनु श्मशान ।।

(विधात्रीसँ)

(९)

माँ

कोन अपराध तेजल हे जननी, अयलहुँ आश लगाय ।
हे मैया, कतए नुकेलहुँ जाय ।।
केवल आश भरोस अहीँ केर । करबै कोन उपाय,
हे मैया कतए नुकेलहुँ जाय ।।
टूगर बनल फिरै छी वन-वन, शरण लगायब मैया कौखन ।
अपना शरण ने राखब मैया, मरब जहर विष खाय ।। हे० ।।
कतबहु करब पछोड़ ने छोड़ब, जननी हे अहाँ मुँह नहि मोड़ब ।
हमहू छी संतान अहीँ केर राखि लिअऽ अपनाय ।। हे० ।।
कतए गेलहुँ की कहु हे मैया, के खेबत मोर जीवन नैया ।
''नन्द''क माय गोसाउनि अहीँटा, आँचर दिअऽ ने ओढ़ाय ।। हे० ।।

(विधात्रीसँ)

(१०)

माँ

सब किछु छोड़ि द्वारि हम अयलहुँ, शरण लगाबू हे माता ।
केवल आश अहीँ केर रहि गेल, आश ने तोरू हे माता ।।
अनका लेल सदिखन अहाँ मैया, कंचन महल बनाबै छी ।
हमरा केवल अपना चरणक, सेवक बनबू हे माता ।।
सबहक लेल दिन राति सोचै छी, रतन भरै छी हे माता ।
एहि टूगर के बिसरि किए अहाँ, चुप बैसल छी हे माता ।।
कतबहु भेल अपराध बिसरियौ, क्षमामूर्ति अहाँ हे माता ।
सब प्राणी केर पाप हरै छी, हमर पाप हरु हे माता ।।
''नन्द'' कखन धरि भटकैत रहतै, माय गोसाउनिक माया मे ।
स्नेहक जलसँ दग्ध हृदयकेँ, आबि जुराबू हे माता ।।

(विधात्रीसँ)

(११)

माँ

हे जननी, जेबै ककरा कोड़ ।।
जप तप पूजा पाट ने जानी, विनती करब कोना तोर ।
ककरा देहरि जाय क' बैसब, पोछत के आँखिसँ नोर ।।
नाव पड़ल मझधार बीचमे, भेटए ओर ने छोर ।
चहु दिश अंधकारमय लगइछ, देखी ने कतहु इजोर ।।
के मोर सुनतै विरह व्यथा सब, ककरासँ करब निहोर ।
कतबहु जाय नुकैबह तैयो, छोड़ब ने तोहर पछोड़ ।।
एक जालमे सबकेँ बान्हल, बान्हल प्रेमक डोर ।
सबकेर बंधन बन्हले रहि गेल भेलियै केहन कठोर ।।
नन्दो गेल भटकि रस्तासँ जपइत साँझ और भोर ।
माय गोसाउनि कोना बिसरलहुँ नाम जकर छल ठोर ।।

(विधात्रीसँ)

(१२)

माँ

छोड़बौ ने तोहर दुआर गे जननी,
छोड़बौ ने तोहर दुआर ।।
आँचरसँ के झाँपि नुकौतै, कानैत के, के हँसि बैसौतै ।
रहि-रहि मनक बात कहत के, आब के करत दुलार, गे जननी ।।
नीक ने लागै महल अटारी, नीक ने लागै दुनियादारी ।
तोरे आँचर नीक लगै छल, नीक लागै तोहर चिनुआर, गे जननी ।।
तोरा छोड़ि कतए हम जेबै, तोरा बिना कतए रहि पेबै ।
जकरा-जकरा ओहिठाँ गेलिये, सब देलकै दुत्कार, गे जननी ।।
''नन्द''क प्राण कोना कऽ बचतै, के ओकरा लेल जितिया करतै ।
जीवन भरि परतारैत रहलेँ, बहौने स्नेहक धार, गे जननी ।।

(विधात्रीसँ)

(१३)

माँ

व्यथा मोर के पतिएतै माँ,
व्यथा मोर के पतिएतै माँ ।।
ककरा कहबै के दुःख सुनतै, मनक व्यथा केओ बाँटि ने लेतै ।
जतबा स्नेह अहाँसँ पाओल, केओ नहि देतै माँ ।।
एहि दुनियाँसँ सब केओ जेतै, ई कटु सत्य सभक लेल हेतै ।
केवल माँ-बेटा केर नाताटा रहि जेतै माँ ।।
''नन्द'' क आश कोना अहाँ तोड़लहुँ माय गोसाउनि मुँह किए मोड़लहुँ ।
कोना बनौलहुँ हमरा सबके टूगर-टापर माँ ।।

(विधात्रीसँ)

(१४)

देवी गीत

मैया आबि रहल छथि द्वारि, सब केओ दरशन लेल छथि ठाढ़ि ।
जकरा यशकेँ तीनू लोकक, गाबै छै नर-नारि ।। ० ।।
नव रात्रिमे मैया अओतै, सबकेर देखितहि नयन जुरेतै ।
क' रहलै अछि सब तैयारी, सजा रहल पूजाकेर थारी ।
नेना-बूढ़, जुआन नचै अछि, सब मैयाकेर गुण गबै अछि ।
माँकेर मंदिर सजा रहल छै, ढोल-मजीरा बजा रहल छै ।
सजि-धजि मैयाक स्वागत करिऔ, राखू बाट बहारि ।। ० ।।
मैया सबकेर आश पुरौतै, जे-जे मँगतै, से-से पओतै ।
निर्धन पओतै अन-धन सोनमा, आन्हर पओतै नयन रतनमा ।
कोढ़िया पओतै निर्मल काया, बाँझीकेँ भरि देथिन्ह माया ।
खाली हाथ केओ नहि जयतै, सब केर बिगड़ल भाग बनौतै ।
सबकेर कष्ट मेटि क' जयतै, देतै आँचर झाड़ि ।। ० ।।
तीरा-मीरा जूही बेली, गेंदा, अड़हुल आर चमेली ।
अपराजिता, कमल ओ मधुकी, करबीरो केर लागल लुधकी ।
पीयर कनैलो, लाल गुलाब, मह-मह करै माँकेर मेहराब ।
बेलपातसँ भरि गेल डाली, फूल लोढ़ि क' अनलक माली ।
रंग-बिरंगक फूलो फूलल, फूलल हरसिंगार ।। ० ।।
कानो मैयाकेर कुंडल सोहै, उर स्फटिक हार मन मोहै ।
हाथक कंगना खन-खन खनकै, माँथक बिन्दिया चमचम चमकै ।
चूड़ामणि नाको नकभेष, कारी घटा सन सुन्नर केश ।
पैरक नूपुर रुन-झुन बाजै, हाथमे खप्पर खड्ग बिराजै ।
नागहार लेने छै कोना, देखू नयन निहारि ।। ० ।।

रवि-सोम मैया गज चढ़ि अओतै, अन्न-जलसँ तृप्त करौतै ।
शनि-मंगल घोड़ा चढ़ि अओतै, छत्र-भंग निश्चिय भ' जयतै ।
गुरु शुक्र केर दोला यान दुश्मनके चट लेतै प्राण ।
बुध क' नौका करे विहार, सर्व सिद्धि कारक व्यवहार ।
सिंहवाहिनि दुर्गा मैया, देतै सबकेँ तारि ।। ० ।।
रवि-सोम महिषा चढ़ि जयती, शोकमे रहतै सकल समाज ।
शनि-मंगल चरणायुधकारी, बढ़त विकलता होयत ने काज ।
बुध-शुक्र गजगामिनि होयती, वृष्टिसँ सगरो मुदित समाज ।
गुरुवार नरवाहन करइत शुभ-शुभ साजू मंगल साज ।
अगिला वर्ष आबि हे जननी, करबै हमरो पुछारि ।। ० ।।
साध्वी-सती भवप्रीता भवानी, आर्या दुर्गा जया ब्रह्माणी ।
आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणि, चित्रा चण्ड पिनाकधारिणि ।
भव्या सत्यानन्द स्वरुपिणि, चण्ड-मुण्ड महिषासुर नाशिनि ।
सर्वासुर विनाशकारी माँ, पतित पावनी अघहारी माँ ।
ब्रह्मवादिनी कात्यायिनि माँ 'नन्द' के दिऔ उबारि ।। ० ।।

(१५)

देवी गीत

जननी ! तोरा सन नहि आन ।
थाकि-हारि मन मारि छी बैसल, भेलहुँ झूर-झमान ।। जननी० ।।
बाट-घाट बौआ-टौआ क', मंदिर-मंदिर तकलहुँ जा क' ।
केओ नहि डेन पकड़ि बैसौलक, करब कतेक बखान ।। जननी० ।।
सब केओ देखि मुँह घुमबै छै, केओ नहि खोज पुछारि करै छै ।
ककर-ककर जा चरणके गहबै, देतै के स्थान ।। जननी० ।।
पूत कपूत होइत अछि जगमे, माय ने सुनल कुमाय सपनमे ।
माफ करु अपराध अहाँ बिनु, सब सुख धूरि समान ।। जननी० ।।

(१६)

देवी गीत

अहाँ केर मोहिनि मुरति हे मैया नीक लागैए ।
सजौने छी मनक मंदिर झलक अहीँ केर पयबा लए ।।
कोना बिसरल छी हे अम्बे, कोना छी मूक भ' बैसल ।
किएक नहि सुधि हमर लैत छी, किएक नहि चैन भेटैए ।। ० ।।
करू करुणा हे करुणामयि, कतेक आशा लगौने छी ।
पुरबिऔ आश हे अम्बे, चरणमे प्रीत जागैए ।। ० ।।
सताबैछ मोह-मद-माया, जगत केर रीति ई बुझू ।
क्षमा करु 'नन्द' केर अपराध, दुनियाँ तीत लागैए ।। ० ।।

(१७)

देवी गीत

विनती कोना करू, हे मातारानी ।
निज दुःख कहब कतेक कानि-कानी ।।
दुःखहिमे बीतल सगरो जीवन । सपनहुमे नहि सुख केर दर्शन ।
दया करू हे देवि दयानी ।। ० ।।
सबकेर दुख अहीँ दूर करै छी । हमरहि बेरि किएक मुँह फेरै छी ।
विपत्ति हरण करू हे महारानी ।। ० ।।
चण्ड-मुण्ड-महिषासुर मारल । धरणिसँ पापक भार उतारल ।
अहीँक बिना शिव-शम्भु मसानी ।। ० ।।

(१८)

देवी गीत

अहाँ बिनु ककरहु चैन कोना । हे माँ बिनु ककरहु चैन कोना ।।
कृपा बिना हे माय अहाँकेर, भटकए जेना-तेना ।।

आगू-पाछू किछु ने देखलियै, सबकेँ छोड़ि अहीँ लग एलियै ।
तैओ मन व्याकुल रहि गलै, किएक अहाँ हमरा लेल भेलियै ।
एतेक कठोर कोना ।। ० ।।
कतेक दिनसँ आश लगौलहुँ, मनक मनोरथ पूर ने कयलहुँ ।
मनक व्यथा ककरासँ कहबै, टुगर-टापरके के सुनतै ।
डेन धरू कहुना ।। ० ।।
सबकेर सुनै छी, हमरहु सुनियौ, हमरहि बेर आँखि जुनि मुनियौ ।
कोन कसूर कयल हम अम्बे, कोन जनम केर ओलि सधौलियै ।
तरपी राति-दिना ।। ० ।।
सुर नर मुनि सब गुण गाबै छथि, अहीँक चरण पर शीश धरै छथि ।
सबकेँ अहाँ उपछि क' देलहुँ, हमरहि बेर अलोपित भेलहुँ ।
डुमरीक फूल जेना ।। ० ।।

(१९)

देवी गीत

मन मंदिरमे मैयाक पूजा करू ।
धूप-दीपो लेसू, रक्त चानन घसू,
प्रेम-भावोसँ मैयाक ध्यानो धरू ।।
मैया भयहारिणि, मैया सुखदायिनि ।
मैया जगतारिणि, मैया भवपारिणि ।
स्नेहसँ माँके चरण पखारल करू ।।
मैया करती सनाथ, रहत केओ नहि अनाथ ।
रहत दुःखक नहि लेश, मैया हरती कलेश ।
सतत श्रद्धासँ आरती उतारल करू ।।
मैया सिंह सवार, हरथिन पापक भार ।
करथि दुष्टक संहार, पहिरि मुंडक हार ।

कोनो विपत्तिमे हुनकहि पुकारल करू ॥
हम सब हुनकहि पूत, ओ तँ सब केर माय ।
हम तँ भेलहुँ कपूत, ओ ने हेती कुमाय ।
अपना आँचरमे हमरहु सम्हारल करू ॥

(२०)

देवी गीत

आश लगौने शरणमे अयलहुँ, जननी हमरा बिसरि कोना गेलहुँ,
अम्बे हमर पुकार सुनिऔ ।
जय माता, जय माता, जय माता, भक्त केर दुःख हरिऔ ॥
अहाँ नहि सुनबै तँ के सुनतै, दुःखक पहाड़ कोना क' उठतै ।
के अपना आँचर तर झँपतै, उठाक' कोरा माँथके चुमतै ।
करतै के हमरा दुलार कहिऔ ॥ जय० ॥
सौंसे दुनियाँ घुमि क' अयलहुँ, कतहु ने कोनहु ठाहर पओलहुँ ।
भरल पापसँ हमर पेटारी, राखि लिअ' अपनहि गोरथारी ।
अपनहि एकर जोगाड़ करिऔ ॥ जय० ॥
जे अयलै सबके अपनौलियै, हमरहि बेर कठोर बनलियै ।
एक बेर जँ दर्शन हेतै, सब झंझट क्षणमे हटि जेतै ।
मैया दया केर द्वार खोलिऔ ॥ जय० ॥

(२१)

देवी गीत

ठाढ़ि छी आङन तोर हे जननी, दरशन दिअ' ।
कखन हरब दुःख मोर हे जननी, दरशन दिअ' ॥
सब दिन सब केर आश पुरौलियै, हमरहि बेरि बिसरि किए गेलियै ।
भेलियै केहेन कठोर हे जननी, दरशन दिअ' ॥
जप तप किछुओ नहि हम जानी, कोना करू अर्चना हे शिवरानी ॥

छोड़ब ने अहाँक पछोड़ हे जननी, दरशन दिअ' ॥
सब दिन आँचर झाँपि नुकौलहुँ, मैया आइ एहेन किएक भेलहुँ ।
तोरू ने प्रेमक डोर हे जननी, दरशन दिअ' ॥
करिया झुम्मरि बहुत खेलौलहुँ, थाकि हारि हम अहीँ लग अयलहुँ ।
सूखल आँखिक नोर हे जननी, दरशन दिअ' ॥

(२२)

देवी गीत

हे जगजननी किएक ने सुनै छी ।
विपत्तिक बोझ मैया किएक ने हरै छी ॥
क्षमाशील अहाँ हम अपराधी, भरल सगर देह रोग-बेआधी ।
कतेक कहब अहाँ सबटा जनै छी ॥ ० ॥
जप तप पूजा पाठ ने जानी, केवल नाम जपै छी भवानी ।
शरण अयलहुँ किएक पट ने खोलै छी ॥ ० ॥
सब केओ उलहन अहीँके दै अछि, से सुनि हिय मोर हहरि उठै अछि ।
एतेक निठुर किएक माय बनै छी ॥ ० ॥
जे सब आयल अहाँक शरणमे, पुरलै मनोरथ एकहि क्षणमे ॥
'नन्द'क बेरि किएक पलक मुनै छी ॥ ० ॥

(२३)

देवी गीत

आबहुँ ताकू भटकि गेलहुँ । जननी हे किएक बिसरि गेलहुँ ॥
कतेक दिनसँ आश लगौलहुँ, दरशन लेल मैया बड़ तरपौलहुँ ।
कतेक अधम केँ तारि देलहुँ ॥ ० ॥
जानी नहि किछु विधि पूजाके, करब कोना हम ध्यान अहाँके ।
हम अज्ञानी मूढ़ भेलहुँ ॥ ० ॥
ककरो ने खाली हाथ घुरेलियै, हमरहिसँ किएक नजरि फेरलियै ।
केहेन कठोर हे माय भेलहुँ ॥ ० ॥

(२४)

देवी गीत

कतेक दिवस पर मैया अयलै अङना ।।
दीन-दुखी केर दुःख हरै छथि, पूतक घर सुख शान्ति भरै छथि ।
पूतक घर एलै बनिक' पहुनमा ।। ० ।।
बाँझीकेँ सुन्दर सुत दै छथि, कोढ़िनकेँ काया बाँटै छथि ।
निर्धनकेँ दै छथि अन-धन सोनमा ।। ० ।।
मैया सब केर आश पुराबै, खाली हाथ केओ नहि आबै ।
सबकेर आइ मगन भेलै मनमा ।। ० ।।
सिंह चढ़ल मैया जल्दी आबू, आबि क' 'नन्द'क दुःख मेटाबू ।
आइ जुरेतै हमरहु नयनमा ।। ० ।।

(२५)

देवी गीत

राग- बागेश्री

जयति जयति दुर्गे महारानी । करहु प्रणाम जोड़ि युग पाणी ।।
सिंहवाहिनी असुरविनाशिनि, सुर नर मुनि सबकेर सुख दायिनि ।
करहु कृपा हे मातु दयानी ।। ० ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश पूजिता, पितर नाग गंधर्व वन्दिता ।
राखू शरण हे माँ वरदायिनि ।। ० ।।

(२६)

देवी गीत

देवि दुर्गे दयानि भवानी हे माँ ।
तीनू लोकक पालक कल्याणी हे माँ ।।
सुनु विनती हमर, हरू दुःखक पहर ।
हम छी बेटा अहीँक, अहाँ माइयो हमर ।

हम छी टूगर अहीँ बिनु शिवानी हे माँ ।।
अयलहुँ अहीँकेर द्वार, मैया सुनियौ पुकार ।
गहल अहाँक चरण, टूटल सबटा भरम ।
भेलहुँ केहेन कठोर शिवरानी हे माँ ।।
मनमे रखने छी आश, अहाँ करू ने निराश ।
सबकेँ केलहुँ नेहाल, एक हमहीँ बेहाल ।
अहीँक प्रेमक हम छी दिवानी हे माँ ।।

(२७)

देवी गीत

सजि-धजि मैया हमरहि द्वार एलैए ।
पैदल नहि सिंह पर सवार एलैए ।।
करू पूजा केर ओरिआन, अक्षत बेलपात फूल पान ।
धूप-दीप सेहो बारु, माँकेर चरण पखारू ।
सुदिन दिन केहेन हमर भेलैए ।।
केओ चँवर डोलाबथि, केओ घंटी बजाबथि ।
केओ आरती सजाबथि, केओ भोग लगाबथि ।
सुफल जनम हमर आइ भेलैए ।।
करथिन सबके पुछारि, जे केओ दुखिया भिखारि ।
करथिन सबके गोहारि, जे केओ अयलनि दुआरि ।
सबके आश पुरेबाके जोगाड़ भेलैए ।।

(२८)

देवी गीत

हे मैया करै छी विनती, अहाँ जल्दी आबू ने ।
डूबै छी... डूबै छी बीच भँवरमे, कने पार लगाबू ने ।।

हे मैया दौड़ल अयलहुँ, अहाँ हमरा जुनि बिसरू ।
जँ अहीँ बिसरि जयबै तँ, के राखत अहीँ कहू ।
किए रूसल छी हमरासँ, हे मैया बाजू ने ।।
सबके अहीँ तारै छी, अहाँ सबके उबारै छी ।
किएक हमरहि बेरमे माँ, नहि नयन उघारै छी ।
गलती जे भेल हमरासँ, जुनि मनमे राखू ने ।।
जे जे अयलै सबके देलियै, ककरहु आश छुच्छ नहि केलियै ।
लै अछि नाम अहीँके सब केओ, काया माया सब किछु देलियै ।
हमरहि बेर भेलहुँ निर्मोही, मैया ताकू ने ।।

(२९)

देवी गीत

कोन कसूर हम कयलहुँ, हे मैया बिसरि किए गेलहुँ ।
अहीँ जगजननी, अहीँ महामाया । अहाँ ने करबै तँ करतै के दाया ।
सब किछु छोड़ि हम अयलहुँ ।। हे मैया...
जिनगी भरि बौआइते रहलहुँ । ककरहु लग ने शान्ति पओलहुँ ।
हारि थाकि क' अयलहुँ ।। हे मैया...
ककर ककर देहरि नहि गेलहुँ । ककरहु नहि अहाँ सन पओलहुँ ।
किएक कृपा नहि कयलहुँ ।। हे मैया...
हम छी पूत, अहाँ छी माता । कर्त्ता धर्त्ता भाग्य विधाता ।।
आँखि मुनि किए लेलहुँ ।। हे मैया...
निर्धन बुझि सब ठुकराबै । अपन जानि नहि शरण लगाबै ।
'नन्द'क सहारा ने देलहुँ ।। हे मैया...

(३०)

देवी गीत

अहिँक शरण हम अयलहुँ, हे मैया दुर्गा-भवानी,
अधम जानि ठोकरयलहुँ, किएक हे माता रानी ।।

अधम उधारिनि छी अहाँ मैया ।
पार करू मोर जीवन नैया ।
तारणहारि कहेलहुँ, हे मैया दुर्गा-भवानी ।। ० ।।
विपत्ति दूर करू आश पूर करू ।
जननी हमर अज्ञान हरण करू ।
मुक्तिक बाट देखाबू, हे मैया दुर्गा-भवानी ।। ० ।।
सब देवक आधार अहीँ छी ।
अहाँक बिना नहि पूर्ण केओ छथि ।
सभकेर मान बढ़ाबू, हे मैया दुर्गा-भवानी ।। ० ।।

(३१)

देवी गीत

हे जननी ! हमर दुःखक नहि ओर ।
दुःखहिमे बीतल सगरो जीवन, बीतल रैन आ भोर ।। ० ।।
सभकेर दुःख अहाँ दूर करैत छी ।
हमरहि बेरि किएक आँखि मुनैत छी ।
दीन जानि सभ केओ ठोकरओलक, बनू ने एहेन कठोर ।। ० ।।
बिनु मङनहि सभके सब दै छी ।
हमरा पर नहि दृष्टि फेरै छी ।
टूगर-टापर जानि तेजलिऐ, हहरि उठैछ मन मोर ।। ० ।।
सबकेँ तारि तारि दीअ' हमरो ।
गायब हम गुणगानो सगरो ।
क्षमा योग्य अपराध हमर नहि, अहाँ सभक छी तोड़ ।। ० ।।

(३२)

देवी गीत

हे अम्बे, राखू शरण लगाय ।
हम भूलल भटकल छी मैया, ककरा ठाहर जायब ।
अहाँ बिना दुःख सुनत के हमरो, राखत के अपनाय ।। हे अम्बे...।।
सबहक छी अबलम्ब अहीँ माँ, सबहक अहीँ सहारा ।
हमरहु अपना स्नेह-जालमे, राखि लिअ लपटाय ।। हे अम्बे... ।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव सदिखन, अहीँक शरण तकै छथि ।
पूत कपूतो होइछ जगमे, माय ने भेल कुमाय ।। हे अम्बे... ।।

(विधात्रीसँ)

(३३)

देवी गीत

नित उठि मैया के करबै अरजिया, राम करबै अरजिया ।
पूजब नित हे, अहीँ केर जगजननी ।।
छोड़लहुँ सब देवी-देवता, तेजलहुँ मंदिरवा, से तेजलहु मंदिरवा ।
जपब हम हे, अहीँ केर जगजननी ।।
नहि केओ देव, अहाँ सन निर्मल, अहाँ सन निर्मल ।
रटब हम नाम, अहीँ केर जगजननी ।।
खनहिमे काली, खनहिमे दुर्गा, खनहिमे दुर्गा ।
खनहिमे हे, मैया तारा जगजननी ।।

(विधात्रीसँ)

(३४)

देवी गीत

जगदम्ब अहीँक शरण रहबै ।। केओ नहि जकरा हम दुःख कहबै,
जग भरिसँ ठुकरायल छी अम्बे, अहीँक शरणमे आयल छी अम्बे ।।

दुःख अहाँ नहि सुनब तँ के सुनतै ।। जग...
सुर नर मुनि सब विनती करै छथि, अहीँ केर आगाँ हाथ जोड़ै छथि ।
सबहक सुनै छी तँ हमरहु सुनियौ ।। जग...
सुर लेल अहीँ असुरके मारल, धरनिसँ पापक भार उतारल ।
हे माय, कुमाय अहाँ नहि बनियौ ।। जग...

(आ० भा० सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(३५)

देवी गीत

हमरहु शरणमे लगा लिऔ हे, दुर्गा महारानी ।।
बेलपात अक्षत फुल चानन, धुप, दीप नाना विधि व्यंजन ।
खाली हाथ जोड़ि छी आयल, अपना चरणमे रमा लिऔ, हे दुर्गा महारानी ।।
हम अबोध पूजा नहि जानी, कोन विधि अर्चना करब भवानी ।
केवल पुत्र अपनटा जानी, कृपा दृष्टि वरषा दिऔ हे, दुर्गा महारानी ।।
सिंहवाहिनी असुर विनाशिनि, सुर नर मुनि सबके सुखदायिनि ।
ब्रह्मा विष्णु महेश पूजिता, अधम उधारिनि कहा लिऔ हे, दुर्गा महारानी ।।
मुकुट शीश अरु कानन कुण्डल, अरुण नयन केहरि पट अम्बर ।
कर बहु अस्त्र-शस्त्रसँ सज्जित, प्रेमक ज्योति जगा दिऔ हे, दुर्गा महारानी ।।

(विधात्रीसँ)

(३६)

देवी गीत

चलु चलु देखन आइ मंदिरमे मैया के मुरतिया हे ।
माथ मुकुट आर कानमे कुण्डल, सुन्दर सुरतिया हे ।।
सुनै छलहुँ मैया छथिन, जगत केर जननी हे ।
हमरा बेरि किए बैसल, मूनि दुनू अँखिया हे ।।

रसा रसातल जाय रहल अछि, पाप भारसँ हे मैया ।
भार हरू धरती केर हम सब, पूजब दिन रतिया हे ।।
हम अबोध अज्ञान मंद मति, पूजाकेर विधि नहि जानी ।
अक्षत पान फूल किछुओ नहि, नहि अछि बेलपतिया हे ।।
सिंहक ऊपर सजल कमल दल, ऊपर अहाँ सुशोभित छी ।
चरणोदक दए हरू मूढ़ता, शिवशंकर मन बसिया हे ।।

(विधात्रीसँ)

(३७)

देवी गीत

सुन्दर स्वरूप मैया अपरूप सिंगार हे ।
चलु-चलु-चलु बहिना मैया दरबार हे ।।
करमे त्रिशूल ढाल और धनुष-बाण हे ।
अस्त्र-शस्त्रसँ परिपूरित, सिंह पर सवार हे ।।
देवासुर संग्राम भेल हारल सब देव हे ।
महिषासुर मारि उतारल, वसुधा के भार हे ।।
रक्तरञ्जित मुँह नेत्र लाले लाल हे ।
असुर विनाशिनि मैया, भेली विकराल हे ।।
भक्तोके काटु मैया, माया भ्रम जाल हे ।
कुमतिके सुमति दऽ करिऔ नेहाल हे ।।

(विधात्रीसँ)

(३८)

झूमर

अवधसँ आइ मिथिलामे लुटाब' प्यार एला हन ।
सजल सेहरामे देखू साँवरो सरकार एला हन ।।
दुल्हा साँवर दुल्हिन गोर, एकटा चंदा एक चकोर ।
भेलै सगर जनकपुर सोर, जनक बाग आयल चितचोर ।

केलनि सबकेर चित्तक चोरी, कोनाक' गिरिजा पुजती किशोरी ।
जे केओ देखलक भेल बेहाल, सुधि-बुधि बिसरि गेल तत्काल ।
मोहै लेल आइ सबकेर मन, पाहुन बनि क' एला हन ।।
केओ कहै सखि अवधकिशोर, श्यामल राम लखन छथि गोर ।
मुनिक संग अयला एहि ठाम, धीर-वीर छथि ललित ललाम ।
मुनि कौशिक केर शिष्य कुमार, कयल अहिल्या पर उपकार ।
पाथर भेल छलीह बीच बाट, छुबितहि चरण मेटल संताप ।
देखा क' मोहिनी मूरति, जुराब' नयन एला हन ।।

(विधात्रीसँ)

(३९)

लोक भजन

बसै साँवरी सुरतिया नयनमामे ।
मोहै सबकेर मन एक क्षणमामे ।।
जनक बागमे फूल तोरै लेल आयल सुंदर जोड़ी ।
सखी संग गिरिजा पूजन लेल एली सीता गोरी ।
तन-मन अर्पित केलनि चरणमामे ।।
केहेन कठिन प्रण कयल जनकजी, धनु तोड़त जे धनुधारी ।
ओकरहि संग बिआहब धिया, नाहि तँ रहत कुमारी ।
तोरि धनुष देलनि एक क्षणमामे ।।
शंकर चापक धुन कठोर सुनि परशुराम सन वीर ।
करमे परशु वज्र सम वाणी सब केओ भेल अधीर ।
हुनकर मेटल संदेह एक क्षणमामे ।।
गौतम श्रापसँ धेलनि अहिल्या, पाथर केर शरीर ।
चरणक रज द' हुनकहुँ ऊपर कृपा केलनि रघुवीर ।
गेली हर्षित पतिके शरणमामे ।।

(४०)

झूमर

बगियामे आयल चितचोर हो, कुँवर वाँके छबीले ।।
श्यामल गोर मनोहर जोड़ी, सिय मुख चन्द्र चकोर हो ।।
लता ओट देखल एक सखिया, सिय-हिय उठल हिलोर हो ।।
देखितहि रूप बिसरली सुधि-बुधि, सिया भेली आत्मविभोर हो ।।
जे जे देखल सब भेल मोहित, सगर नगर भेल सोर हो ।।
सखिया सब मिलि करए बतकही, सियाके जुगुति इहो वर हो ।।

(४१)

झूमर

अवध नगरियासँ आयल दू पहुनमा, देखन चलु ना ।
श्यामल गोर रे बदनमा, देखन चलु ना ।।
जनक नगरियामे भीड़ भेलै भारी ।
धनुष तोड़ै लए एलै नृप सब हँकारी ।
तोड़त धनुष बनत सियके सजनमा, देखन चलु ना ।।
सब भूप थाकि गेल, धनुषो ने ऊठल ।
हिया हारि बैसि गेल मुँह सेहो लटकल ।
जनक वचन सुनि भड़कल लखनमा, देखन चलु ना ।।
मुनि कौशिक केर आयसु पबितहिँ ।
टुटि गेल धनुष रामके छुबितहिँ ।
रघुवर उर जयमाल छै सुहनमा, देखन चलु ना ।।
विश्वामित्रक यज्ञक रक्षा ।
कयलनि मारि सुबाहु ताड़का ।
पड़ितहि चरण रज अहिल्या तरणमा, देखन चलु ना ।।

फूल लेल गेला जनकक बगिया ।
रूप देखा मोहलनि सब सखिया ।।
बिसरि गेली सिया गौरी पूजनमा, देखन चलु ना ।।

(आ.भा.सँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(४२)

झूमर

सुन्दर सलौने दुल्हा सियाके सजनमा देखन चलु हे,
आजु जनक अङनमा ।।
माथे मुकुट शोभे, काने कुण्डलबा ।
करमे धनुष-बाण, अरुण नयनमा ।। देखन...
राम लखन दशरथके ललनमा ।
एक श्यामल एक, गोर बदनमा ।। देखन...
नग्र नग्रसँ भूपति आयल ।
तोड़ल ने शंकर चाप कठिनमा ।। देखन...
मन मलीन देखल विदेह के ।
तोड़ि शिव चाप छोड़ै मंद मुस्कनमा ।। देखन...

(विधात्रीसँ)

(४३)

झूमर

घुरियो एलै ने केहेन गमार बहिना ।
नीक लागै ने सोड़हो सिंगार बहिना ।।
बारी वयस पिया भेलै परदेसिया,
सुधियो ने लै छै पठाबै ने पतिया ।
काटब लगै दिन पहाड़ बहिना ।। नीक...

माघ मास कहुना कए काटल,
फागुनमे हिया रहि-रहि फाटल ।
मधु मास बीतल उघार बहिना ।। नीक...
माङक टीका निको ने लागए,
पैरक बिछुआ पल छिन काटए ।
ग्रीवहार बनलै कटार बहिना ।। नीक...
सब केर प्रीतम घुरि घर आयल,
हमरा पिया के, के विलमाओल ।
गारि सौतिनके देबै हजार बहिना ।। नीक...

(विधात्रीसँ)

(४४)

भजन

[राग-मालकोष]

सुमिरन करु करुणनिधान के । जड़-चेतन सब प्राण प्राण के ।।
जे छथि सबके जीवन दाता, भाग्य विधाता अरु भयत्राता ।
कृपाकंज सुखधाम राम के ।।
सकल चराचर केर अहाँ नायक, सुर-नर-मुनिजन केर सुखदायक ।
जानकी वल्लभ कृपाधाम के ।।
जकर पार वेदो नहि पाबए, शेष शारदा नित गुण गाबै ।
गाबथि शिव सनकादि नाम के ।।

(४५)

भजन

चलु चलु जनकपुर धाम, मंगल गाबू हे सखी ।
दुल्हा-दुल्हिन सीताराम, मंगल गाबू हे सखी ।।
अवध नगरसँ दुल्हा अयलै, मिथिलावासीक नयन जुड़यलै ।
साजल गज रथ ललित ललाम, शोभा देखू हे सखी ।।

आजु सुनयना घर बाजत बधैया, नाचि-गाबि सखी लेत बलैया ।
बाजै झांझ-मृदंग-करताल, मोद मनाबू हे सखी ।।
धन-धन राम लखनके जोड़ी, धन्य जानकी जनक किशोरी ।
'नन्द' धन्य जनकपुर धाम, प्रेम लुटाबू हे सखी ।।

(४६)

भजन

राग-बागेश्री

जनक नगर चलु देखन वर के । मधुर मिलन सीता-रघुवर के ।।
नग्र नग्रसँ भूपति आओल, तिल भरि चाप हटा नहि पाओल ।
तोड़ल एकहि क्षणमे ओकरा, आज्ञा पाबि राम गुरुवर के ।। ० ।।
सुनितहि सोर परशुधर आओल, लखन संग बहु राड़ बढ़ाओल ।
छुबितहि सारंग विस्मित भेला, पलटि गेल मति परशुधर के ।। ० ।।
बरियाती ल' अवध नृप अयला, संग भरत शत्रुघ्न अयला ।
चारू भाय बनल छथि दुल्हा, दुल्हिन चारू जनक नगर के ।। ० ।।

(४७)

लोक भजन

दया करु हे पतित पावन, हमर अपराध की कहिऔ ।
जेना नचबै छी नाचै छी, हमर की दोष से कहिऔ ।।
करै छी सब किछु अपने हमरटा नाम होइत अछि ।
देलहुँ जे ज्ञान और बुद्धि, ओकर उपयोग की कहिऔ ।।
बिना मर्जी अहाँ केर एकटा पत्ता ने हिलै अछि ।
तखन हमहीँ कोना दोषी, एकर आधार की कहिऔ ।।
बचौलहुँ ग्राहसँ गजके, हिरण्यकशिपुसँ प्रह्लादो ।
कोना सबरी अजामिलके, केलहुँ उद्धार से कहिऔ ।।

(४८)

नचारी

आजु व्याहन एला शिव गौरीसँ ।
आक-धुथूरसँ भरल खजाना, लुटा रहल छथि भोरहिसँ ।।
दाँतो टुटल, केशो पाकल, बाघक छाला सेहो फाटल ।
सौंसे देह साँप छनि सोहरल, फुफकारै अछि जोरहिसँ ।।
जेहने वर तेहने बरियाती, देखि-देखि मयना पीटथि छाती ।
एहेन वरसँ धिया ने बिआहब, आँचर भिजनि नोरहिसँ ।।
ककरहुँ मुँह नहि, केओ अछि नाङर, ककरहुँ खिन्न देह, केओ आन्हर ।
नाचथि भूत-प्रेत संग दानी, डमरू बजाबथि जोरहिसँ ।।
कोना विवाह करब हे गौरी, काँखो लटकल भांगक झोरी ।
अपने चरौथुन्ह वसहा वरद के, डोरी धरौथुन्ह तोरहि सँ ।।
भालो चाँद चमाचम चमकै, जटासँ पावन गंगा छिलकै ।
गट-गट पीथुन्ह, भाङ राति-दिन, सेहो पिसौथुन्ह तोरहिसँ ।।
नारद कहल सुनु हे मयना, गौरीके वर लिखलनि विधना ।
पूर्व जन्म शिव-सती बिआहल, 'नन्द' कहल सब ओरहिसँ ।।

(४९)

नचारी

शुभ शुभ मयना करु ने परिछन, अद्‌भुत गौरीक वर हे ।
ओढ़ने बाघक छाल देह पर, कहबथि दिगम्बर हे ।।
तीनू लोकमे भीख मङै छथि, कहथिन विश्वम्भर हे ।
जटा-जूटसँ बहथिन गंगा, तेँ छथि गंगाधर हे ।।
श्मशानमे धुनी रमाबथि, रहबा केर नहि घर हे ।
जेहने गौरी राजदुलारी, तेहने वर फक्कर हे ।।

धुथुर-आकसँ भूख मेटाबथि, भूतो प्रेत सगर हे ।
मणिमय हार मुण्ड केर माला, गरदनिमे विषधर हे ।।
मयना कहल सुनु हे नारद, लयलहुँ केहेन वर हे ।
कहलनि नारद युग-युगसँ छनि, इएह गौरीकेर वर हे ।।

(५०)

नचारी

परिछै लय गौरी वर चलु हे बहिना ।
चलु हे बहिना, मयनाक अङना ।।
भालो चंदा, जटामे गंगा, धयने रूप कोनो भिखमंगा ।
सोहरल सौसे देह, साँपक गहना ।। ० ।।
केओ कहै डमरूधारी, केओ शूलपाणी ।
केओ कहै नागधारी, केओ मसानी ।।
केओ कहै भूतनाथ, केओ भङ घोटना ।। ० ।।
वर नङटे कयने वरद सवारी,
डम-डम बजाबै डमरू जेना मदारी ।
गौरीकेँ एहेन वर कोना देलनि विधिना ।। ० ।।
गौरी हमर छथि परम दुलारी ।
कोना आनल वर भङिया भिखारी ।
सब किछु केलनि नारद बभना ।। ० ।।
पैरोमे फाटल सगरो बेमाय ।
नाहि करब 'नन्द' एहेन जमाय ।
जनम-जनमसँ इहो, गौरीक सजना ।। ० ।।

(५१)

नचारी

उमा घर ई की भेलैए,
वर बकलेल बूढ़ बसहा चढ़ि, नङ्गटे एलैए ।। उमा०....
दाँत छनि सबटा टूटल, केश छनि पाकल-पाकल ।
पहिरने बाघक छाला, सेहो छनि सौंसे फाटल ।
काँख तरमे धुथुर भाङ केर झोड़ी झुलैए ।। उमा०....
भाल पर चंदा चमकनि, जटासँ गंगा छिलकनि ।
गलामे मुण्डक माला, हलाहल कंठो अँटकनि ।
सगर देह सोहरल छनि साँपो, सहसह करैए ।। उमा०....
रमौने धुनी सदिखन, देहमे भस्मो लेपने ।
भूत-बैतालो संगे, नचै छथि जखने-तखने ।
भाङ पीबि भकुआयल दिगम्बर, किछुओ ने बुझैए ।। उमा०....
बनल छथि मस्त मदारी, करथि नहि खेती-बारी ।
मङै छथि भीखो घुमि-घुमि, कहाबथि दाता भारी ।
साँझ-भोर किछुओ नहि देखए, डमरू पीटैए ।। उमा०....

(५२)

नचारी

भोला एहन जुलुम अहाँ कोना केलियै ।
छोड़ि गौरी दाइके वसहा बड़द धेलियै ।।
दौड़ि-दौड़ि सबकेँ पुछथिन गौरी ।
कतए गेला भोला कोना औता घुरि ।
भङिया भिखरिया कोना बनि गेलियै ।।
घरहिमे छोड़ि गेला मुण्डक माला ।
डमरू त्रिशूल और बाघक छाला ।
धूनी रमा क' कोना रमि गेलियै ।।

भाङक खातिर रुसला भोला ।
जाऽक नाचथि भूतक टोला ।
भूतक संग कोना झुमि गेलियै ।।
भाल पर चंदा चमचम चमकै ।
जटासँ गंगा छल-छल छलकै ।
तीनू नयन कोना मुनि लेलियै ।।

(विधात्रीसँ)

(५३)

नचारी

साजि कए काँवर कमरिया हौ; जेबइ बाबा नगरिया ।।
अक्षत चानन आओर गंगाजल, आरो लेबइ बेलपतिया हौ ।।
कार्तिक पूजब, गणपति पूजब, गौरी सहित भोले दानी हौ ।।
आक चढ़ाएब, धुथूरो चढ़ाएब, आरो चढ़ेबै भाङ गोलिया हौ ।।
बसहा चढ़ल अओता दानी दिगम्बर, हरबै हमर दुःख कहिया हौ ।।

(आ० भा० सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(५४)

नचारी

वास सदा कैलाशक ऊपर गौरी शोभथि वाम ।
हिनक अर्चना पूजासँ होएत सब केर कल्याण ।।
यौ भइया चलियौ, अहाँ चलियौ, अहाँ चलियौ बाबाधाम ।।
ललित ललाट भस्मसँ भूषित, उर बिच मुण्डक माल
जटासँ पावन गंग बहइ छनि, चंदा चमकनि भाल ।
कर त्रिशूल अरु डमरू डम-डम, नाचै छथि शमशान ।। यौ...।।

भुवन बिना छथि तीनू भुवना, भाङ खाय बौरायल ।
जग केर हित विषपान करैमे, कनिओ नहि घबरायल ।
तीन नयन तीनू छथि मुनने, सदा लगौने ध्यान ।। यौ... ।
भक्तक लेल सदा शिवदानी, दानी बनल रहै छथि ।
स्वयं भिखारी तैयो अनधन, भक्तक घर भरै छथि ।
भक्तक खातिर भीख मङै छथि, सब मिलि करू प्रणाम ।। यौ...।

(विधात्रीसँ)

(५५)

नचारी

सखि हे रूसल छथि बमभोला, हुनका कोना मनेबनि ना ।।
अक्षत चानन आरो बेलपात लए हम, भोलाके चढ़ैबनि ना ।।
हाथ त्रिशुल डमरू, भाल पे चंदा, जटामे गंगा शोभनि ना ।।
बसहा बड़द चढ़ि भस्म रमौने, गर बिच नागक माला ना ।।
बाघ छाल आसन-बासन, बलेल बताह सन देखैमे लागथि ना ।।
कहथिन गौरी दाइसँ भाङ पिसि राखू, घर अपनहि औंता ना ।।

(विधात्रीसँ)

(५६)

नचारी

अलेल बलेल दुल्हा शिवशंकर दयाल हे ।
गौरीके बुढ़ वर निछछ कंगाल हे ।।
पैरोमे फाटल जर्जर बेमाइ, केशो छनि पाकल,
चोटकल छनि गाल हे ।। अलेल...
अंगमे सगरो भस्म रमौने,
गर बीच लटकल मुण्डक माल हे ।। अलेल...
तन बिनु वस्त्रक, नाम दिगम्बर,
सदिखन पहिरथि बाघक छाल हे ।। अलेल...

कर त्रिशूल अरु डमरू विराजनि,
गंग जटा बिच, चंदा छनि भाल हे ।। अलेल...
जटा जूट तेलक नहि दरशन,
अद्‌भुत रूप देखि मयना बेहाल हे ।। अलेल...

(अ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(५७)

नचारी

मरि रहलौ यौ बाबा शरणमे लगाउ ।
जेना अपनहि नचै छी, तेना नहि नचाउ ।।
केओ राखत नहि हमरा, अहाँ छोड़िकऽ ।
अहाँ नाङ्गट छी, हमरो जुनि नङ्गटा बनाउ ।
ध्यान तोरू यौ बाबा, उघारू नयन ।
अहाँ हेहर छी हमरहु जुनि हेहरा बनाउ ।।
अहाँ जिनगी गमौलहु माँगि-चाँगि कऽ ।
अहाँ भङ्गिया भिखरिया जुनि हमरहु बनाउ ।।
जग बचेबाक लेल विषपानो केलहुँ ।
चढ़ि बसहा बड़द लाज हमरहु बचाउ ।।

(विधात्रीसँ)

(५८)

नचारी

कान्ह गंगाजल भारी यौ बाबा हमरा, चललो ने होइए ।।
चललो ने होइए हमरा, चललो ने होइए ।
पयरो मे कंकड़ गरइए ।। यौ बाबा...
खाली पयर धएल नहि जाइछ । रौदक धाह सहल नहि जाइछ,
धह-धह देह जरइए ।। यौ बाबा...

आगाँ सुइया विकट पहाड़ी, ऊँच नीच डगर काँट-कुश झारी ।
देखतहि डर लगइए ।। यौ बाबा..
आबिक' फसलहुँ भूल भुलइया, चाननक लहरि किलोल करइए ।
टप-टप घाम चुबइए ।। यौ बाबा...
कोना क' जाएब अहाँक दुअरिया, एक बेरि फेरिऔ अपन नजरिया ।
केओ ने सहारा दइए ।। यौ बाबा...
अहाँ भोला औढरदानी, हम दुःख केर सागरमे कानी ।
कनिओ लाज ने होइए ।। यौ बाबा...

(विधात्रीसँ)

(५९)

नचारी

आशुतोष अहाँ औढरदानी, कतए जाय बौरायल छी ।
करुणा करु करुणामय शंकर, शरण जानि हम आयल छी ।।
मद ममता भ्रम जालमे फसलहुँ, नाम अहाँक नहि जपलहुँ यौ ।
अपराधी छी शरणमे राखू, बहुत दिन भटकौलहुँ यौ ।
विपतिक चोट सहल नहि जाइछ, चोट खाय घबरायल छी ।। करुणा...
भालपे चंदा जटामे गंगा, गंगाधर कहबइ छी यौ ।
श्मशानमे धूनी रमाकए, भूत प्रेत नचबइ छी यौ ।
त्रिभुवन पालक भूतनाथ किअए, भाङ खाय भकुआयल छी ।। करुणा...
सबकेर दुःख अहाँ सुनइ छी बाबा, हमरहु दुःख अहाँ सुनिऔ यौ ।
अहाँ छोड़ि के राखत हमरा एकरहु मनमे सोचिऔ यौ ।
आश लगाय द्वारि पर अएलहुँ, दरश लेल अकुलायल छी ।। करुणा...
आरति हरण कहै अछि सब केओ, हमर आर्ति नहि सूनइ छी ।
आशुतोष विख्यात जगतमे, देखि आँखि किए मूनइ छी ।
कोन कसूर भेल हमरासँ, एतेक किएक तमसायल छी ।। करुणा...

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(६०)

नचारी

देखु हे गौरी आइ भोला के सुरतिया ।।
भाल पे चानो चम चम चमकै, जटासँ खल-खल गंगा छलकै ।
चढ़ि आयल बुढ़ बसहा वरदिया ।। देखु...
नाङ्गट तन पर बाघक छाला, भस्म विभूषित मुण्डक माला ।
नाचै भूत बैतालो डगरिया ।। देखु...
कर त्रिशुल डमरू लटकौने, नाग राज उर फन फलकौने ।
काँख दबौने देखियौ, भाङक पोटरिया ।। देखू...
कयल ने कहियो खेती बाड़ी, भांग धुथूरसँ भरल बखारी ।
हमहुँ करब जाय, हुनके चकरिया ।। देखु...

(विधात्रीसँ)

(६१)

नचारी

हे गौरी भंगिया रूसल तोर ।
ततेक दूर जा' क' बैसल छथि,
कोना क' करबनि सोर ।। हे गौरी
नित अन्हरौखे बसहा बड़द लए जाइत छला श्मशान ।
भाङ खाय भकुआय दिगम्बर सदा लगाबथि ध्यान ।
पियासल बसहा डोरी तोड़ै छन्हि, आब के पकड़त डोर ।। हे...
भाल पे चाँद जटा, बीच सुरसरि, अंगमे भस्म रमौने ।
तन बघछाल, गलामे बिषधर, माला छथि लटकौने ।
रूप देखि तन थर-थर काँपय, कोना कऽ लगबनि गोड़ ।। हे...
कानि-कानि गौरी सबकेँ पुछथिन्ह भोला केर उदेश ।
भाङक खातिर भोला भागल, जाय बसल दुर देश ।
कार्तिक के गौरी हाथ पकड़लनि, गणपति लेलनि कोड़ ।। हे...

गौरी अबुध अथाह पड़ल छथि सुझनि किछु ने उपाय ।
आशुतोष औढरदानी क' कोना कऽ लाएब मनाइ ।
भाव विभोर हृदय अति विह्वल, नयनसँ झहरनि नोर ।। हे...

(आ.भा. सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(६२)

नचारी

मगन मन नाचै मोर भोले दानी ।
अपनहु नाचै, जग के नचाबै, नचाबै सब प्राणी ।। मोर...
ब्रह्मा नाचै, विष्णु नाचै, नचाबै नन्दरानी ।। मोर...
कार्तिक नाचै, गणपति नाचै, नचाबै गौरी रानी ।। मोर...
भूत प्रेत बैतालो नाचै, नचाबै छै मसानी ।। मोर...
फन फलकौने विषधर नाचै, नचाबै औढरदानी ।। मोर...
उमा रमा ब्रह्माणी नाचै, नचाबै त्रिभुवन दानी ।। मोर...

(विधात्रीसँ)

(६३)

नचारी

गौरी के बुढ़वर हे, कोना परिछब सखिया ।
देखितहि लागए डर हे, कोना परिछब सखिया ।।
तीन नयन मुख पाँच एकोमे दाँतक नहि ठाहर हे ।।
हाथी घोड़ा किछु नहि साजल अयलनि बसहा पर हे ।।
आजन-बाजन किछु नहि आनल, नाचै भूत सगर हे ।।
गहना-गुड़िया किछु नहि लेलनि, सोहरल छनि विषधर हे ।।
मयना पूछथि नारदजीसँ, लयलहुँ केहेन वर हे ।।
जकरे लए गौरी तप कयलन्हि, ई छथि विश्वम्भर हे ।।

(विधात्रीसँ)

(६४)

नचारी

दाइ गे दाइ जुलुम बड़ भेलै, जे अयलै सब देखि पड़ेलै ।
आबि के परिछत एहि दुलहा के नङ्गटे बड़द सवार ।।
दाँतो टुटल केशो पाकल बाघक छाला सेहो फाटल ।
सह-सह करए साँप सौंसे तन, छोड़ै अछि फुफकार ।।
सगर देह छथि भस्म रमौने, भाङक पोटरी काँख दबौने ।
भाल पे चान जटा बिच पावन, बहइछ सुरसरि धार ।।
दानी बीच शिरोमणि दानी, भूत प्रेत संग बनल मसानी ।
तीनू नयन मुनल छै तैयो सब केर सुनै पुकार ।।
जेहने वर तेहने बरियाती, भूत प्रेत देखि फाटए छाती ।
शुभ-शुभ करू विआह धियाके, उमा के ई करतार ।।

(विधात्रीसँ)

(६५)

नचारी

सबहक लेल अहाँ दानी भोला, अपना लेल भिखारी छी ।।
अंगमे भस्म विभूत रमौने, वेश बनौने मदारी छी ।
करमे डमरू डम-डम बाजै, बसहा बड़द सवारी छी ।।
उर बिच नागक हार जटासँ खल-खल गंग बहाबै छी ।
भाल पे चंदा चम-चम चमकै, नाम अहाँक पुरारी छी ।।
भोजन आक धुथूर भाङ और भूत प्रेत संग नाचै छी ।
बास सतत कैलासक ऊपर, धुनी रमौने भारी छी ।।

(६६)

परिवार नियोजन

कराबू भैया, परिवार नियोजन ।
कम बच्चा-बुच्ची के सुखसँ रखबै ।
पढ़ा-लिखाक' अफसर बनेबै ।
अपनहु काटब सुखसँ जीवन केर दिन यौ ।। कराबू...
बेसी जँ बच्चा हेतै, राशनो नै भेटतै ।
दिन-राति, खयबा-पीबा लेल मारि करतै ।
दिनोमे चैन नहि, नीनो ने राति यौ ।। कराबू...
पढ़त ने लिखत, भ' जायत बेकार यौ ।
टोल-पड़ोसमे करतै तकरार यौ ।
माँथो धुनैत रहब, पीटब कपार यौ ।। कराबू...

(६७)

परिवार नियोजन

गाँव-गाँव आ शहर-शहरमे अलख जगाबू यौ ।
परिवार नियोजन करा कए भैया देश बचाबू यौ ।।
देशक जँ आबादी बढ़तै, राशन-पानि कतएसँ एतै ।
कोना बनब स्वावलम्बी सब दिन, दोसरे परमे आशा रहतै
आदर्श बाप बनू दू बच्चा के बाप कहाबू यौ ।। परिवार....
बेसी बच्चा जैखन हेतै, शिक्षा-दीक्षा किछु ने पेतै ।
पायत नहि रोजगार सब दिन, बेकारीसँ लड़िते रहतै ।
संतानक भविष्य केर लेल, नसबन्दी कराबू यौ ।। परिवार....
जँ बचैक हो मँहगाईसँ, जँ लड़ैक हो बेकारीसँ ।
जँ करैक हो देशक सेवा, जँ रहैक हो सुख शांतिसँ ।
बंध्याकरण मंत्र के घर-घर जाप कराबू यौ ।। परिवार...

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(६८)

साक्षरता

पढ़ू औ बौआ, पढ़ू-पढ़ू, क ख ग घ पढ़ू-पढ़ू ।
अपने पढ़ू आ सबकेँ पढ़ाउ, साक्षरता रथ पर चढ़ू-चढ़ू ।।
पढ़ि-लिखि क' पायब सम्मान, बिनु पढ़ने सगरो अपमान ।
नव समाजक निर्माणक लेल, बढ़ू औ बौआ बढ़ू-बढ़ू ।।
पढ़लासँ पायब रोजगार, बिनु पढ़ने रहि जायब बेकार ।
बेकारीसँ लड़बाक लेल अहाँ, कर्मक पथ पर बढ़ू-बढ़ू ।।
पढ़ि-लिखि घूमब देश-विदेश, बिनु पढ़ने पग-पग पर ठेस ।
साक्षर सभ्य समाजक लेल अहाँ, समरसता केर मंत्र जपू ।

(६९)

ब्रह्म बाबाक आरती

मुदित मन आरती, करु सब मिलि क' ।
ब्रह्म देवता, ग्राम देवता, डीहबार बाबा, सेहो छथि घोड़ा चढ़ि क' ।। ० ।।
कोनहुँ मंगल काजमे सबसँ पहिने, इएह अराधल जाइत छथि ।
ढोलो-पिपही बजा-बजा क' ब्राह्मण बाबूक गीत गबै छथि ।
दौड़थि हवा गतिसँ जन टेर सुनि क' ।। ० ।।
पूर्ण मनोरथ एकहि क्षणमे, जिनकर सुमिरन मात्रसँ होइत अछि ।
लड्डू पेड़ा किछु नहि चाही, घोर-कलशसँ पूजा लैत छथि ।
कृपा लुटाबथि अञ्जलि भरि क' ।।
कनेक जलसँ तृप्ति पबै छथि, सेवक घर धन-जनसँ भरै छथि ।
केहनो विपत्ति पड़ल अहाँ रहबै, एक बेर जँ सुमिरन करबै ।
दुःख दूर करताह बिनु पलक झपकि क' ।। ० ।।
हुनकहि कृपासँ आबि गेल छथि, एहिठाँ दुर्गा काली शारदा ।
बिषहारा बजरंगबली संग, नाथ नरेश्वर हरथि सब विपदा ।
करु आरती 'नन्द' कर दुनू जोड़ि क' ।। ० ।।

(७०)

पतितपावनी गंगा

साठि हजार सगर केर पुत्रक, टूटल जीवन तार ।
पतितपावनी गंगा करबै, अहीँ सभक उद्धार ।।
राजा सगरक घोड़ा यज्ञक, पहुँचि गेल आश्रम मुनि कपिलक ।
कपट छल कपटी देवेन्द्रक, सगरक सुत उत्पात मचौलक ।
भंग भेल तप कपिल मुनिकेँ, बरसि गेल अंगार ।। पतित०...
कुल केर दीप भागिरथ बनला, भारी तप क' गंगा अनला ।
पूर्वजकेँ उद्धार करौलनि, तीनू लोकमे अति यश पओलनि ।
उतरि स्वर्गसँ शिवक जटामे बिलमि गेलहुँ तत्काल ।। पतित०...
जल अहाँ केर सबसँ निर्मल, बढ़ि रहलै अछि ओकर प्रदूषण ।
सब धन जे पओलक से खयलक, कोना क' होयत मुक्त प्रदूषण ।
राष्ट्रीय नदी रूपमे घोषित, केलक केन्द्र सरकार ।। ० ।। पतित०...

(७१)

झूला

झूलथि झूला कन्हैया, झुलाबथि यशोदा मैया ।।
यमुना तट पर कदम्बक गछिया, ग्वाल सखा संग नाचत सखिया ।
सखि सब लेत बलैया ।। झुलाबथि०.... ।।
दधि लुटै मटकी पुनि फोड़ै, गोपिन सब केर बाँहि ममोड़ै ।
नाचय ता ता थइया ।। झूलाबथि०.... ।।
राधा झूले कृष्ण झुलाबै, ब्रजवासी के चित भरमाबै ।
झूलत सकल सुरैया ।। झूलाबथि०.... ।।

(७२)

बरजू अपन लला

यशोदा मैया ! विनती करै छी, बरजू अपन लला ।।
दधि लुटै मटकी पुनि फोड़ै, कर गहि सबकेँ बाँहि ममोड़ै ।
ककरहु करए ने भला ।। .... ।।
रहि रहि वंशीक तान सुनाबै, गोपिनकेँ सुधि-बुधि बिसराबै ।
नटखट नन्द लला ।। .... ।।
यमुना तट करय चीरक चोरी, सखियन संग करए बरजोरी ।
पूरन सोरहो कला ।। .... ।।

(७३)

हनुमान वंदना

मनमे बसा लिऔ लखन जानकी राम के ।
जय कहिऔ हनुमान के, जय जय कहिऔ हनुमान के ।।
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई, ग्याननिधान सकल गुण छाई ।
रामचन्द्र के परम दुलारे, सीता माँ केर नयनक तारे ।
सुमिरन करू साँझ आ भोरे, जय जय सीताराम के ।। जय कहिऔ.... ।।
शंकर सुवन केशरी नंदन, दुष्ट दलन संतन हित चंदन
लंक जरा सीता सुधि पाओल, ज्योति विभीषण हियमे जगाओल ।
अपनाके अधमाधम मानल, मान बढ़ौलनि राम के ।। जय कहिऔ.... ।।
सीतारामक आशीर्वादसँ, सकल भुवन अपना वश कयलनि ।
केहनो वीर-धीर-कपटीके, मारि मुष्टिका यमपुर देलनि ।
'नन्द' करै अछि चरण वंदना, जय जय कृपा निधान के ।। जय कहिऔ...।।

(७४)

हनुमान वंदना

आजु सुदिन-दिन पावन महान । रामक अंगना नाचथि हनुमान ।। ० ।।
सिंहासन पर छथि राजाराम । संगमे जानकी शोभथि वाम ।
चरण बिराजथि वीर हनुमान ।। ० ।।
लंका जारि सिया सुधि लाओल । आनि संजीवन लखन जिआओल ।
हृदयमे धयलनि सीता-राम ।। ० ।।
मणि-माणिक चाही नहि किछुओ । सियाराम के चरणमे नित ओ ।
जपथि सतत श्रीरामक नाम ।। ० ।।
धन्य आजु 'नन्द' अवध नगरिया । मातु बिछौने पलक डगरिया ।
धन्य पवन-सुत राम-गुलाम ।। ० ।।

(विधात्रीसँ)

(७५)

हनुमान वंदना

कोना हम करब अहाँ केर ध्यान ।
हम अबोध अज्ञानी अपने, ज्ञानी चतुर सुजान ।।
लाल बदन पर लाल लङोटा, लाली ललित ललाम ।
हृदय बिराजथि राम जानकी, पवन पुत्र हनुमान ।। कोना...
अंजनि सुत संतन सुखदाई, निधि भेटल हरिनाम ।
राम दूत अतुलित बलधारी, सुमिरै सकल जहान ।। कोना...
पूजा केर हम विधि नहि जानी, नहि जानी तप-ध्यान ।
केवल जानल नाम अहाँ केर पूजब साँझ-बिहान ।। कोना...

(विधात्रीसँ)

(७६)

कजरी

रिमझिम बरसे कारी बदरिया, पिया बिनु सून सेजरिया ना ।।
दादुर मोर पपीहा बोले रामा बिजुरी चमकइ ना ।
पिया बिनु निंद न आबए रतिया धड़-धड़ धड़कइ छतिया ना ।। रिम...
उमड़-घुमड़ घन पवन झकोरा रामा, सिहकन लागइ ना ।
पिया मोरा जाय बसल दुर देश, खेलब कोना कजरिया ना ।। रिम...
सब सखिया के पिया घर आयल रामा सालै छतिया ना ।
बैरिन जाउ पिया ढिंग जल्दी, आब मोर मीत बदरिया ना ।। रिम...

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(७७)

कजरी

बहिना कोना क' कटबइ सावन के अन्हरिया,
बदरिया बैरी घिर-घिर आयल ना ।।
एक तँ वारि वयेस, दोसर पिया बसै परदेश ।
रहि-रहि मोन पड़ै अछि पिया के सुरतिया ।। बदरिया....
बरषा बरसै बेसुमार ठनका ठनकै बेसम्हार ।
रहि-रहि चमकै छै, चम-चम बिजुरिया ।। बदरिया...
पिया बसै दूर देश, पठबै कोनो ने संदेश ।
काटए पिया बिनु सुनी रे सेजरिया ।। बदरिया...

(विधात्रीसँ)

(७८)

कजरी

हरि हरि घिर घिर आएल मेघ, सजन नहि आयल हे हरि ।।
पावस मास कसक जियरामे रामा,
हरि हरि सून भवनमा लागै, चैन नहि पाओल हे हरि ।।
रैन अन्हरिया, दादुर बोलै रामा
हरि हरि रिमझिम बरसै बून, पपिहरा गाबै हे हरि ।।
हरियर खेत सुहावन लागै रामा,
हरि हरि अबहुँ कन्त नहि आए, मदन अलसायल हे हरि ।।

(विधात्रीसँ)

(७९)

कजरी

बदरा उमड़ि घुमड़ि नभ गरजए, बुन्दिया बरिसन लागै ना ।।
दादुर मोर पपीहा गाबए, जिया उमताबए ना ।
पिया बिनु निंद न आबै रतिया धड़-धड़ धड़कै छतिया ना ।।
विरहक आगि कुहुकि कहुकाबए, बैरी कोइलिया ना ।
पिया के लिखि पठाओल पाँती, रोकय बैरी सौतिनियाँ ना ।।
कन्त हमर हिय हन्त भेल छथि दरदो ने बुझइ ना ।
पिया मोर जाय बसै दुर देश कि, खेलब कोना कजरिया ना ।।

(आ.भा.सँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(८०)

कजरी

सखि हे गरजि-गरजि घन बरसै, रहि-रहि बिजुरी चमकै ना ।
पिया बिनु निको ने लागइ भवनमा, दिनमा कोना क' कटबै ना ।।

एकसरि छोड़ि पिया परदेश गेल, पतियो ने पठबै ना ।
पिया बिनु सूनी मोर सेजरिया, अँखिया निंद न आबै ना ।।
वन मे पपीहा-दादुर गाबै, नाचै मोरबा ना ।
पिया बिनु जाय कहब हम ककरा, अपना मन के बतिया ना ।।
सबके पिया परदेश छोड़ि क' घुरि घर आयल ना ।
सखि हे पिया मोर कहिया आओत जरलो मन के जुराओत ना ।।

(आ.भा.सँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(८१)

चैती

फुलि गेल बेलिया चमेलिया हो रामा, चैत महीना ।।
सब केर प्रीतम घुरि घर आयल,
आयल ने हमरो सजनमा हो रामा, चैत महीना ।।
पिया बिनु रैना कटलो ने जाइछ,
रातिमे देखल सपनमा हो रामा, चैत महीना ।।
पपीहाक पिउ-पिउ हिया मोर सालै,
सौतिनिक जियरा जुड़ायल हो रामा, चैत महीना ।।
बहुत दिवससँ आश लगौलहुँ,
आशो ने पुरल हमार हो रामा, चैत महीना ।।

(विधात्रीसँ)

(८२)

कर्मभूमि

हे वीर, दानवीर, महावीर, कर्मवीर, अहींकँ सुयशसँ ई, माटि चमकैत अछि ।
धन्य ई माटि आ धन्य ई देश जत', अहीँ केर कीर्तिक ध्वज फहरैत अछि ।।
अहींकँ दुआरि आबि याचक बनि क', देवराज लेलनि छलसँ दान ।
प्राणहुसँ पैघ कवच-कुण्डलकेँ, तुच्छ बुझि क' देलहुँ दान ।।

दान देबासँ विमुख नहि कौखन, पिता वचन पर ध्यान ने देल ।
याचक बनल स्वयं निज जननी, पाँचो पुत्र दानमे देल ।।
जखन कि ओहिसँ जुड़ल छल जीवन, तकरहु नहि कोनो चिन्ता भेल ।
जएह छल बैरी, ओकरहि जीवन, ओकरहि मायकेँ, दानमे देल ।।
पड़ल छलहुँ रणभूमिमे जैखन, आलिंगन मृत्युक करइत ।
याचक बनिक' स्वयं निरंजन, तीनू लोकक भ्रमण करइत ।।
किछु नहि छल संग दाँतक सोना, तोड़ि अहाँ याचककेँ देल ।
दानवीरसँ विश्वविख्यात भेलहुँ, सगरो अहींक सुयश भरि गेल ।।
अहाँ बिनु अहाँक भूमि अछि व्याकुल, आकुल मन 'नन्द' तड़पि रहल छी ।
पुनः आबि करु शान्त पिपासा, दानवीरसँ माँगि रहल छी ।।

(विधात्रीसँ)

(८३)

साक्षरता गीत

हम जयबै परदेश रे बौआ, तोँ जइहेँ स्कूल ।
सब चटिया संग हिलि-मिलि रहिहेँ, जेना कमल केर फूल ।।
मास्टरजी के आदर करिहेँ, नित दिन मन लगाक' पढ़िहेँ ।
वैर-द्वेष ककरोसँ ने करिहेँ, जीवनक पथ पर आगू बढ़िहेँ ।
करिहेँ सबसँ सिनेह रे बौआ, रखिहेँ मन समतूल ।। ० ।।
मायक कहल ने टारल करिहेँ, जे जे कहतौ सबटा सुनिहेँ ।
पढ़ि-लिखि कुल केर नाम बढ़ेबेँ, सभकेर सोझाँ छाती फुलेबेँ ।
लयबौ नव सनेस रे बौआ, सभक लेल अनुकूल ।। ० ।।
पढ़ि-लिखि जँ इन्जिनियर बनबेँ, नव-नव तकनिक विकसित करबेँ ।
वायुयान चढ़ि उपरे ऊपर, देश विदेशक यात्रा करबेँ ।
गर्वसँ भारत ऊपर उठतै, नभसँ झहरत फूल ।। ० ।।

(८४)

कन्यादान

तिलकक व्यर्थ विरोध करै छी, अपनहि आगिमे अपने जरै छी,
बन्द होयत नहि ई परिपाटी, टुटि जायत सबटा अरमान ।
व्यर्थक कानब-खीजब छोड़ू, करैत रहू मनु कान्यादान ।। ० ।।
सब दिन मूड़ी नीचाँ, रहलै, जे केओ दान लेलक अछि हाथ ।
मुदा आइ मूड़ी अछि नीचाँ जे कयलक अछि दानक काज ।
की उमेद ओकरासँ करबै, जकरा नहि विवेक केर भान ।। ० ।।
सबसँ पुण्य काज अछि दानक, एकरा जुनि बुझू अहाँ बोझ ।
दान ने कन्यादानसँ उत्तम, किएक करै छी मनमे क्षोभ ।
राजा सगर जनै छथि सबटा, काज होइछ ई कतेक महान ।। ० ।।
वर तकबामे करू ने देरी, करू ने मनमे कनिओ रोष ।
जे रचने छै, ओएह बनौते, जोड़ी सुन्नर परम अनूप ।
विधिक-विधान मेटि नहि पायब, आशुतोष करताह कल्याण ।। ० ।।
जकर जतेकटा नारा होइत अछि, ओतबहि पैघ होइत अछि पेट ।
बाजत मिठ-मिठ वाणी, आ काटत ठाढ़े-ठाढ़े घेँट ।
ई विरोध अछि मात्र देखाबा, एकरासँ नहि होयत निदान ।। ० ।।
जतबहि एकर विरोध होइत अछि, ओतबहि ई लागए आकाश ।
कान्या पढ़लि-लिखलि वा वृत्तिक, मुदा ओकर नहि कोनो सुवास ।
नारीसँ नारीक उत्पीड़न, रोकि ने सकत कोनो भगवान ।। ० ।।
यावत् बेटी करत ने निश्चय, व्याहक प्रबल विरोध ।
वरक बाप तिलक जँ माँगत, ओकर करत प्रतिरोध ।
तैखन बदलत ई परिपाटी, बदलि जायत सबटा सुर-तान ।। ० ।।
जे माँगत मूड़ी नीचाँ क', ससुरसँ कान्याकेर हाथ ।
ओकरहिसँ व्याहू बेटीकेँ, छोड़ि-छाड़ि क' सब संताप ।
'नन्द' स्वयंवर राम जानकीक, तहिना रचिऔ पुनः विधान ।। ० ।।

(८५)

दहेज

सब केओ एतबए काज करै छी ।।
आनक दोष देखि हँसि दै छी, अपन ने दोष देखै छी ।। सब केओ...
सबहक घर अछि बेटा-बेटी, तकर ने बोध करै छी,
बेटामे टाका गनबै छी बेटी बेरि कनै छी ।
बिना दहेजक कनियाँके अहाँ, आगि लगा जरबै छी ।
जँ बीतै अछि अपना पर तँ देखितहि कुहरि उठै छी ।। सब केओ...
पुत्रवधू के बेटी बुझि कए, स्नेहसँ जँ सीचै छी ।
तैखन होएत कल्याण मैथिलक, मंगल हम मनबै छी ।। सब केओ...

(आ.भा.सँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(८६)

दहेज

सबटा काज करब तँ करियौ, एक काज जुनि करियौ यौ ।
हाट चढ़ा अपना नेनाकेँ, बड़द जकाँ जुनि बेचियौ यौ ।।
बेटीक जन्म लेलासँ बापकेँ, चैन ने कहियो होइ छै यौ ।
सतत ओकर व्याहक चिन्तासँ निन्द ने कहियो होइछै यौ ।
बेटी घरक लक्ष्मी होइत अछि, ओकर मान अहाँ करियौ यौ ।। हाट...
बेटा कुल केर दीप होइत अछि, ओकरा जुनि अहाँ बेचू यौ ।
खानदान केर चिर प्रकाश पर, कारिख लए जुनि पोतू यौ ।
जकरा लए अहाँ सब किछु कयलहुँ, ओकरे लेल किछु करियौ यौ ।। हाट...
बिसरि गेलहुँ कुल केर मर्यादा, बिसरि गेलहुँ गौरव सम्मान ।
टाका खातिर अपन खूनकेँ, अपनहिसँ ने करु अपमान ।
तिलक माङि बेटा केर कखनहु, जीवन नरक ने करियौ यौ ।। हाट...

कतए गेल आदर्श अयाचिक, कतए गेल मंडन केर मान ।
जीवन रथ केर दू पहियामे, बेटा-पुतोहु एक समान ।
मायक दूध अमूल्य होइत अछि, ओकर मोल जुनि करियौ यौ ।। हाट...

(विधात्रीसँ)

(८७)

संकल्प

सतत सेवा मैथिलीक हो, इएह हमर संकल्प अछि ।
संस्कृति भाषाक दोसर, कोनो ने विकल्प अछि ।।
आउ हे मैथिल सपूत, सब केओ मंथन करू ।
भाषा हमर समृद्ध सबसँ, हो एकर चिंतन करू ।।
माय, मातृभूमि, मातृभाषा सबसँ पैघ अछि ।
एहिसँ किछु नहि ऊपर, सर्वथा ई सत्य अछि ।।
स्वर्गसँ सुन्नर कहल अछि, माय, मातृभूमिकेँ ।
एकर जे आदर ने करइछ, पातकी ओ भूमिकेँ ।।
जाहि माँ केर कोखिमे, नौ मास धरि पोसल गेलहुँ ।
ओकर जँ सम्मान नहि तँ, दोसर ककरा की केलहुँ ।।
मातृभाषा सीखि अयलहुँ, अहाँ मायक पेटसँ ।
बिसरि गेलहुँ किएक अंबितहि, धरा-धामक भेँटसँ ।।
जएह करबै, सैह सीखत, अहूँक नेना आइसँ ।
'नन्द' करिऔ स्नेह मातृभाषा, मैथिली दाइसँ ।।

(८८)

भार्या महिमा

नहि रहने सब सून लगै अछि, रहने कलहक वास ।
नहि रहने पूछत केओ नहि, बिनु घरनी घर नाश ।।
भाड़ा पर मकान नहि भेटत, पत्नी संग ने हेती ।
कनिञो कतहु ने आदर भेटत, देखितहि सब डेरेती ।।

माय मरत सब ढाढ़स देती, जुनि कानू हम माइये छी ।
पत्नी मरत केओ नहि बाजत, जुनि कानू हम भार्या छी ।।
पत्नी जँ आगाँ रहती तँ, रेलमे झट द' आसन पायब ।
हुनका बिनु यात्रा कयने अहाँ, धक्का-मुक्की खाइते जायब ।।
पत्नी स्रोत प्रेरणा केर छथि, बिनु पत्नी प्रेरित नहि होयब ।
पत्नी केर दुत्कारोसँ अहाँ, तुलसी, काली, सूर कहायब ।।
पत्नी बिना स्वयं शिव-शम्भो, धयल अखण्ड समाधि ।
नारद माया मुक्तो होइतहुँ, जा क' खसला खाधि ।।
पत्नी लेल राम-रावणमे युद्ध भेल बड़ भारी ।
पत्नी लेल भेल महाभारत, पुत्रहीन गन्धारी ।।
पत्नीक लेल बाप-बेटामे नित दिन खटपट होइछ ।
पत्नीक लेल भाइ-भाइसँ, भिन्ने भ' क' रहइछ ।।
पत्नीसँ जीवन अछि चंचल, बिनु पत्नी सब सून ।
पत्नी संग हिलि-मिलि रहू 'नन्द', जेना पानमे कथ आ चून ।।

(८९)

चमचा

चमचा बगलमे राखि क' करब जँ कोनहुँ काज ।
अपने बैसब चुप-चाप भ', चमचा करत प्रकाश ।।
कतबहुँ रहत दिमागमे टेन्सन, चमचहि करतै दूर ।
जखन जेहेन सेवा चाही से, चमचहि करतै पूर ।।
थारी बदलत, व्यंजन बदलत, चमचा नहि बदलैछ ।
साहेब केर खातिरदारीमे सदिखन भिड़ल रहैछ ।।
आँखि रहैतो आन्हर होयब, चमचा नयनक ज्योति बनत ।
कान सटाक' मंत्र जे फूकत, छोड़ि ने किछु दोसर देखब ।।
अहाँसँ बेसी प्रतिभाशाली, साहेब जँ दोसर औताह ।
अहाँकेँ छोड़ि ओतहि सटि जायत, करत ने अहाँकेर परवाह ।।

गलती पर मे दै अछि झाँपन, जाधरि अहाँक संगमे अछि ।
हटितहि ओकरा करत उजागर, सैह ओकर विशेष गुण अछि ।।
तेँ चमचासँ दूर रहू, अपना बुद्धिक करिऔ उपयोग ।
सबटा सुनु 'नन्द' अपनहि काने, आँखिसँ सबटा देखू रोग ।।

(९०)

सब हनुमानक जरले थुथना

नेता बनितहि सपत खाइत छी, देशक सेवा खूब करब ।
जाहिसँ हो उत्थान देशकेर, तकरहि लेल दिन-राति मरब ।।
तन-मन-धनसँ सतत गरीबक कल्याणहु केर करब जोगाड़ ।
राति-दिन किछुओ नहि बूझब, सतत नीक राखब व्यवहार ।
मुदा पकड़ितहि कुर्सी सब किछु, बिसरथि एकहि क्षणमे ।
धवल वस्त्र तनसँ छनि लागल, कारिख पोतल मनमे ।।
दल अछि विविध लोक एकहि रंग, एकहि नीतिसँ लाड़ैत छथि ।
जनमानसकेँ बूड़ि बनाक', विविध भाँति परतारैत छथि ।।
जनताक बीच एक दोसरकेँ सदिखन दै छथि गारि ।
भेट भेला पर गला मिलाक', करथिन खोज-पुछारि ।।
जनता मकर जालमे फँसि, कर्त्तव्यक पथसँ भटकल अछि ।
जेना बेलसँ खसला पर, बबूरे पर मे अटकल अछि ।।
किछु गेला पुनि किछुओ अयला, रूप-रंग ओहने अछि घुघना ।
आँखि बिदोरि देखि रहलहुँ 'नन्द', सब हनुमानक जरले थुथना ।।

(९१)

दागी मंत्री

गाम आ शहर केर कूड़ा-कर्कट सबटा,
आइ भरि गेल अछि दिल्ली दरबारमे ।
ठप्प भेल संसद के काम-काज सबटा,
नित होइछ हल्ला-गुल्ला दिल्ली सरकारमे ।।

हुनका हटाओल जाय दागी जे मंत्री छथि
शामिल भेल छथि दिल्ली सरकारमे ।
बेबस मन, मनमोहन करता की,
शरणमे आबि खसला दिल्ली दरबारमे ।।
जखन कि दागीसँ भरल दुनू पक्ष अछि,
अपन टेटर ककरहुँ ने सुझए जा सरकारमे ।।
दोसरक टेटर तँ सबकेँ सुझैत अछि,
विरोधक आधार चाही एहि व्यापारमे ।।
नाकबला आबै जँ बिना नाकबला बिच,
पहिनहिसँ नाक-नाक करए एहि संसारमे ।
बेदागी जँ आबि गेल दागी केर बीच तँ,
ओकरहुँ बनाबए दागी एहि बाजारमे ।।
छोट वा पैघ होअय दाग तँ दागे थिक,
फर्क ने कोनो अछि दुनूक व्यवहारमे ।
जएह छथि अटलजी सएह मनमोहन
दुनूक लगाम अछि पार्टी सरदारमे ।।
दागिओक अपन विशेष महत्व अछि
सबसँ अधिक वोट पाबए एक ललकारमे ।
बेदागीकेँ आइ-काल्हि पूछि ने रहल केओ,
ओकर स्थान अछि राशनक कतारमे ।।
दागी सब दिनहिसँ स्वतंत्र रहल अछि,
ओकर स्थान नहि देशक कारागारमे ।
जेना दागि साँढ़ उजोर छोड़ल जाइछ,
बिनु रस्सी-पगहा केर बहियारमे ।।

जन-मानस केर काज ने कोनो होअय,
हल्ला-गुल्ला कयने रहु दिल्ली सरकारमे ।
कानून बना 'नन्द' बेदागी बहार करु,
दागी के रह' दिअ' दिल्ली सरकारमे ।।

(९२)

चोर-सिपाही

धिया-पूतामे खेलइत रहिअइ, चोर-सिपाहिक खेल ।
बीच बाजारमे घुमए सिपाही, चोर जाइत छल जेल ।।
आइओ होइत अछि नगर-नगरमे, चोर-सिपाहिक खेल ।
चोर घुमै अछि छाती तनने, जाइछ सिपाही जेल ।।
आगू-आगू चोर जाइत छल, पाछाँ दौड़ैत, छल सिपाही ।
चोर पकड़बा लेल दौड़ैत अछि, भागि रहल अछि आइ सिपाही ।।
एक दिन छल, चोर डरै छल, ओकरासँ आइ डरै सिपाही ।
एहि कारण घटनास्थल पर, चोरक बादमे जाइछ सिपाही ।।
भलमानुषकेँ अंग्रेजहुँ केर, लाल टोपसँ डर नहि भेल ।
मुदा आइ जे भलमानुष अछि, नाम पुलिसक सुनि घर गेल ।।
अंग्रेजी शासनक विरोधेँ, दुर्गति पर दुर्गति सहल ।
आजुक शासक केर विरोधसँ संकट प्राणहुँ पर बढ़ल ।।
ई देखाबटी नोटक खातिर, 'नन्द' दुनूमे अछि बड़ मेल ।
चोर घुमै अछि छाती तनने, जाइछ सिपाही सरपट जेल ।।

(९३)

बाढ़ि

सगर नगर हाहाकार भ' रहल अछि, जन-जन आइ तबाह अछि बाढ़िसँ ।
ककर के करत पुछारि सब अपनहि, कुर्सी बचाब' मे तबाह कुकुरमारिसँ ।।
कतहु मचैछ सोर पानि पीबाक लेल, डुबि रहल अछि केओ कतहुँ बाढ़िसँ ।
कतहुँ मरैछ जल बिनु सब प्राणी तँ, कतहुँ मरैछ जल बीच सब बाढ़िसँ ।।

जकरासँ करै छी भरोस बचयबाक लेल, ओ तँ सुतल अछि चादरि तानि केँ ।
भरल रहैछ आँखि नोर फुसिआही, ओकरहुँ खर्ची चलैत अछि बाढ़िसँ ।।
जकरहि माय मरै, ओकर पात भात नहि, ई तँ सब दिनहिसँ होइत अछि ।
जकरहि लेल अबैत अछि राहत, सैह मरैछ अन्न-जल बिनु बाढ़ि सँ ।।
करोड़क करोड़ एहि नाम पर अबैत अछि, जकरा लेल आयल से ने पबैत अछि ।
पौ बारह आइ नेताजी केर, ओकर खजाना भरि गेल आइ बाढ़िसँ ।।
सही कहल अछि कवि विद्यापति, आगि जारि पुनि आगिक काज होइछ ।
तहिना डूबल पानिक बीचमे जे, पानि पीबाक लेल तबाह अछि बाढ़िसँ ।।
उठि बैसल नेता इंजिनियर, ठीकेदारक हाल ने पुछिऔ ।
राहत केर सब सामग्री 'नन्द', बनर-बाँट करैत अछि बाढ़िमे ।

(९४)

बरिसाइत

जेठ अमावस उगलय ज्वाला, तैपर लागल भीड़ ।
सन-सन-सन-सन बहइछ पछबा, झामर सभक शरीर ।।
बाट-बटोही बाट चलए नहि, छाहरि ताकए बैसए ।
कौआ-मैना, चिड़इ-चुनमुनी, खोंतामे झट पैसए ।।
आजुक दिन श्रीसावित्रीजी, सत्यवान केर हेतु ।
यमराजहुसँ भिड़ि फहरौलनि, सती धर्म केर केतु ।।
प्राण हेतु निज प्राणनाथ केर, नारी व्रती बनलि छथि ।
सदा सुहागिन रहथि ताहि लेल, बड़क गाछ पूजै छथि ।।
भारतीय वटवृक्षहुँ पूजित, द' पुष्पांजलि नीर ।
वरक लेल मँगै छथि सब जनि, आयुष्यो तकदीर ।।
सजल-धजल तरुणी सभ हो जनु, चन्द्रमुखी समतूल ।
कयने सभ शृंगार सोलहो, नख-शिख ठोढ़ अतूल ।।

अद्भुत दृश्य लगै अछि देखू, कमला कातक मेला ।
नाचथि, गाबथि, हँसथि दहो दिश, हर्ष-उछाहक बेला ।।
युवती केर की हाल कहूँ, बुढ़ियो पर आयल जुआनी ।
ऊँच-नीच केर भेद-भाव नहि, सबहक एके कहानी ।।
छोटका-बड़का जाति-पाति केर, भेद ने ककरहु मनमे ।
ई समता केर सरस समन्वय, बड़ गाछक उपवनमे ।।
कारी-कारी लटक जाल छनि, कोइली सन कुहकै छथि ।
जनु बादरि केर बीच-बीचमे, बिजुरी छिटकि उठै अछि ।।
मेनकाक लखि रूप भेल छल, गाधि तनय तप भंग ।
मंत्र मुग्ध भ' जाय बटोही, देखि समूहक रंग ।।
ठमकि जाय लखि नयन कोरसँ, निर्मल कंचन काया ।
दूर करत की ठेही बाटक, पड़ल की कोनो माया ।।
देखि दृश्य वटवृक्ष लग केर, मन आंदोलित होअय ।
आइ एहेन हमरहु दिन होइत, कुमारिका गण सोचए ।।
भ्रमर देखि पुष्पक समूहकेँ, गाछहि लग घुरिआय ।
रसक जोगाड़ कर' चाहै अछि, सुझए ने कोनो उपाय ।।
रतिगण लखि रतिनाथो चाहथि, कोना क' करता सर-संधान ।
केवल हाथ धनुषटा लेने, नहि तरकस नहि बाण ।।
जीवन 'नन्द'क हे भगवन्, नित अपना चरण लगाबी ।
जँ पुनि जन्म होय धरती पर, बड़क गाछ बनाबी ।।
बाट चलथि जे बाट-बटोही, छाहरि तर सुख पाबथि ।
वर-कन्याक स्नेह अविचल हो, गीत प्रेम केर गाबथि ।।
बड़क गाछ तर एकताक जे, देखल दृश्य अनूप ।
अखिल भारतक लोक देखाबथि, समरसताक स्वरूप ।।

(९५)

बड़क गाछ

भीड़-भार लागल छै बड़क गाछ तर,
वट सावित्री पूजा बड़क गाछ तर ।।
नव विवाहित ललना सजि धजि आयल छै,
कएने विविध श्रृंगार पयरमे पायल छै ।
वरक पूजा करथि, बड़ के गाछ तर ।। वट...
नयन जुड़ायल कतेक, कतेको पागल भेल ।
मृगी झुण्डकेँ देखि, कतेको घायल भेल,
बहुतो केर मन टँगले रहि गेल गाछ तर ।। वट...
वर हो केहनो बड़भागी ई गाछ छै,
जकरा अंकमे पसरल गामक लाज छै ।
रमणी केर मन रमलइ बड़क गाछ तर ।। वट...
गाछक लए चरणामृत पुनि पंखा झेलथिन्ह ।
एहन सुअवसर जिनगी भरि ने वर पेथिन्ह,
मनक सब मनोरथ बड़क गाछ तर ।। वट...
'नन्द'हु करए कामना गाछे बनि जइतहुँ,
रौदोमे राही के छाहरि द' सकितहुँ ।
पबितहुँ आइ प्रेम ललनासँ गाछ तर ।। वट...

(आ.भा.सँ प्रसारित)
(विधात्रीसँ)

(९६)

काकी टोलक नेता छथि

काकी टोलक नेता छथि ।
बाजब मधुर वाक् चातुरता, बिनु पेनी के लोटा छथि ।। काकी...

बिना बजौने सबठाँ जेती, बनलो काज बिगाड़िक' एती ।
पर दुःख देखि नयनसँ अश्रुक निर्मल धार बहाबैत रहती ।
ककरहु नीक, नीक नहि लागनि, ई बिढ़नी केऽ खोंता छथि ।। काकी...
घर फोड़बामे परम निपुण ओ कान फुकैमे परम विलक्षण ।
जकर कान काकी फूकथि से, झाड़ि ने सकए कोनो ओझा गण ।
मार-सम्हार दुनू केर संगम, पर बैसल एकलौता छथि ।। काकी....
जे घर सुखसँ भरल-पुरल हो, ओहि घर जँ काकीक आगमन हो ।
तुरतहि फूकि विध्वंसक विगुल, महाभारत करबा दैत छथि ।
बिना आगि केर क्षणमे जरि जाए, परम कुशल अभिनेता छथि ।। काकी...
नेना बूढ़ जुवान केओ नहि, काकी लगमे बाजए ।
केहनो बजनिहार काकी लग, नाङ्गरि के सुटकाबए ।
पैघ बजक्कर काकी लग, जेना काँच बाँस के टोटा छथि ।। काकी...
राजनीतिमे माहिर संगहि, कूटनीतिमे कम्प्यूटर ।
बिना तीर के तीर चलाबथि, वार अचूक सभक घर पर ।
काकी हरफनमौला दियादक, लेल जमालगोटा छथि ।। काकी...
साँपक काटल बचियो जाइछ काकीक काटल बचि ने सकैए ।
हिनक संग दोस्ती-दुश्मनी, किछु कएने किछु फर्क ने होइए ।
हिनकासँ सब थर-थर काँपए, सबहक नाकक पोटा छथि ।। काकी...
जँ ढरली तँ सब किछु देती, विचलित होइतहि सब ल' लेती ।
अनुचित उचित ने किछुओ देखू सबटा काकी पर मे फेकू ।
तैखन सिद्ध होयत सब कारज रिद्धिक सिद्ध प्रणेता छथि ।। काकी...
पीठक पाछाँ निंदा करइत, सोझाँमे गुणगान करथि ।
टोलक लोक सब काकीकेँ धरती केर भगवान बुझथि ।
काकी लग नहि सुर-सुर, मुर-मुर एहेन केओ नहि बेटा छथि ।। काकी...
काका सेहो गुमशुम बैसल, काकी केर लावण्य कलापर ।

की मजाल जे साँसो लेता, बिना इशारा काकीक पौने ।
काकीसँ काका छथि सम्बल, नहि तँ खोटा सिक्का छथि ।। काकी...
ओहो दिन देखल काकी के, आइयो देखी काकीकेँ ।
सबटा शान माटिमे मिलि गेल, एक पुतहुए काकीकेँ ।
तरे तर सब मोद मनाबए, देखि दुर्दशा काकीकेँ
काका सेहो पुरुष भ' गेला, पौरुष मेटितहि काकीकेँ ।
'नन्द'क काकी चिनगारी तँ, पुतहु बन्दुकक टोटा छथि ।। काकी...

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(९७)

जवाना बदलि गेल

जवाना बदलि गेलै रे बाउ, जवाना बदलि गेलै रे बाउ ।
पहिने लाउ कमा क' तैखन, बैसि घरमे खाउ ।।
ओ दिन आब फेर नहि अओतै, छूछ फुटानी चलि नहि पओतै ।
रोब-दाब पौतीमे राखू, ऊँच-नीच केर भाव ने रहतै ।
भगवाबला कमा क' दै छल, धोतीबाला खाउ ।। ज० ।।
जकरा हाथमे हेतै लाठी, महिस हाँकि सरपट ल' जेतै ।
खाली हाथ करए बबुआनी, टक-टक सब देखितहि रहि जेतै ।
साँची पर ने माछी बैसए, आबहुँ हाथ डोलाउ ।। ज० ।।
कोबर के कनियाँ बनि गेला, दफ्तर केर किरानी बाबू ।
बिनु मुँहबजना लेने ने बजता, चाहे कतबहु जोर लगाबू ।
काज करेबाक हो तँ पहिने, हाथ गरम करबाउ ।। ज० ।।
बिजली केर की हाल पुछै छी, एहिसँ नीक भगजोगनी ।
ओ तँ सदिखन भुक-भुक करइछ, ई गाबए बटगवनी ।
बिल देखि क' बी.पी. बढ़ि गेल, बिजलीक लाइन कटाउ ।। ज० ।।

कुल-शील केर मोल ने रहलइ, केवल टाकाक मोल ।
सरकारी कानून दहेजक, भ' गेल आइ मखौल ।
व्याहसँ पहिने कोर्टमे जा क', पंजीकरण कराउ ।। ज० ।।
राजनीतिमे नीक लोककेँ, कतहु ने देखबै वास ।
लुच्चा-लम्पट, चोर-उचक्का क' रहलै अछि राज ।
आरक्षण केर नारा द' क' माथसँ माथ फोराउ ।।
काज पुरुष केर करए जनाना, चलबए मोटर कार ।
सबठाँ ओकरे घुसि गेलासँ पुरुष भेल बेकार ।
नामी-नामी केशक बदला बॉब कट कटबाउ ।। ज० ।।
सड़क चलै अछि गाड़ी जेना चढ़ल छी राम हिड़ोला ।
कोनो भरोस ने कौखन उनटत, खाइत रहू हिचकोला ।
यात्रा करबासँ पहिने बीमा जा' क' करबाउ ।। ज० ।।
तुलसी केओ पूजनिहार नहि, कतहु ने तुलसीक गाछ ।
तुलसी आइ रहल नहि तुलसी, भेलै वन केर घास ।
घर-घर तुलसीक गाछ हटा क' मनीप्लांट लगबाउ ।। ज० ।।
संस्कार आ परम्परा केर भ' रहलइ अछि खून ।
पूजा-पाठक विधि-विधानकेँ लागि रहल छै चून ।
घी केर लड्डू हटा क' मुर्गी केर अंडा बटबाउ ।। ज० ।।
कनियाँ ठाढ़ि भेल छथि दंगल, मारथि डंका चोट ।
मुखिया बन'क लेल घरे-घर माँगि रहल छथि वोट ।
हे पुरुष अहाँ भनसाघरमे बैसि क' माँड़ पसाउ ।। ज० ।।
परिवारक परिभाषा भेलै धिया-पूता आ कनियाँ ।
कनियाँ गृह लक्ष्मी कहाबथि, ओएह बसौती दुनियाँ ।
हुनकर चरण घरमे पड़ितहि, बापो-माँकेँ भगाउ ।। ज० ।।

प्रगतिक पथ पर सतत चलू, बनि दू बच्चा केर बाप ।
तैखन सुखसँ जीवन कटतै मेटतै सब संताप ।
जनसंख्या पर अंकुश लेल झट नसबंदी करबाउ ।। ज० ।।
अपने पाछु-पाछु चलिऔ, आगू-आगू कनियाँ ।
तैखन काज सफल भ' पाओत, इएह छी आजुक दुनियाँ ।
दुश्मन पर विजय लेल 'नन्द' शिखंडी के अगुआउ ।। ज० ।।

(९८)

सासु-पुतोहु

सासु-पुतोहुक महाजालमे बाप-बेटा अछि पेड़ा रहल ।
गाम-घर अछि अलग-अलग आ खिस्सा सब घर एके गढ़ल ।।
बुढ़िया बाजलि सुनु औ बूढ़ा, एहि घरमे केओ एके रहतै ।
हम रहब वा कनियाँ रहती, दुनू एकठाँ रहि नहि सकतै ।
आगि लागल छै नैहर जकरा, गप्प करए ओ चटर-पटर ।। सासु० ।।
कनियाँ बाजलि सुनु औ प्रीतम, बुढ़िया के कोनो ठौर धराउ ।
दिन भरि बैसले-बैसले गिड़ती, ऊपरसँ बिष वमन कराउ ।
हम की ककरहु बहिकिरनी छी, ठेसी झाड़त पड़ल-पड़ल ।। सासु० ।।
बापक घरमे भाङ ने जूरै, एहिठाँ हलुआ-पूरी ।
हम ओकर नखरा नहि सहबै, गरदनि चलबै छूरी ।
आगि लगायब ओहि घटककेँ जिनगी हम्मर नरक बनल ।। सासु० ।।
हमरा घर जे आगि लगाओत, तकरा खसतै ठनका ।
हम नहि कोनो पौनी-पसारी, बाबू गनलनि टाका ।
जकरा बापकेँ जुड़ै ने फूटहा, ओ की बाजत लबर-लबर ।। सासु० ।।
बुढ़िया भभकै दिआसलाइ सन, कनियाँ भेलै पेट्रोमेक्स ।
बुढ़िया उड़ै हवाइ जहाज पर, कनियाँ केलकै रॉकेट ध्वस्त ।
रहि-रहि बुढ़िया हाथ चमकाबै, देखि-देखि कनियाँ ठोर बिचकाबै ।

बुढ़िया के दाबी हम छी शेर, कनियाँ भेटलै सवा सेर ।
बुढ़िया दै छै मुँहसँ गारि, कनियाँ दै छै कनखीक मारि ।
बुढ़िया केलकै बाप रे बाप, कनियाँ देलकै चुप्पे-चाप ।
बाप-बेटा दुनू अछि सुटकल, आङन आइ बनल अछि चम्बल ।
ठाढ़ लोक सब चारू कात, सभक मुँहमे लागल टाट ।
बिढ़नी खोंता हाथ के देत, के नोचबाओत माथक केश ।
झगड़ा बढ़िते-बढ़िते गेल, पंच आयल पंचैती भेल ।
बाप-बेटामे बखरा भेल, सब केओ 'नन्द' अपन घर गेल ।।

(९९)

नया बिहार

सुन रौ बौआ, कहू यौ भैया, केहेन नया सरकार छै ।
सब काजमे भेलै बरक्कैत, ई ओकरहु सरदार छै ।।
यावत् छल विरोधी बनि क', हल्ला-गुल्ला करैत छल ।
जहियासँ भेटलै अछि सत्ता, आश्वासन अछि भेटि रहल ।
दिनक काज मासमे होइछ, इएह तँ नया बिहार छै ।।
करत गरीबी दूर बिहारक, इएह नारा लगबैत अबै अछि ।
सब व्यवस्था निजीकरण क' बेरोजगारी बढ़ा रहल अछि ।
मिठ-मिठ नारासँ लोभाओत, इएह एकर रोजगार छै ।।
ओएहे कुर्सी ओएह चपरासी, ओएहे जनता ओएह गुटबाजी ।
ओएहे नेता ओएह विधायक, एहिसँ कूदि ओहिमे जायत ।
लाज-बीज कोनहुँ धरमे नहि, सबसँ पैघ खेलाड़ छै ।।
ओएह अपहरण ओएह फिरौती, ओएहे कुकुर ओएह चमौटी ।
ओएह किरानी ओएह छै अफसर, ओएहे फाइल ओएह छै दफतर ।
ओ छल भङठल रेलगाड़ी, ई तँ भङठल कार छै ।।

गेलहुँ ल' क' खाली झोरा, आपस अयलहुँ भरि क' बोरा ।
की की कयलहुँ जादू-टोना, भेटल अछि उम्मीदसँ दूना ।
महिलाक आरक्षणसँ भेलै, पुरुषक बंटाढार छै ।।
चोरी कयलक डाका देलक, आबि क' आत्मसमर्पण कयलक ।
पुरस्कारमे टाका भेटलै, नौकरी केर आश्वासन पओलक ।
'नन्द' होयत की लिखने-पढ़ने, सबसँ नीक व्यापार छै ।।

(१००)

उलहन

हे सजना, जुनि उकटू हमरा ।
नैहर भरल-पुरल सब गुणसँ, दुसिऔ जुनि ओकरा ।।
माय अहाँ केर गाल बजाबथि, बाप बैसि तर माल उड़ाबथि ।
भाइयो छथि आषाढ़ी बेङ, भौजी छथि जर्मन केर मेम ।
कहबनि जा' ककरा ।। हे सजना० ।।
बहिन उड़ै छथि तितली सन, ल' केओ उड़त कोनहुँ क्षण ।
टोक देला पर भभकै छथि, करथिन भन-भन बिढ़नी सन ।
बिनु आगिक धधरा ।। हे सजना० ।।
दीदी छथि सीटल सुकुमारि, झरनि मुँहसँ छुच्छे गारि ।
पीसा डरहि सेवथि दलान । सब किछु सुनितहुँ देथि ने कान ।
पढ़ै छथि फकड़ा ।। हे सजना० ।।
मौसी अहाँक उड़थि आकाश । मौसा दोसराक चरबथि चास ।
नाना-नानी धयने मचान, कनही गाय केर भिन्न बथान ।
नित होइ अछि झगड़ा ।। हे सजना० ।।
पर-पड़ोसी धयने कोनटा, ककरा ऊपर खसतै ठनका ।
लालो काकी बड़ बजन्ता, हुनकहु मुँहमे लागल फंदा ।
'नन्द' कहब ककरा ।। हे सजना० ।।

(१०१)

कविक जिनगी

जग केर लेल सजग प्रहरी छथि, घरक लेखेँ मुइल ।
बाहरक लेल मुर्धन्य कवि छथि, घरमे फूकथि चुल्हि ।।
एहिमे दोष हुनक नहि बुझू, ई थिक हुनक स्वभाव ।
चोर जकाँ अपनहि घरमे छथि, की करता प्रतिवाद ।।
मित्र जे आयल भेट करबा लेल, घुरि घर आपस गेल ।
जखन कि कवि छथि घरहि बैसल, अपना धुनमे अकेल ।।
कनियाँ बजली, कत' गेल छथि, हमरा किछु ने पता अछि ।
हमरा की किछु कहि जाइत छथि, कोना कहू जे कत' छथि ।।
हमरा लेल तँ बाहर-भीतर, दुनू एकहि रंग ।
किएक पूछि क' दिन-चर्या के, करू रंगमे भंग ।।
जखन रहै छनि खुशी मन, दिनहिमे लोरी सुनबै छथि ।
जँ कनिञों भेल एम्हर-ओम्हर, कुकुर जकाँ करै छथि ।।
हम कहलियन्हि हे कवि काली, जल्दीसँ वैराग्य लिअ' ।
रचना करू मेघदूतम् केर, हमर जान तँ छोड़ि दिअ' ।।
बिनु वैराग्य, वियोग, व्यथा केर, केओ की कवि भेलै अछि ।
काली-मीरा-सूर ओ तुलसी, सब तँ ओएह कयने अछि ।।
ओ बजलाह, कवि केर जीवनमे, अहाँ कोनो एसकरि नहि छी ।
जतेक कयल रचना सबमे हम, अहीँ सनक तँ भरने छी ।।
रचना हमर रागमे होइ अछि, कोना धरब वैराग ।
नख-शिख वर्णन कोना करब, हिय धधकि रहल अछि आगि ।।
ई जुनि बुझू 'नन्द' अहाँ बिनु, कविता के विराम देतै ।
अहाँक वियोगे आर अधिक ओ, कविता मे नव प्राण देतै ।।

(१०२)

लाल बुझक्कर

अहीँ एकटा लाल बुझक्कर, आर केओ ने किछु बुझैए ।
सौंसे भारत अहीँ के सूझए, आर ने ककरहु सूझैए ।।
किएक हटौलहुँ बंगालक चुनाव-कार्यसँ रावकेँ ।
गद्दीकेँ ससरैत देखिक' दोस्त बनेलहुँ माऊकेँ ।
सबटा खेल मात्र कुर्सी लेल, देशक हित नहि देखैए ।।
लाभक पद पर हल्ला होइतहि, सबटा पद केर त्याग केलहुँ ।
एहेन अहाँ जँ त्यागी छी, पुनि आबि चुनाव किएक लड़लहुँ ।
ओहि कानूनकेँ झट द' बदली, जे ने अहाँकेँ भावैए ।।
ओ मानव, मानव नहि जकरा, जन्मभूमिसँ प्रेम ने अछि ।
अहाँक प्रेम जँ जन्मभूमिसँ, ओ भारत लेल घातक अछि ।
ई घड़ियाली नोर देखिक', देशक लोक पसिझैए ।।
बुझैमे अबूझ नहि छी मुदा, आइ विवश अपनहि घरमे ।
दुश्मन के एक क्षणमे भगायब, मुदा फूट अपनहि घरमे ।
जाति-धर्म-सम्प्रदाय नाम पर, अपनहिमे सब जुझैए ।।
दुनियाँक सोझाँ त्यागी बनिक' लाभक पद केर त्याग केलहुँ ।
संविधानमे क' संशोधन, पूर्वज केर अपमान केलहुँ ।
चोर-चोर मसिऔत होइत अछि, जग जाहिर सब बूझैए ।।
संसद पर जे हमला कयलक, सजा ओ पओलक फाँसी केर ।
माफ करू फाँसीक सजा के वोट बैंक केर वृद्धि लेल ।
मंत्री पद द' करु सम्मानित, अतिथि धर्मकेँ राखै लए ।।
अतिथिक मान सतत हम करबै, इएह तँ हमर धरोहर थीक ।
एकर अर्थ ई कथमपि नहि भेल, अहाँक सोझाँ झुकल छी ।
जगबू जुनि अहाँ सुतल शेर के, 'नन्द' कपट सब बूझैए ।।

(१०३)

आजादी आ इमरजेन्सी

इमरजेन्सी ! इमरजेन्सी !
सुनि क' मन सन्न रहि गेल ।
आफ़ोस जेबाक बेर भ' गेल ।
भानस तँ भेलो नहि छल,
तैयार भेलहुँ आफीसक लेल ।
कनियाँ बजलीह, किछु खा ने लिअ' ।
भूखल कोना दिन भरि रहबै,
नौकरीओ करैत छी अहीक लेल ।
मुदा हम पाछाँ नहि तकलहुँ,
भुखले धयलहुँ बाट अपन ।
की पता जँ केओ आबि जायत,
कैफियत तँ माँगत रहि-सहि क' ।
मुअत्तल पहिनहि क' जायत ।
अवसर नहि बजबा केर देत,
बाजब तँ जेलमे ठुसि देत,
नहि होयत जमानत सड़ैत रहब,
नेना-भुटकाकेँ के देखत,
जाधरि रहतै ई रणचण्डी,
एम्हर-ओम्हर नहि हिलए देत,
कर्त्तव्यक पथ पर चलैत रहू,
बस पक्का इरादा के राखैत ।
टेंगरा-पोठी केर के पूछए,
अछि रेहुक हाल बेहाल एत' ।

जे सब दिन घुमल शेर जकाँ,
बनि गीदड़ घुमए जत'-तत' ।
काज होइत अछि सब समय पर,
मुदा ई ककरहु रास ने आयल ।
देशक नेताकेँ लगैत छल,
जनतंत्रहुँ खतरा मंडरायल ।
समाचार पर अंकुश लागल,
बाजब पर पाबंदी भेल ।
जतेक घटक छल देशक भीतर,
डरहि सब एक भ' गेल ।
महानाद केर बिगुल बाजल,
संघर्षक सब नारा देल ।
दम सधने जे घरमे दुबकल,
आबि क' गोलबंद भ' गेल ।
छटि गेल इमरजेन्सीक मेघ,
आजाद भेलहुँ जेना हटल घेघ ।
आफिस जायब जखन-तखन,
बाजत के सब तँ ओएह करैछ ।
बालो बाबू तीन दिन पर,
कृपा कयल आफीसक ऊपर ।
हाकिम किछु बजला अंट-शंट,
दुनूमे भेलनि टंट-घंट ।
मारिक डरे भागए भूत,
करता की भ' गेला चुप ।
तरसैत रही हम जकरा लेल,

ओएह तँ ई आजादी थीक ।
जकरा जे मन हो से करू,
ककरहु पीटू, गारि पढ़ू, घसीठू,
खूब करू अत्याचार, अनाचार,
बलात्कार, आतंक आ भ्रष्टाचार ।
एकरहि सँ भेटत 'नन्द'
आरक्षण,
संरक्षण,
देशक नेता केर,
किएक तँ अहाँ आजाद छी !

(१०४)

प्रधानमंत्रीक पद पर कम्प्यूटर

पाँचम वेतन आयोग बनल सरकारी खर्च कटौती लेल ।
वेतन केर संग तीस प्रतिशत पद केर सेहो कटौती भेल ।
कर्मचारीक कटौती लेल, कम्प्यूटर लगबाओल जाय ।
बैंक रेल जीवन बीमामे, एकर प्रयोग कराओल जाय ।।
बढ़त भूखमरी बेरोजगारी, भूखे मरत गरीब ।
सभक पेट हो सेट कम्प्यूटर, एहन करू तरकीब ।
राशन-पानि आयात ने होयत बचत विदेशी मुद्रा ।
जे उपजत सब निर्यातहिमे, बढ़त विदेशी मुद्रा ।
एहि तरहेँ जँ सब तरि लागत, कम्प्यूटर के मेला ।
मुद्रास्फ्रीति शून्यमे अटकत, कोनहु ने होयत झमेला ।
बन्द करू प्रक्रिया चुनावक, एहि पर खर्च बहुत अछि ।
कतेक योजना केर खर्चा, पूरे चुनाव पर होइत अछि ।

संसद मे कम्प्यूटर राखू, प्रतिनिधित्व जनताक करै ।
सांसद आ मंत्रीक खर्चसँ जल्दी देशक कोष भरै ।
मंत्रालय केर खर्चा घटि गेल, मंत्री केर नहि खर्च घटल ।
एहेन विलक्षण बजट नहि देखल, जे एहि वर्षमे अछि देखल ।
बजट गरीबक लेल बनल अछि, ई सरकारक दावा अछि ।
पूँजीपति उद्योग घराना, स्वागत केर लेल आतुर अछि ।
आशा अछि जे देश के विकसित एखनुक ई सरकार करत ।
प्रधानमंत्रीक पद पर एक दिन, कम्प्यूटर जा कऽ बैसत ।।

(विधात्रीसँ)

(१०५)

घोटाला

स्वागत करै लेल छी आतुर सदी इक्कीसम बाला के ।
रंग बिरंगक रंगसँ राङल, रथ अछि बनल घोटाला के ।।
सोर मचौने रेडियो टी.वी. समाचार पत्रो संगमे ।
विपक्षी लेल अछि अस्त्र अमोघ, सफल प्रयोग चुनावहिमे ।
हाट-बजार गली-कूचीमे, चर्चा एकरहि सबठाँ हो ।
चाह आर पानक दोकान पर, बहस एकरहि नित प्रति हो ।
राशन-पानि तँ सब दिन खएलक, आब खाइछ चोकर भूसा ।
मोट भेल नेता घुमै अछि, छोड़ल साँढ़ बिना पगहा ।
जन्म देलक बिहारमे व्यापक, पशुपालन घोटाला के ।। रंग...
देश हमर धर्म निरपेक्ष, एहिठाँ सब धर्मक आदर होइछ ।
सब किछु बजबा करबा केर, संविधानमे छूट भेटैछ ।
प्रतिबंधित अछि केओ ने एहिठाँ, जकरा जे मन हो, से करैछ ।
जनतंत्रक अधिकारे छोटका, बड़का के माथा जा चढ़ैछ ।
ककरहु केओ गुलाम ने रहल, सबहक सब मालिके अछि ।

किछु नहि बदलल, सब पुरने अछि, सब राजनीति वोट केर अछि ।
कतहु रसायन प्रतिभूति तँ, कतहु बोफोर्स हवाला के ।। रंग....
नेतासँ अभिनेता धरि, सब लागल आइ घोटालामे ।
व्यापारी आ नौकरशाही, सब अछि लिप्त घोटालामे ।
कार्यालयसँ मण्डी धरि, पहुँचल अछि दूत घोटाला के ।
जनता सेहो ने वंचित ओहिसँ, जे पूरक घोटाला के ।
कानून बनौनिहार सांसद जे, लिप्त हो सतत घोटालामे ।
की होएत कल्याण देश केर, देशो डूबत घोटालामे ।
नेता ताधरि रहत सुरिक्षत, जा धरि आयु घोटाला के ।। रंग...

(विधात्रीसँ)

(१०६)

कनियाँ

माथा धुनइ छी भनसा घरमे, कनियाँ हम्मर नैहरमे ।।
जा छल भेल विवाह ने हम्मर, मनमे लड्डू फूटल ।
कनियाँ के अबितहि भौजीसँ बाजब-भूकब छूटल ।
लाजे मुँहों ने निहारल कोबर घरमे ।। कनियाँ...
कतेक मनमे आश भरल छल, कनियाँ घरमे एती ।
हँसती बजती रंग-बिरंगक, व्यंजन आगाँ देती ।
चाहक कपो ने सटल कहियो ठोरमे ।। कनियाँ...
कतेक तपस्या कयला पर, पाओल एहेन घरवाली ।
हाथमे पंखा नेने सदिखन, करै छी रखवाली ।
हरदम टाङ्ग पसारथि, हमरहि कोरमे ।। कनियाँ...
जखन सूतिक' उठथि चाहक, प्लेट हाथमे पाबथि ।
तैयो ने खुश होइ छथि, अद्भुत डहकन खूब सुनाबथि ।
फूलल नाक-मुँह रहै छनि, घोघे तरमे ।। कनियाँ....

हे भगवान करइ छी निहोरा, हमरहि सन सबके करबइ ।
जहिना हमरा देखि हँसैत अछि, तहिना नित कानल करतइ ।
हम तँ कानइ छी साँझो भिनसरमे । कनियाँ...

(विधात्रीसँ)

(१०७)

हम की छी ?

दोसरक दोष बिना दुरबीनक, झटसँ हम देखै छी ।
अपन दोषसँ भरल कलश पर, पटसँ झाँपन दै छी ।।
हमरा सन बुधियार ने केओ, सब केओ एतबहि बूझए ।
हमरा छोड़ि सब अछि बुड़िबक, एतबहि सदिखन सोचए ।
एकरा लेल हम झूठ आर, मक्कारी के जाल बुनइ छी ।
आनक धन अपनेबा खातिर, सदिखन यत्न करइ छी ।
बिना बजौने सब सभामे, सब संग जाइत छी ।
जाहिसँ हो अनहित दोसर के, सैह बात बाजै छी ।
हमरा लग सामर्थ अछि जे, झूठ के सच बनबै छी ।
सच के झूठ बनेबामे नहि, मिनटो भरि लगबै छी ।
हमरा संग-संग जँ राखब, सुखसँ सब दिन जीयब ।
मान-अपमान दुनू एके संग, घोरि-घोरि क' पीयब ।
जँ नहि हमर कहल मानब तँ पग-पग ठोकर खाएब ।
दूध-माछ दुनू होइछ बाँतर, 'नन्द' मोनमे राखब ।

(विधात्रीसँ)

(१०८)

घरवाली

सतत मनाबथि अपना पति लेल, जियथि हजारो साल ।
कमा-धमा कए टाका अनथिन, हेती माला-माल ।

बिनु टाका पति झंझट लागथि, अकर्मण्य बेलूरि ।
फैशन केर जे बोझ ने उठबथि, से पति छथि बर बूड़ि ।
टाङ पसारक जगह ने तैयो, फैशनमे ने कभी हो ।
साड़ी वेशकीमती चाहथि, जे ने पड़ोसिन देखने हो ।
सदिखन रहथि चूर अपने मे, सासु ससुर के वश नहि छथि ।
पति बेचारा कर जोड़ि, जेना काली मइया प्रस्तुत छथि ।
भभकि उठै छथि ज्वालामुखी सन, कनिञो कमी के होइतहि भान ।
पति केर मान रहए वा बिकि जाए, तकर ने हुनका कोनहु ध्यान ।
भड़कि उठै छथि बात-बात पर, जँ हुनका सन बात ने हो ।
सौंसे घर के माथ उठौती, जा धरि पित्त शान्त नहि हो ।
भनभनाइत बिढ़नी सन रहती, ननदि के आगाँ अबितहि ।
बरसि पड़थि हथियाक मेघ सन, ककरहु बीच-बचाव करितहि ।
धिया पुता सेहो अछि सुटकल, आँचर तरमे दादी के ।
डरसँ काँपए थर-थर ओहि क्षण, मुँह निहारए दादी के ।
अढ़े घाते हुलकि-हुलकि क', ताकि रहल नेना भुटका ।
कोना शान्त हेती महामाया, तकर करै टोना-टोटका ।
हिनका नहि रहला पर मनमे, भाव अनेक उठै अछि ।
नव-नव कविता रचना केर, अंकुर जेना फुटै अछि ।
हिनका रहैत ने साहस हमरा, जे कल्ला अलगाबी ।
सतत रहथि नैहर एतबए, भगवानसँ नित्य मनाबी ।
जतेक लोक छी, सब छी बनल, घरवालीक गुलाम ।
एतेक ने साहस जे किछु बाजब, कसने छथि लगाम ।
हम तँ एतबहु साहस कएल जे, मनक व्यथा कहल अछि ।
'नन्द' ई दिल्ली केर लड्डू छथि, डाकक वचन कहल अछि ।

(विधात्रीसँ)

(१०९)

मजदूरक शोषण

एहि धरती पर सब दिनहिसँ, मजदूरहि केर शोषण भेल ।।
अफसर केर शोषणसँ शोषित, जमींदारक शोषणसँ पीड़ित ।
अंग्रेजक शोषणसँ पीड़ित, सामाजिक शोषणसँ पीड़ित,
पीड़ित समुदायक आङनमे, यूनियन बनाओल गेल । एहि...
बिना कमीशन केर अफसर, वेतनमे आनाकानी करए ।
डेग-डेग पर फटकारो के, स्वागत ओ सब दिन करए,
जीवनसँ छल तंग मुदा, सबटा सुनैत छल पेटक लेल ।
सहबा केर सामर्थ ने रहितहुँ, सबटा सहए विकल्पक लेल ।। एहि...
नेता बनला शोषित वर्गक, भाषण भेल घमसान ।
सिंहनाद नारासँ लागल, शोषक केर गेल जान ।
मुदा देखै छी नेता सेहो, ओकरे संग मिलि गेल ।
व्यर्थ भेल सबटा प्रयास, उत्साह माटि मिलि गेल ।। एहि...
वेतन भेटबा केर क्षण पहिने, नेता केर चमचा प्रस्तुत होइछ ।
चन्दा केर रसीद काटै अछि, बिना नेने नहि जान छोड़ैछ ।
फर्क ने पाओल तखन एखनमे, ग्लानीसँ मन मलीनो भेल ।
पहिने एकेटा शोषक छल, आब दू-दू-टा शोषक भेल ।। एहि...
मजदूर कम नेता बेसी, जेना भेंड़सँ अधिक गरेड़ी हो ।
मारि करए नेता बनैक लेल, जेना गुड़मे चुट्टी हो ।
अपन स्वार्थ केर पूर्ति लेल, मजदूर के झोँकए भट्ठीमे ।
भगवाने आबि करता रक्षा, मजदूर मिलि रहल माटिमे ।
फर्क होइछ कथनी-करनीमे, आश निराशमे परिणत भेल ।। एहि...

(विधात्रीसँ)

(११०)

वसन्त

वसन्तो बिना कि बजौने अबइए,
कतेक रंग सौरभ सजौने अबइए ।। वसंतो...
पतझर के मौसम जखन सबठाँ आओत,
नूतन किसलय निमंत्रण पठाओत ।
धरा जूही-बेलीसँ गमगम करइए ।। वसंतो...
आमो मजरि गेल, सरिसो फुलायल,
मधुकर मधुप रस चखै लए लोभायल ।
महुआक रस सेहो टप-टप चुबइए ।। वसन्तो...
कचनार सेहो अपन रंग देखबए ।
बगिया विविध रंग-रोगनसँ दमकए ।
जुअनको के बुढ़बा जे ललकार दैए ।। वसन्तो....
तरुणीक तन-मन कहलो ने मानए ।
यौवनसँ मातलि मदन किछु ने जानए ।
सघन घनसँ बिजुरिक छटा छिटकैए ।। वसन्तो...
मदमत्त भँवरा जे आतुर फिरैए ।
काँच कली केर चुम्बन करैए ।
पाजेब रति केर छनाछन बजैए ।। वसन्तो...
हाथो अबीर-गुलालक झोरी ।
नाचथि-गाबथि करथि बरजोरी ।
कतहु ढोल-झाँझर के झनकार होइए ।। वसन्तो...
''नन्द'क सुखल मन मुस्कायल ।
जे सुखल छल से हरिआयल ।
ऋतुपति राजक स्वागत करैए ।। वसन्तो...

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(१११)

विरह

निर्दय वसन्त कथी लय तू अएलेँ ।
तरपै छी प्रेमीक विरहमे, आबि किएक औरो तरपौलेँ ।।
तोरा अबितहि पपीहा बाजए, पियु-पियु करइत शोर मचाबए ।
जरि रहलहुँ विरहाक आगिमे, आबि किएक तू आर जरौलेँ ।।
दिन नहि चैन निन्न नहि रतिया, कोइलिक कुहू-कुहू सालै छतिया
सून सेज सहलो नहि जाइछ, बिच्छू बनि किए डंक लगौलेँ ।।
फूलल कुसुम सोहाइ ने ओहि क्षण, भ्रमरक गुञ्जन बेधै तन-मन ।
कोना क' काटब पिया बिनु रैना, सुतल मदन किएक आबि जगौलेँ ।।
तोरा अबितहि बगिया दमकए, सूखल तरु नव पातसँ चमकए ।
सब केर मन तोहरहिसँ शीतल, 'नन्द'क हिय किए, आगि लगौलेँ ।।

(विधात्रीसँ)

(११२)

महारैली

दलित-गरीबसँ भरल खचाखच, पटना केर गाँधी मैदान ।
जतए कएल रैली आयोजित, बिहारक अछि एक किसान ।
धूम-धामसँ साजल जाइछ, पटना केर सड़क ।
गद्दी केर रक्षार्थ करइ छथि, आयोजन बेधड़क ।
बड़का तँ बड़के छल सब दिन, जे गरीब के लुटने अछि ।
छोटका ओकरहुसँ आगाँ बढ़ि, कोनहु कसरि नहि छोड़ने अछि ।
आयोजन केर पूरा खर्चा, जँ गरीब पर होइतए ।
कतेक गरीबक घर बनैत, किछु रोजगारो तँ पबितए ।
लाल कार्ड रैलीमे भेटत, ई अछि आश लगौने ।
बिना टिकट केर यात्रा करबा, लेल अछि सब मुँह बौने ।

पसरल अराजकता ओहिठाँ, ककरहु किछु नहि भेटैत अछि ।
पानिक लेल सभा स्थल पर, हाहाकार मचैत अछि ।
विज्ञापन अछि भरल सबठाँ, ई सरकार गरीबक थीक ।
किछुओ ने उत्थान गरीबक, ई सब दोष नसीबक थीक ।
वादा करइछ रामराज्य केर, गाँधीक सपना पूरा होएत ।
रावण राज्य पुनः अछि आयल, एहने दृश्य देखाइ पड़ैछ ।
दूध बेचिक' आयकर दै अछि, एहेन ने करदाता केओ भेल ।
दूधक मोल तँ घरहि रहि गेल, पानिक मोल टैक्समे गेल ।
रैलीसँ ई साबित भ' गेल बिहार सबसँ पिछड़ल अछि ।
पिछड़ापन के दूर करैक लेल, केवल शिक्षा माध्यम अछि ।
जँ करैक हो दूर गरीबी, शिक्षा के अनिवार्य करू ।
लाल कार्ड के राशन पर नहि, पढ़बा पर मे प्रयोग करू ।
बिना बुद्धि केर बलसँ नफरत केर माहौल बढ़ै अछि ।
बल रहितहु समुद्र मथलासँ की अमृत पबैत अछि ?

(विधात्रीसँ)

(११३)

गीत

रूप अहाँकेँ अद्भुत सुन्दर लागैए,
देखि अहाँकेँ चान लजा क' भागैए ।।
गोर देह सोना सन चमचम चमकैए,
नव उरोज के आङी कारी झाँपैए ।
डेग उठबितहि नूपुर रुनझुन बाजैए ।। देखि...
जँ कहिओ अहाँ फुलबाड़ी दिश जाइत छी ।
देखि अहाँ के कली सेहो खिल जाइत अछि,
भँवरा देखितहि सुधि-बुधि अपन गमाबैए ।। देखि...

गली-गली आ गाम-गाममे शोरो भेल,
देखबा लेल अहाँकेँ, सबमे होरो भेल ।
पागल जकाँ करै अछि अहाँकेँ देखबा लए ।। देखि....
विधना सेहो बनाय अहाँ के चिंतित छथि ।
कोना क' जोड़ी गढ़ता एतबहि सोचै छथि,
अहाँ सनक अहीँटा 'नन्द' मन भावैए ।। देखि...

(विधात्रीसँ)

(११४)

दिल्लीक हाट

सिसकि रहल भारत केर आङन करुण चीख-चित्कारसँ ।
लूट-खसोट आर आतंकक निर्मम नरसंहारसँ
नित गरीब केर घर जरै अछि, नारीक संगे अत्याचार ।
छाती तानि क' घुमि रहल अछि आरोपी सौंसे बाजार ।
धवल वस्त्र मन कारिख पोतल, रहइछ नव नित ठाठमे ।
अपनहु बिकए देश के बेचए, नित दिल्ली केर हाटमे ।
देखि दुर्दशा दीन-हीन केर, आँखिमे सदिखन भरने नोर ।
पाँच सितारा बैसि पिबै अछि, नित दिन रेहु माछ केर झोर ।
गिरगिट जकाँ रंग बदलैमे अद्‌भुत कौशल पौने छै ।
वाणीसँ जन-जन पर अप्पन, मोहजाल लटकौने छै ।।
कर्मक फले एकटा कुकुर शीतमहलमे वास करै ।
दोसर सदिखन पेटक खातिर बाट-बटोहीक संग लड़ै ।।

(विधात्रीसँ)

(११५)

युग अछि केवल मौका के

नहि पौने जीवनमे मौका कहबै छी बेकार ।
जे पौलक मौका, से अपन सपना कयलक साकार ।।
मौका पबितहि नेता सब, जनता पर राज करइ अछि ।
मौका पबितहि वोटक खातिर, नाक अपन रगड़इ अछि ।।
मौका पबितहि अभियन्ता सेहो, पुल पचा जाइत अछि ।
मौका पबितहि ठीकेदार सेहो खाधि मे रौलर दै अछि ।।
मौका पबितहि टी.टी. सेहो ट्रेन अपन बुझै अछि ।
बिना टिकट केर बीस टाकामे दिल्लीक सैर करबइ अछि ।।
रेल सुरक्षाकर्मी ओहिसँ बेशी दया करइ अछि ।
मोटरीक भाड़ा दू टाका लए, यात्रा फ्री करबइ अछि ।।
कुली बेचारा मेहनति क' क' बर्थ लुटि राखइ अछि ।
यात्रीसँ दस-दस टाका लए कृपादृष्टि फेरइ अछि ।।
टिकटयुक्त यात्री के सर्वाधिक सुविधा भेटइ अछि ।।
सामानक रक्षार्थ ठाढ़ भए मोटरी माथ रखइ अछि ।।
मौका पबितहि नेताजी भरपूर केलनि घोटाला ।
मौका पबितहि नेताजीके पटकि देलक हवाला ।
मौका पबितहि रामविलास रेलक लाइन पसारल ।
ललित नारायणक सपनाकेँ साकार करैत उतारल ।।
मौका पबितहि अटल सेहो परमाणु परीक्षण केलनि ।
जय विज्ञानक नारासँ, भारत केर मान बढ़ौलनि ।।
सुलगि रहल छल सन चौहत्तरिसँ जे चिनगारी ।
सन अनठानबेमे प्रज्वलित भेल ओ चिनगारी ।।
एक एहन जे मौका पबितहि देश के गर्त करइ अछि ।
एक एहन जे मौका पबितहि, देशक लेल मरइ अछि ।।

सब मिलि करू, मरू देशक लेल, छोड़ू धरी-धोखा के ।
मौकासँ सब लाभ उठाबू, युग अछि केवल मौका के ।

(विधात्रीसँ)

(११६)

जनसंख्या नियंत्रण

नीक भेटल फार्मूला जनसंख्या नियंत्रण केर,
आब आवश्यक नहि बंध्याकरण अछि ।
नित रेल बस आर हवाई दुर्घटनासँ,
हजारक हजार ह्रास आबादीमे होइत अछि ।।
इकीसम सदी युग अछि कम्प्यूटर केर,
नव-नव तकनीक विकसित होइत अछि ।
देश के सुखी आर समृद्ध बनेबा लेल,
वैज्ञानिक विभिन्न उपाय करइत अछि ।।
जन्म लेबासँ पूर्व गर्भाशयमे,
अल्ट्रासाउण्डसँ शिशु के देखैत अछि ।
बेटी देखि तत्परतासँ अति आतुरतासँ,
गर्भपात क्षणमे कराओल जाइत अछि ।।
इकीसम सदी होएत बेटीविहीन सदी,
दाम्पत्य जीवनक नहि आवश्यकता पड़तइ ।
सुखी समृद्ध होएत भारत देश हमर,
दिन-दिन आबादी तँ घटइत रहतइ ।।
दहेज उन्मूलन हेतु देशक भीतर,
आब नहि नव-नव कानून बनतइ ।
दहेजक ज्वालामे सासुक हाथे,
आब नहि देशक बेटी जरतइ ।।

(आ.भा.सँ प्रसारित)

(विधात्रीसँ)

(११७)

कोना कहू देशक नेता अहाँकेँ

कोना कहू दीन-हीन गरीब किसान केर,
नेता अहाँकेँ मन नहि मानैत अछि ।
विकसित भेल अछि देश भ्रष्टाचारसँ,
से देखि नित हमर मन कानैत अछि ।।
नित-नव नारा देलहुँ स्वदेशी बनेबा लेल,
कुर्सी पकड़ितहि सब बिसरइत छी ।
छोट-मोट कुटीर उद्योग भेल धराशायी,
बहुराष्ट्रीयसँ हाथ मिलबइत छी ।।
नव-नव नारा देलहुँ गरीबी मेटेबा लेल,
करोड़क करोड़ हाथ बेकार करइत छी ।
कल-कारखानासँ कार्यालय धरि,
कम्प्यूटरे पर दृष्टि फेरइत छी ।।
आश करइत छलहुँ परिवर्तनसँ,
किछु तँ गरीबोक दिन फिरतइ ।
सुरसा के मुँह जकाँ बढ़ि रहलइ महगी,
आब गरीब तँ अन्ने बिनु मरतइ ।।
द्वितीयाक चान आ कि डुमरीक फूल कहू,
ओहो तँ मासे-मास सालमे देखइत छी ।
अहाँ केर दर्शन पाँच साल बाद होयत,
के आबि पुछतइ कोना क' जिबइत छी ।।
जकरेसँ वोट पओलहुँ, ओकरे बिसरि गेलहुँ,
ई छवि कोन पोथीमे पढ़इत छी ।।

खोपड़ी गरीबक जारि-जारि कए,
पैघ-पैघ सेठक पेट भरइत छी ॥
देखि दशा दीन-हीन-दुखिया जन केर,
आत्मग्लानिसँ मन कानैत अछि ।
कोना कहू देशक नेता अहाँकेँ,
कनियो हमर नहि मन मानैत अछि ॥

(विधात्रीसँ)

(११८)

वोट

लोकतंत्रमे नागरिक के अछि वोटक अधिकार ।
ओकरहि द्वारा चुनि सकथि, अपना मनक सरकार ॥
मुदा आइ वोटक खातिर जन-जन केर खून बहैत अछि ।
गुण्डासँ लुटबाय वोट अधिकारक हनन करैत अछि ॥
वोटक लेल बहाबए टाका पोसि रहल गुण्डाकेँ अछि ।
टाका आर गुण्डाकेँ बले राजनीतिज्ञ कहाबैत अछि ॥
जँ जियैक इच्छा हो किछु दिन अहाँ के एहि धरती पर ।
जकरा हाथमे लाठी देखू मोहर मारू ओकरहि पर ॥
युग बदलल परिभाषा बदलल, बदलि गेल सब मंत्र ।
भ्रष्टाचार-आतंकवाद अछि, राजनीतिज्ञ केर तंत्र ॥
केओ जाति केओ धर्मक नामे माङि रहल अछि वोट ।
मतदाता के डरा सकत से पाबि सकै अछि वोट ॥
पाँच साल पर एक दिन जनता केर बीच अबै अछि ।
हाथ जोड़ि नतमस्तक भय, निज मनक व्यथा कहै अछि ।
जनता सोझ-सपाट विवेकी कुटिल चालि नहि बूझए ।
नहि चाहितहुँ मतदान करए पुनि पाँच साल तक झूलए ।

(विधात्रीसँ)

(११९)

फेकनी माए आब करतै की ?

घरे-घरे टहल करैत छल, नित दिन साँझ आ भोर ।
अपन दशा पर कानि रहल छल, आँखिमे भरने नोर ॥
जतए जाय दुतकारे पाबए, नीक वचन नहि सुनए ।
कूकुरसँ बदतर जीवन छल, अपन कर्म पर कानए ॥
अइँठ-कुइँठ पर गुजर करैत छल, इएह जीवन चर्या बनि गेल ।
फेकनी माए काल्हि की छल, आ आइ आबि क' की भ' गेल ॥
फेकनीक बाप जिबै छल जाधरि, सुखसँ दिनो कटैत छल ।
कष्टक लेश मात्र नहि देखलक, जखन जे मोन करैत छल ॥
घरसँ बाहर होइतहि लागै, जेना कोनो महारानी छल ।
भरल-पुरल देह पर सुन्दर आभूषण केर घानी छल ॥
गोल कपोल कमल मुखमंडल, नयन मृगी सन लागै छल ।
गजगामिनी सन चालि चलैत छल, वाणी मधुर सुनाबै छल ॥
पास-पड़ोसिन सबसँ सदिखन, मधुर वचन बाजैत छल ।
बेटी छल एकटा फेकनी, नाम ओकर रखने छल ॥
दुनू जीव जानोसँ बेसी, फेकनी के मानैत छल ।
सौंसे घर के माथ उठबितए, जँ फेकनी कानैत छल ॥
दैवयोगसँ एक दिन, फेकनीकेँ लगलइ बोखार ।
कतबहु कैलक इलाज मुदा, सब भ' गेलै बेकार ॥
कतेक बजाओल ओझा-गुणी, किछुओ फर्क ने परलइ ।
टोना-टोटका किछु नहि सुनलक, सबटा व्यर्थहि गेलइ ॥
सून कएलक घर-आङन फेकनी, सून केलक निज मायक कोर ।
सहि नहि सकल संताप बाप सेहो, ओकरहु लागि गेल बघज्वर ॥
एकसँ एक वैद्य बजबाओल, कैञ्चा पानि जकाँ बहि गेल ।
घर-घराड़ी सबटा बिकि गेल, फेकनीक बाप ठीक नहि भेल ॥

विधवा बनल माए फेकनी के, फेकनी माए आब करतइ की ?
घर-द्वारि किछुओ नहि रहलइ, जीवनसँ मुँह मोड़तइ की ?
कहुना-कहुना दिन कटैत छल, भेलइ देश स्वराज ।
नेता केर कृपासँ बनलइ, गामे-गाम पंचायती राज ।।
फेकनी माए बनि गेलइ मुखिया, गामक कार्य करैत अछि ।
सबकेँ बुझि अपन नेना ओ सबहक ध्यान रखैत अछि ।।
बिसरि गेल वैधव्य अपन ओ बिसरि गेल फेकनी केर रूप ।
सौंसे गामक नेनामे, देखैत अछि फेकनी केर स्वरूप ।।
ठाम-ठाम विद्यालय खूजल, गृह उद्योगो चालू भेल ।
केओ नहि रहल बेकार गाममे जन-जन प्रमुदित-हर्षित भेल ।।
जाति-पाति आ ऊँच-नीच केर, भाव केओ नहि राखए ।
जाहिसँ ककरहु कष्ट ने होअय, वाणी सदिखन भाषए ।
उमड़ि रहल अछि धार प्रेमकेँ एहिसँ सुन्नर हेतइ की ।
राम राज्य अछि घुरा क' अनने, फेकनी माए आब करतइ की ?

(विधात्रीसँ)

(१२०)

ओकर की दोष

अहीँ कहू, ओकर की दोष ।
बेटा के अहाँ ब्याह करौलियै, अपनहि जा क' कनियाँ देखलियै ।
घुमा-फिरा उनटा-पुनटा क', जेना मन भेल तहिना केलियै ।
तैओ नहि मनमे संतोष ।। ० ।।
बेटा के बेटा नहि बुझलहुँ, हाट चढ़ा बेचि क' अयलहुँ ।
जकरहि खुट्टा बान्हल जयतै, नैतिकता ओकरहि ने कहौतै ।।
उचित गपसँ लागत रोख ।। ० ।।

बड़द बेचि कोना जोतब खेत, दोसर पर की करब उमेद ।
यावत् छल अहाँ केर जोतलहुँ, आब जकर छै तकरहि जोत ।
टाका पर करिऔ संतोष ।। ० ।।
कनियाँ चाही बी.ए. पास, कोना क' करतै भानस-भात ।
अपनहिसँ झरकाबू हाथ, नहि तँ करू दिन-राति उपास ।
नहि भेटत भोजन भरि पोख ।। ० ।।
अहूँ एक दिन सासुर अयलहुँ, नैहर केर सब गप्प बिसरलहुँ ।
सासुरक सब अनोन-बिसनोन, कोना बिसरलहुँ पाडू मोन ।
आबहुँ राखू सबकेर तोष ।। ० ।।
बेटा फँसल भँवरमे देखू, एम्हर ममता ओम्हर फर्ज ।
ककरहु छोड़ब उचित ने बुझए, कोना सधाओत माँ केर कर्ज ।
कनिओ दिऔ ने बोल-भरोस ।। ० ।।
बेटी अहाँ केर चलए उतान, ककरहु गपक देत ने ध्यान ।
चालि-चलन नहि देखै छी, दै छी मंद-मंद मुस्कान ।
बाट-बटोही होइछ बेहोश ।। ० ।।
ओहिना ओकरहु बेटी बुझिऔ, छोट-छीन गलती नहि देखिऔ ।
गलती परमे झाँपन द' क' स्नेहसँ ओकरा हृदय लगबिऔ ।
करू ने मनमे कनिओ रोष ।। ० ।।
अहूँ सब दिन कनिञे चिन्हलहुँ, पर-परिवार ताख पर धयलहुँ ।
माय-बाप दिन कोना कटलकै, संतति लय की की नहि केलकै ।
ई सबटा अछि दिनक दोष ।। ० ।।

(१२१)

बाड़ीक पटुआ तीत

सखि हे, ई जुनि कहू ककरहु से होइत अछि बाड़ीक पटुआ तीत ।
प्रीतम गेल परदेश जखनसँ, लागइ किछु नहि नीक ।।
मोन पड़ैत अछि हुनक सुरतिया, चैन ने कौखन, नीन ने रतिया ।
हमरे सिहाक' गाबै कोइली, साँझे-भोरे गीत ।। ० ।।

ककरा कहबै मनक बतिया, के बूझत मोर प्रीत-पीरितिया ।
केहेन कठोर बनल छै साजन, हमरहुँ मन के मीत ।। ० ।।
यावत् संग छलहुँ नहि बुझलहुँ, कोना बीतल दिन किछु नहि जनलहुँ ।
आँखिक ओझल होइतहि लागै, ई दुनियाँ विपरीत ।। ० ।।
वर्ष दिनसँ सुधि नहि पाओल, कुशल-क्षेम पतिओ नहि आयल ।
केहेन अकान बनल नहि बूझै, विरहिन के रस-रीति ।। ० ।।
उमड़ि-घुमड़ि बदरा नभ छायल, बिजुरि चमकि कयलक चित घायल ।
एकसरि रैनि भयावन लागै, 'नन्द' कतेक व्यथित ।। ० ।।

(१२२)

मानवताक संदेश

करिऔ सद्व्यवहार, औ मानव मानवतासँ ।
सबकेँ करु ने दुलार, मेटिक' सब कटुताकेँ ।।
एक पिता केर छी हम बालक, सब अपना कर्त्तव्यक पालक ।
सबकेँ अलग विचार, छोड़ू संकीर्णताकेँ ।। ० ।।
जे जे रोपबै से से कटबै, रोपि बबूर आम कोना पयबै ।
करिऔ कनेक विचार, रोपि अंकुर ममताकेँ ।। ० ।।
सगरो लुटो-पाट मचल अछि, भाइक शोणित लेल भाइ बेकल अछि ।
कतेक करब प्रतिकार, छोड़ू दानवताकेँ ।। ० ।।
सब केओ दोसराक दोष देखै अछि, अपन दोष ककरहु ने लखै अछि ।
चानन गाछ समान, बाँटु शीतलताकेँ ।। ० ।।
सब दिन नारी पूज्य रहल अछि, मुदा आइ ओ भाव कत' अछि ।
नित होइछ दुर्व्यवहार, त्यागू ने पशुताकेँ ।। ० ।।
जाति-धर्म-सम्प्रदाय के छोड़ू, सबसँ भ्रातृवत् नाता जोड़ू ।
जोड़ू प्रेमक तार, छोड़ू हठधर्मिताकेँ ।।
अजगुत देखल रातिमे सपना, बिनु मंदिर-मस्जिद गिरिजा के ।
बहि गेल प्रेमक धार, उमरल रस सरिताकेँ ।। ० ।।

सब केओ अयलै, सब केओ जेतै, विधिक विधान तोड़ि नहि पओतै ।
रहि जायत कीर्तिक सार, 'नन्द' हरु निर्ममताकेँ ।। ० ।।

(१२३)

गीत

जो रे कागा उचकि-उचकि क', जो रे पुरबा सिहकि-सिहकि क' ।
लाबू जा संदेश कखन धरि, अओता हमरहुँ वर ।
कोना जायब हम पियाकेँ सोझाँ, होइत अछि हमरा डर ।।
की भेल हमरा किछु नहि बूझी, भीतरसँ लागै गुदगुदी ।
हमरहि देखि सहेली सब मिलि क' रहलै अछि काना-फूसी ।
लाजे मुड़ी नीचाँ गड़ि गेल, ससरि खसल आँचर ।।
आँचरसँ नहि झाँपल जाइछ, युगल उरोज अनार ।
थर-थर काँपि रहल छी लाजे, देहो बेसम्हार ।
पर-पड़ोसी मटकी मारै, साँझ-भोर दुपहर ।।
करिया झुम्मरि खेल' गेलियै, के की बजलै किछु ने जनलियै ।
सब बनल छै लाल बुझक्करि, हमहीँ एक अकान जे छलियै ।
जँ नहि आओता पिया निर्मोहिया, मरबै खाय जहर ।।

(१२४)

पावस गीत

बदरिया रिमझिम बरिसैए ।
चहु दिश नभ घनघोर घटा बीच, बिजुरी चमकैए ।।
कारी-कारी बादर अयलै, सब जन केर मन प्रमुदित भेलै ।
अबितहि सावन सर्व सुहावन, कजरी गाबैए ।।
दादुर मोर पपीहा बाजै, पिउ-पिउ करइत सोर मचाबै ।
सब केओ मस्त मगन वन-उपवन, मोरबा नाचैए ।।

विरहिन जोहै बाट पिया केर, ककरा कहतै हाल हिया केर ।
कोना क' कटतै पिया बिनु रतिया, रहि-रहि कुहुकैए ॥

(१२५)

गीत

तिरछी नजरि ने देखु जुनि नयन वाण मारू,
छी प्रेम के पियासल अहाँ प्रेम दीप बारू ॥
देखने होएत अहाँकेँ हमरा सनक कतेको,
पागल भेलहुँ हमहिटा कने प्रेमसँ सम्हारू ॥
गदरायल अछि जवानी मरड़ाइत अछि भौरा,
मुँहोँ कमल कली सन, कने घोघ के उघारू ॥
मुँह देखितहि अहाँ के चानो लजाय जेतइ,
बिहुँसी तँ चमकए बिजुरी मुस्काय क' ने मारू ॥
सिहकए बसात पुरबा आँचर उड़ए गगनमे,
सूतल मदन के जगबए आँचर अपन सम्हारू ॥

(विधात्रीसँ)

(१२६)

विरह

कए रहल किलोल अछि भोरहिसँ, करिया कागा देखितहि हमरा ।
परदेशी प्रियतम हमर एता, से सोह दियाबैत अछि हमरा ॥
चिट्ठी लिखलन्हि हम झट आयब, सेहो बितना भेल मास दिन ।
मन एकोरत्ती नहि लगैत अछि, कहुना काटै छी राति दिन ।
दौड़ैत छी सतत केबाड़हि लग, कौखन ककरहु आहट के सुनि ।
नहि देखि अहाँके रहि-रहिक', हहरैत रहै अछि हमरहु दिल ।
जँ नहि आएब तँ पतियोसँ, आशान्वित पुनि करियौ हमरा ॥ परदेशी...॥

दुधिया सन देहो झामरि भेल, तन दूबर पीन पयोधरि सन ।
मुँह केर लाली भेलइ मलीन, मुरझायल टूटल कलियो सन ।
सुखए नहि नयन अश्रु कौखन, कमला केर धार बहए क्षण-क्षण ।
पीड़ित मन देखितहि हँसए भ्रमर, पपीहाक बोल बेधै तन-मन ।
कोना क' चित्त रहत स्थिर, से पतिया पठाबू झट हमरा ॥ परदेशी... ॥
सब केर प्रियतम घर घुरि आयल, अहाँ कोन कारणे बिलमि गेलहुँ ।
की हमरासँ अपराध भेल, अहाँ हमर सेज किए सून केलहुँ ।
टुटि गेल धैर्य केर तार-तार, टुटल आशा केर बाँध सगर ।
ने जिबैत छी ने मरैत छी, बिचहिमे अटकल प्राण हमर ।
दरसन होएत की नहि होएत, सपनहुमे आबि कहू हमरा ॥ परदेशी...॥

(विधात्रीसँ)

(१२७)

स्वदेश वंदना

हमर भारत स्वर्गहुँसँ सुन्नर लगैछ ।
वेश-भूषा अनेक, धर्म-मजहब कतेक, जेना रंग-बिरही फूलोसँ माला गुंथैछ ॥ ० ॥
जकरा उत्तरमे ठाढ़ हिमालय पहाड़ । आर दक्षिणमे हिन्द महासागर केर धार ।
जकरा पुरुब मे बंगालक खाढ़ी बहैछ । आर पश्चिममे अरब सागर लहरैछ ।
जत' सदिखन प्रेमक सरिता बहैछ ॥ ० ॥
राम कृष्णक ई भूमि, पीर पैगम्बरक, आर ईसा-मसीह, गुरु गोविन्द सिंहक ।
एत' गीता, कुरान, गुरु, बाइबिल के मान, एत' पूजल जाइछ नित सुरुज आ चान ।
एत' सबकेर हृदयमे तिरंगा फहरैछ ॥ ० ॥
केओ बंगला, भोजपुरी, केओ अंगिका, केओ मगही आ मैथिली केओ बज्जिका ।
केओ तमिल, मराठी केओ तेलगू, केओ मलयालम, हिन्दी केओ डूंगरे ।
'नन्द' उड़िया, पंजाबी आ कन्नर बजैछ ॥ ० ॥

(१२८)

सहनशील

अछि सहनशील के हमरा सन ।।
हमरहि घरमे, हमरहि परमे, अछि लागल प्रतिबंध ।
जीवन काटि रहल परतंत्रक, होइतहुँ आइ स्वतंत्र ।।
गाँधी कहलनि दुनू गाल पर चाट खाउ हरदम ।
लड़बा केर सामर्थ ने अछि, तेँ सहनशील बनि गेलहुँ हम ।।
सब दिन कयल गुलामी दोसरक, कोना क' छाती तानब हम ।
घरहुमे सब दिन सुनै छी, बौआ माय केर कटु बचन ।।
हिन्द देशमे हिन्दी केर, भ' रहल दुर्दशा भारी छै ।
सब इंगलिश दिश दौड़ि रहल छै, एकर ने करै पुछारी छै ।।
जँ बाजब तँ दंगा होयत, सहब तँ देशो शांत रहत ।
तेँ हम सब किछु सहि जाइत छी, एहिसँ देशक मान बढ़त ।।
वोटक राजनीति क' जेतै, देशक चीर हरण ।
रामक भूमि पर रामहिकेँ भेटि ने रहल शरण ।।
सेतु समुद्रम् केर आरिमे, देशकेँ सीधा बेचि रहल ।
बुढ़िया मायकेँ केओ ने देखए, सांस्कृतिक भ' रहल पतन ।।
एहेन गप नहि हम छी कायर, सुतल हमर जवानी यौ ।
ठंढा नहि भेल जोश शोणितक, आर ने भेल अछि पानी यौ ।।
मुदा जे आदत सहबा केर अछि, तेँ सधने छी दम ।
मुँहमे राम बगलमे छूड़ी, बूझब 'नन्द' कखन ।।

(१२९)

मोजर

कहू कतेक ककर अछि मोजर ।।
यावत् टाका हाथमे देबनि, तावत् सबटा नीके रहतै ।
हुनकहि रुचिक गप्प जँ कहबनि, सबटा काज ढंगसँ होयतै ।
बिनु पुछने किछु क' ने सकैत छी, जँ कयलहुँ तँ सब गुड़-गोबर ।।
राति-दिन किछुओ नहि बुझलहुँ, बड़द जकाँ जोतल रहि गेलहुँ ।
जकरहि लेल उपार्जन कयलहुँ, ओकरहि गप बिष सन सुनलहुँ ।
माया-मोहकेँ मारू मुड़ी, खटैत-खटैत तन भ' गेल दूबर ।।
शेर जकाँ बाहर घुमै छी, घरमे अबितहि भेलहुँ बिलाइ ।
कनियाँ, बेटा सब किछु करतै, चलत अहाँक नहि कोनो उपाय ।
एक नाक कटि गेल कतेक बेर, पीठो पड़ल गुलामीक मोहर ।।
घटल जखन पुरुषारथ तैखन, चुपचाप सब केर गप सुनिऔ ।
अनुचित-उचित ने किछुओ बाजू, टक-टक सभटा देखैत रहिऔ ।
कष्ट होयत जँ किछु बाजब तँ, 'नन्द' धरू सबटा पित्त उदर ।।

(१३०)

जुनि बदनाम करू यौ

खादी देशक शान, जुनि बदनाम करू यौ ।
सत्य अहिंसाक प्राण, एकर सम्मान करू यौ ।।
गाँधी नेहरू इएह पहिरि क', सत्य अहिंसा केर पथ चलि क' ।
अंग्रेजी शासकसँ छीनल, भारत ललित ललाम ।।
गाँधी केर आदर्श चलैत छी, हिंसक संग गठजोड़ करैत छी ।
जे निर्दोषक खून बहाबैछ, नारीक करए अपमान ।।

ऊपरसँ छी खद्धरधारी, भीतरक मन किएक अछि कारी ।
अहिंसाक जँ थिकहुँ पुजारी, हिंसाके दिऔ ने लगाम ।।
एकरा पहिरि झूठ नहि बजिऔ, एकरा छवि केर रक्षा करिऔ ।
एकरहि तुलसीक माला बुझिऔ, डेग ने धरू कुठाम ।।

(१३१)

पहिरू खादी यौ

देशक मान-सम्मान बढ़ाबू, पहिरू खादी यौ ।
कीनू खादी, बेचू खादी, पहिरू खादी यौ ।।
खादी पहिरि स्वदेशी बनिऔ, सबठाँ देशक मान बढ़बिऔ ।
एकरहिसँ आजादी भेटल, एकरहि सब केओ माथ चढ़बिऔ ।
बेरोजगारी दूर करैक लेल, काटू खादी यौ ।।
खादी पहिरि सब केओ लगतै, भारत केर संतान।
ऊँच-नीच आ अमीर-गरीबक, नहि रहतै पहचान ।
कारी-गोर एके रंग लगतै, ओढ़ू खादी यौ ।।
खादी वस्त्रसँ भारत माकेँ, नित करिऔ शृंगार ।
सत्य-अहिंसा केर प्रतीकसँ भरिऔ घर-दुआर ।
एकरा पहिरि ने करिऔ कौखन, दगाबाजी यौ ।।

(१३२)

जाड़

वर्षा बीतल, तन मन शीतल, सजि-धजि अयलै जाड़ ।
सबकेँ काँपि रहल छै हाड़ ।।
नेना बुढ़ जुआन कोना क', काटत राति पहाड़ ।।
घुरना घूर घेरि छै बैसल, बुढ़िया छै बोरसि लग दुबकल ।
केओ स्वेटर सीरक ओढ़ने, केओ छै गाँती के बन्हने ।
नार-पुआरक देने सेजाओट, कयने बंद केबाड़ ।।

चिड़इ-चुनमुनी संच-मंच भ', आँखि-पाँखि किछुओ नहि खोलै ।
खोँता सँ ने बाहर ताकए, देखि प्रकोप मनहि मन डोलै ।
देखि कुहेस सब उबिआयल, लागइ दिन अन्हार ।।
जल पोखरिक छै कन-कन लोह, क' रहलै पछबा विद्रोह ।
गरीब-गुरबा ठिठुरि रहल छै, रौद लेल सब बिलखि रहल छै ।
'नन्द' अलोपित सूर्य शिखरसँ, जीवन तारो-तार ।।

(१३३)

नव वर्ष

स्वागत करू, स्वागत करू, नव वर्ष केर स्वागत करू ।
मंगलमयी नव वर्ष हो, मनमे एहेन आशा भरू ।।
नव वर्ष लाओत खुशी शान्ति, समृद्धि केर संदेश यौ ।
नव वर्ष लाओत प्रेम-स्नेह, ने रहत ककरहुँ क्लेश यौ ।
नव वर्ष लाओत भाइचारा, काज सब हिलि-मिलि करू ।।
रहतइ ने बेइमानी कतहु, सब सत्य केर पथ पर चलत ।
झंझट ने मजहब केर हेतइ, एक दोसराक लेल मरत ।
सर्वत्र समरसताक झंडा, नभमे फहरायल करू ।।
चलतै ने कोनो चालि जे अछि, शत्रु हमरा देशकेँ ।
सब मिलि लड़ब ओकरासँ जे, करइछ अहित एहि देशकेँ ।
तोड़ब ओकर शेखीकेँ सब, संकल्प ई मनमे करू ।।
आतंक भ्रष्टाचार भागत, 'नन्द' हमरा देशसँ ।
सब ठाम नारी पूज्य होयतीह, पुनः हमरा देशमे ।
जनमए ने दुःशासन केओ, भगवानसँ विनती करू ।।

(१३४)

मधुमय फागुन

रंग बरसे भीजे चुनर, मधुमय फागुनमे ।।
गोकुल केर छयला रंग-रसिया, ग्वाल-बाल, गोपी मन बसिया ।
बरसाने केर नारि ।। मधुमय....
रतिपति छथि स्वागत लेल आतुर, साँझ-भोर अधरतिओं व्याकुल ।
कोइली आमक डारि ।। मधुमय....
ग्वाल-गोपिका भरि पिचकारी, नाचए गाबए दय-दय तारी ।
उड़बए रंग गुलाल ।। मधुमय....
बेली आर चमेली फूलल, सरिसो पर भँवरा अछि झूलल ।
फूलल फुल कचनार ।। मधुमय....
बाल युवा केर हाल ने पुछू, फागुमे सब बौरायल बुझू ।
बुढ़बो भेलै उलार ।। मधुमय....

(१३५)

शहीदकेँ नमन

जे त्यागल प्राण देशक लेल, नमन हुनका करै छी यौ ।
ओ माता धन्य जिनकर दूधकेँ अहाँ लाज रखलहुँ यौ ।।
कत'सँ आयल आतंकी, शरण ओकरा के दै अछि यौ ।
कहू ई कोन मजहब थीक, एहेन शिक्षा के दै अछि यौ ।।
स्वभावो छोड़ि नहि पाबए, भुजंगो चाननक तरु चढ़ि ।
पड़ोसी धर्म नहि बुझय, ओकर संग चेति रहिऔ यौ ।।
उपासक छी अहिंसा सत्य केर, कायर ने बुझू यौ ।
जरूरत आब कलमक नहि, कृपाणक धार देखू यौ ।।
करू संकल्प सब केओ मिलि, एकर जा अंत नहि करबै ।
ने ता धरि चैनसँ रहबै, ने सुख केर निन्न सुतबै यौ ।।

(१३६)

महान मैथिली

मिथिलाक लेल सब सँ छथि महान मैथिली ।
लहरैत खेत-खेत ओ खरिहान मैथिली ।।
घर-घरमे सुख केर सरिता बहैत अछि । डारि बैसि कीर जत' गीता पढ़ैत अछि ।
घोघ तरसँ दै अछि मुस्कान मैथिली ।।
पोखरिमे चतरल पातो मखानक । बहिकिरनीक मुँह खिल्ली पानक ।
पनिघट पर साँझ-भोर झूमए मैथिली ।।
लंका जा' क' सिया सुधि लेलनि । अजर-अमर गुणनिधि सुत भेलनि ।
हनुमंत के देलनि वरदान मैथिली ।।
जनमल जत' छै अयाची ओ मंडन । कविवर विद्यापति केर पुण्य स्थल ।।
रघुकुल केर गरिमा बनलि मैथिली ।।
दुनियाँक लेल सबसँ छथि महान मैथिली ।।

(१३७)

फगुआ

भौजी कयलनि केहेन कमाल ।
माथा चढ़ि नाचै छनि फगुआ, सगरो केलनि बबाल ।।
ऊँच-नीच किछुओ नहि देखथि, भैसुर-भावहु किछु नहि बूझथि ।
जे पकड़ायल ओकरहि कयलनि, सगरो लाले लाल ।।
धानी रंग पहिरने साड़ी, चुनरीक गोटेदार किनारी ।
रहि-रहि ससरि खसै छनि आँचर, हालो भेलनि बेहाल ।।
भागम-भागी दौड़ा-दौड़ी, दाँत निपोड़ि रहल तिनकौड़ी ।
सौंसे गाम भेल हरबिरड़ो, जेना आयल भूचाल ।।
साठिक भौजी लागथि पचीसी, पानोसँ छनि रंगल बतीसी ।
भौजीक आजुक रूप देखिक', 'नन्द'हु भेल नेहाल ।।

मुक्तक

1.

देखिक' आइ केर स्थिति, लगै अछि ओएह बढ़ियाँ छल ।
ईहो तँ आगिमे जरबैछ, कटु होइतहुँ ओ शीतल छल ।।
लुटि रहल अछि आइ सब केओ, दुनू हाथेँ देशकेँ ।
रक्षक जखन बनल अछि भक्षक, बचा के पाओत देशकेँ ।।

2.

एकटा आबि विदेशी सब किछु, लुटि देश के लेने अछि ।
एक स्वदेशी ओहिसँ बेसी, दाग देह पर देने अछि ।।
कहबाक लेल आजाद थिकहुँ हम, सुविधा अछि की भेटि रहल ।
लाल टोप तँ भागि पड़ायल, उजरा टोपी टीपि रहल ।।

3.

अपन देश शासन अछि अपने, तैओ नहि सुख-चैन भेटैछ ।
केओ ने अछि भय मुक्त एहिठाँ, सबकेर पेटक पानि डोलैछ ।
नारी नहि एहि ठाम सुरक्षित, नित-नित हुनकर शोषण होइछ ।
तैओ ओ उन्मुक्त होयबा लेल, संसदमे किच-किच करबैछ ।।

4.

ब्रह्मासँ वरदान भेटल छनि, कहिओ हिनकर भरत ने पेट ।
साठि हजार करोड़ गटकला, पेट भेलनि गोनू केर ठेक ।।
भ्रष्टाचार समायल नस-नस, कतेक लगायब डाइलीसिस ।
डेग-डेग पर ठाढ़ उचक्का, काटए कर्मनिष्ठ केर शीश ।।

5.

सब दोसरकेँ झूट्ठा बनबै, के अछि सत्य डगर केर चान ।
मौका पबितहि सब बदलै अछि, अपन रंग गिरगिटक समान ।।

साँझ-झूठ केर एहि दल-दलसँ, जल्दी भागू पकड़ू डोर ।
एहि बगियामे सबटा उल्लू, के अछि साधू के अछि चोर ।।

6.

लुटलक आबि विदेशी एकरा, देशक लोक तँ सेहो लुटैछ ।
अपना देशक धन चोरा क', दोसरा देशक बैंक भरैछ ।।
ककरा पर विश्वास करू हम, के अछि एहिठाँ दूधक धोल ।
चोर-चोर मसिऔत बनल अछि, बिनु टाका बाजत नहि बोल ।।

7.

अहुरिया काटि क' रहलहुँ, अहाँ केर मुँह देखबा लेल ।
किएक बिजुरी खसाबै छी, हमर अहाँ प्राण लेबा लेल ।।
अहाँ चाही वा नहि चाही, मुदा हम खूब चाहैत छी ।
किएक छी भेल डुमरीक फूल, नित दिन बाट जोहैत छी ।।

8.

कमल केर पंखुरी बीचहि, भ्रमर केर प्राण अछि अटकल ।
परागक पान करबाक लेल, ओ अछि दम साधि क' सुटकल ।।
निहारै छी नयन तँ अहाँ सन के, अहीँ एकटा छी ।
पिआसे मरि रहल छी हम, सुधा-रस घट अहीँ टा छी ।।

9.

पकड़ाइत तँ सब केओ देखलक, छुटैत केओ ने देखल ।
घूस लैत जे पकड़ायल अछि, घूसे द' क' छूटल ।।
आइ जरूरत अछि निगरानीक, 'निगरानी' केर ऊपर ।
कतेक भार सरकार उठाओत, जनता जँ अछि सूतल ।।

10.

बिनु माछक नहि जितिया पावनि, तैपर मरुआक रोटी ।
मिथिला केर जे सधवा नारी, बिनु एकरहि नहि खयती ।।

जँ नहि खायब माछ तँ बाड़ी, रोपब किएक जमीरी ।
मिथिला माछ, मखान, पान केर, सबठाँ लागल जखीरी ।।

11.

सूतलकेँ जगेबाक चाही, खसलकेँ उठेबाक चाही ।
मातृभाषा जननी थीक, तेँ सब भाषासँ प्रेम राखक चाही ।।

12.

सुन्दरता देखबाक लेल अछि, ओकरा छुबिऔ नहि ।
समुद्रमे गोता लगाबू, ओहिमे डुबिऔ नहि ।।
बाधा रूपी जंजीर तोड़ि क', सबकेँ ऊपर उठक चाही ।
शिक्षा ई आगिक धुआँसँ, सब जनकेँ लेबाक चाही ।।

13.

जे नहि मानए जाति-धर्म, ओ सबकेँ धोखा दैछ ।
के अछि एहेन एहि धरती पर, जे ने जाति मानैछ ।।
कोनो जाति हो, कोनो धर्म हो, मुदा जे सबसँ ऊपर ।
ओ थिक मानव धर्म जकर सब, आदर करू मान्यवर ।।

14.

विद्या धन सन धन नहि, कौखन नहि घटैछ ।
दिन-दिन बाढ़ए सय गुणा, बिलहबसँ ओ बढ़ैछ ।।
जे पूजय विद्वानकेँ, ओ अछि चतुर सुजान ।
करिआ आखर केर बिना, पाओत कोना केओ ग्यान ।।

15.

कतेक दिनसँ व्यथा मन केर, मनहि अपन दबौने छी ।
सुनत के मन केर गप हमर ई, तेँ ककरहु ने सुनौने छी ।।
व्यथासँ देखि क' आहत, किएक मुस्की बिखेरै छी ।
हमर दग्धल हृदय पर किएक, एहिखन नोन घोरै छी ।।

16.

एक मुस्कानसँ बात बनि जाइत छैक,
एक मुस्कानसँ बात बिगड़ि जाइत छैक ।
हमरा तँ अहाँक एहेन मुस्कान चाही,
जाहिसँ बात बिगड़ैत-बिगड़ैत बनि जाइत छैक ।।

17.

सुन्दरता केर अर्थ थिक, सुन्दर हो कर्त्तव्य ।
मुख अमृत घट विष भरल, ओ सुन्दरता व्यर्थ ।।
जे शीतलता द' सकए, सुन्दरता सुखमूल ।
स्वाती जल बिनु पपीहरा, कोना रहत समतूल ।।

18.

घटा जँ आबए उमड़ि क', मुदा ओहिमे जल ने हो ।
तरु सघन पल्लवित पुष्पित, मुदा ओहिमे फल ने हो ।।
दामिनि दमकए मुदा जँ, वृष्टि केर आसार नहि ।
कामिनिक शृंगार की जँ, आँखिमे काजर ने हो ।।

19.

जिनका अयलासँ मंच पर शोभा बढ़ै अछि मंच केर ।
भाषणो मन मोहि लै अछि, हो जेना मुरलीक टेर ।।
ओ अतिथिवर आइ हमरा, बीच छथि आयल मुदा ।
कोन हम स्वागत करू, ओरिआन किछु नहि भेल अछि ।।

20.

जिनका लेल आश लगौने छी, बनि चातक पलक बिछौने छी ।
ओ आबि गेला हमरा आङन, हम धन्य भेलहुँ भेल तृप्ति नयन ।।
भेल आइ मनोरथ हमर पूर, नहि वाणीमे अछि मधु-मधुर ।
एहि सपनाकेँ साकार करू, आतिथ्य हमर स्वीकार करू ।।

21.

किएक दुविधामे जिबै छी, जीयब तँ शानसँ जीबू ।
पीअब जँ गरल वा अमृत, तँ ओकरहुँ मानसँ पीबू ।।
चलै छी जाहि बाटे, ओ भरल हो काँटसँ तैओ ।
बना ओहि बाटकेँ चिक्कन, पथिक ओहि बाट केर होइयौ ।।

22.

एक टाकामे भेटि रहल छल दूधक दस गिलास ।
दस टाका केर जलोसँ नहि, मेटा सकैत छी प्यास ।।
बीस रुपैयामे जत', भेटि रहल अछि नोन ।
भेल अलोपित सब किछु, जस विरहिन सुख-चैन ।।

23.

कका आइ बनल छथि मुसरी, काकी बनल बिलाइ ।
काका गिरथि सूखल रोटी, काकी चाटथि मलाइ ।।
कोनो विषय पर अन्तिम निर्णय, जँ काकी नहि लेती ।
सौंसे घरके माथ उठौने, भनभनाइत रहि जेती ।।

24.

ओ अयली देखि हुनकर मुँह, सबटा दुःख बिसरि गेलहुँ ।
मुदा गेली एना भ' क' तरपिते सब केओ रहि गेल ।।

25.

अहाँके देखि क' बरबस, हृदयमे टीस उठैत अछि ।
मुदा अछि डर ई मनमे, कि धड़कन बंद नहि भ' जाय ।।

26.

जकरामे साहस शौर्य भरल, अछि ऊपर चढ़बाक ।
ओकरा कौखन डर ने होइछ नीचाँमे खसबाक ।।

27.

नील गगनमे पक्षीक बिचरब के ओकरा सिखबैछ ।
स्वयं करै अछि निर्धारण, गन्तव्यक बाट तकैछ ।।

28.

जे केओ करत कोशिश, ओ हारि नहि सकै अछि ।
जे हारि गेल जीवनमे, ओ किछु क' नहि सकैत अछि ।।

29.

वाणीसँ मधु टपकि रहल अछि, कोकिल कंठ लजाबैत छथि ।
काँट भरल कर्मक पथ चलि क', फूलक सेज सजाबैत छथि ।।
केहनो विषम परिस्थितिमे, मुँह मलीन हुनकर नहि होइछ ।
हमर स्वागताध्यक्ष एहेन छथि, निर्झर स्नेह सुधा झहरैछ ।।

30.

भूषण तँ सब तरि भूषण छथि, संस्थाक आभूषण छथि ।
सासु ससुरक श्रवण कुमार, परिजन केर कुलभूषण छथि ।।

31.

जिअब दूभर लगै अछि एहिठाँ, आतंक पसरल अछि ।
कत' गेल भाइचारा, सब केओ कुंठासँ जकड़ल अछि ।।
केओ ककरहु ने मनक व्यथा, पुछबाक लेल उत्सुक अछि ।
मुदा निंदा करक लेल सब, सबकेर सतत प्रस्तुत अछि ।।

(१३९)

सरकारी बनाम प्राइवेट

सरकारी आफिसमे कतेक होइत अछि सोर ।
नित अफसर स्टाफमे होइत अछि भंडाफोड़ ।।
ओना अपन अधिकार लेल लड़ब ने अनुचित थीक ।
बिनु श्रम कयने बोइन ली, ई थिक कत'क रीति ।।

खूब लड़ू अधिकारक खातिर, संगहि किछु कर्त्तव्य करू ।
नहि तँ अपनहि टाङ पर, अपनहिसँ कुरहड़ि धरू ।।
जे अहाँक उपयोग करै अछि, देशक दुश्मन थीक ।
देशक संग डुबौत अहूँकेँ, करत ने ककरहु नीक ।।
सब किछु होयत निजीकरण, सब केर नौकरी चल जायत ।
धिया-पुता दिन-राति अन्न बिनु, बेलल्ला भ' जायत ।।
जँ पायब प्राइवेट नौकरी तँ, खटैत-खटैत मरि जायब ।
बड़द जकाँ बहिते रहि जायब, छुट्टी कोनो ने पायब ।।
निन्न उचाटल रहत कुकुर सन, राति-दिन सोचबैक ।
नहि होयत कल्याण मालिकक, नौकरी नहि बचतैक ।।
बोझ लादि देत बुझि क' गदहा, घोड़ा सन दौड़ाओत ।
सरपट दौड़ैत रहब बाट पर, घरक सुधि नहि आओत ।।
धिया-पुता के ओहिना देखब, जेना कि डुमरीक फूल ।
कनियाँ रहती पलक बिछौने, स्वाती जल समतूल ।।
बिसरब सबटा गुण मनुक्ख केर, डाक्टर सेहो ने भेटत ।
अहाँक सबटा दुःख एकटा, भेटनरी डाक्टर मेटत ।।
जागू हे मजदूर करू किछु, समयसँ पहिने जागू ।
अधिकारक लेल सबसँ पहिने, किछु कर्त्तव्य निबाहू ।।
झुका दिअ' माथा सामंतक, अपना कर्मक बल पर ।
खूब लड़ू निज अधिकारक लेल, चलैत कर्म केर पथ पर ।।
एहिसँ देशक गरिमा बढ़तै, बनल रहत देशक समप्रभुता ।
आओत ने कोनो आँच देश पर, अचल रहत निज जन केर सत्ता ।।
झुकत ने कौखन गरदनि ककरहु, सोझा हमरा देशक ।
पूर्ण करू सपना जे देखल, रामराज्य अभिषेकक ।।

प्रतिष्ठान सरकारी ढहतै, बढ़त निजी उद्योग ।
रोकि ने सकब सामंतवादकेँ, कतबहु करब विरोध ।।
मजदूरक नहि रहत प्रतिष्ठा, बनिक' रहब गुलाम ।
हिरण जकाँ दौड़ैत रहि जायब, 'नन्द' शहर आ गाम ।।

(१४०)

एहेन परिवार नहि देखल

छलइ जाधरि दोसर केर प्राण, संकटमे ने किछु बजलहुँ ।
पड़ल जँ अपना पर मे तँ, एहेन आचार नहि देखल ।।
बनल छी प्रतिनिधि जन केर करब, मनमानी नहि छोड़लहुँ ।
पड़ल जँ चोट लोहा केर, एहेन व्यवहार नहि देखल ।।
कफन जे बाँधि बाहर भेल, ओकर जँ बाट नहि रोकल ।
करत घायल कतेको के, एहेन खुँखार नहि देखल ।।
प्रभु घर देर छै अन्हेर नहि, ई आश मन राखू ।
जे रोपल सैह काटब हम, एहेन व्यापार नहि देखल ।।
खतम भ' जायत सब सत्ता, जँ विग्रह नारि संग कयलहुँ ।
कत' गेल कंस, रावण, कौरवक परिवार नहि देखल ।।
डुबाबै स्वयं नैया के, एहेन नाविक ने अछि देखल ।
जलक जे वेग नहि रोकए, एहेन पतवार नहि देखल ।।
मेटत के देश केर संकट, जखन 'नन्द' लिप्त भ' रहलहुँ ।
अनाचारी, दुराचारी, एहेन परिवार नहि देखल ।।

(१४१)

बूढ़ा चलला पढ़ै लए

साक्षरता अभियान देखि क' महामंत्रसँ जुरै लए ।
ल' स्कूलक बैग पीठ पर बूढ़ा चलला पढ़ै लए ।।

जिनगी भरि भट्ठा नहि धेलनि, वयस पार नब्बे केर केलनि ।
नवतुरियाक उमंग देखि क' बेकाबू हुनकहुँ मन भेलनि ।
आब ने करताह खेती-बाड़ी, नहि करताह महिषिक रखबारी ।
बूढ़क चोला देलनि उतारि, घरक लोक बैसल झख मारि ।
नव युग नव प्रकृति केर सृजन, करबाक पथ पर बढ़ै लए ।। ० ।।
बेटा पुछलक औ बाबूजी, आब करब की पढ़ि-लिखि क' ।
वयस अहाँ केर रहल आब नहि, डेग धरैत छी थाहि-थाहि क' ।
अँतरी घोकचल, हिलल बत्तीसी, मोतियाबिंद आँखिमे अछि ।
गाल धसल टूटल पुलिया सन, गप करैत छी रुकि-रुकि क' ।
मुदा ने बूढ़ा किछुओ सुनलनि, जेना कि ओ रणभूमिमे दौड़लनि,
उच्च शिखर पर चढ़ै लए ।।
बूढ़ा कहलनि, सुन रौ बौआ, बहुत खेलौलए घुम-घुमौआ ।
आब ने तोरा सबकेँ सुनबौ, जएह मन हेतौ सैह हम करबौ ।
धोती-कुर्ता छोड़ि-छाड़िक' जिन्स पेन्ट पर बेल्टो कसबौ ।
आँखि-दाँत सबटा बनबेबौ, सैलुनमे जा केश रंगेबौ ।
पढ़ि-लिखि क' जँ मुखिया बनबौ, सब योजना पेटहि रखबौ ।
जे सब करतै हल्ला-गुल्ला, ओकरा लए ताड़ी घर खोलबौ ।
जँ देशक नेता बनि जैबो, संसदमे चप्पल ल' जेबौ ।
जे नहि मानत हमर गप, ओकरा ऊपर वर्षा करबेबौ ।
मंत्री बनबौ पुलिस विभागक, चोर सभक सूची बनबेबौ ।
सभक बीच लाइसेंस बाँटि क' सब कमीशन घरमे रखबौ ।
नारी केर अधिकारक खातिर, संसदमे हल्ला करबेबौ ।
अपने बनबो प्रेमक मूर्ति, ओकरासँ पूजा करबेबौ ।
'नन्द'क संगे अटकन, मटकन, दहिया चटकन खेलै लए ।। ० ।।

(१४२)

बुड़िबक बेटा ढौए काबिल

कहलनि काका, चल जो ढाका, खूब कमा क' अनिहेँ टाका ।
केओ ने हेतौ तोरा मोकाबिल, बुड़िबक बेटा ढौए काबिल ।।
संतो बाबू शहरमे रहलनि, नीक-नीक स्कूलमे पढ़लनि ।
जँ ककरहु दरखास्त लिखायत, दौड़ि-दौड़ि संतो लग जायत ।
चिट्ठी-टेलीग्राम पढ़ै छथि, संतो केवल इएह करै छथि ।
डिग्रीसँ पेटी भरि गेलनि, मुदा कतहु नहि नौकरी भेलनि ।
गामहि रहि मारै छथि माछी, दिन भरि ओगरइ छथि गाछी ।
धियो-पूता नहि दै छनि मोजर, घरक लेल भेल छथि अजगर ।
करताह की गट-गट गीड़ै छथि, भोजन गारि ने फर्क करै छथि ।
पढ़ि-लिखि ने केलनि किछु हासिल ।। बुड़िबक बेटा... ।। ० ।।
फुचना नहि किछु पढ़लक-लिखलक, स्कूलक मुहोँ नहि देखलक ।
सब दिन नङटइ-लुच्चइ कयलक, मारि अनेर-धुनेरसँ खयलक ।
तकर ने ओकरा कनिओँ लाज, ओकरहि माने गाम-समाज ।
बाप कीनि क' देलकै ट्रैक्टर, ताहिसँ भेल महाजन मोटगर ।
महीँस-गाय पोसने अछि खूब, मुदा कंठ तर पड़ै ने दूध ।
सब बजाबए ओकरहि पंच, देखहुमे लागए मुस्तंड ।
कतबहुँ पंच रगड़ि मरि जायत, फुचना जे चाहत से होयत ।
पढ़ल-लिखल 'नन्द' छथि बेकार, फुचना थिक गामक सरदार ।
ओकरा सोझाँ सब अछि जाहिल ।। बुड़िबक बेटा...।। ० ।।

(१४३)

आब कहू मन केहन लगैए

तीस बरषसँ कानि रहल छी, अहाँक कान नहि जूँ रेंगैए ।
दृश्य देखि ग्यारह सितम्बर, आब कहू मन केहन लगैए ।।

दंभ भरै छी महाशक्ति केर, तैयो अहाँ आतंकित छी ।
हम हजारो चोट सहल, अहाँ एकहि चोटमे चिन्तित छी ।
जेहने रोपब तेहने काटब, सब दिनहिसँ होइत एलैए ।। दृश्य...
कुकुर पोसब कटबे करत, नहि काटत तँ चटबे करत ।
दोसरक लेल जँ खाधि खूनब तँ, ओही खाधिमे खसबे करब ।।
सब दिन जे पंचैती कएलक, आइ स्वयं ओ पंच तकैए ।। दृश्य...
अहीँक कोखिसँ जन्म लेलक, पुनि पाकमे आबि प्रशिक्षित भेल ।
कर्मभूमि कश्मीर बनौलक, डेरा तालीबानमे देल ।।
जे काल्हि नौकर तकैत छल, नोकरी आइ-तकैए ।। दृश्य...
बस चढ़ि गेलहुँ करए लेल दोस्ती, मुदा कबूल नहि कएलक ।
अहाँक शह पाबि कए हमरा, पीठमे छूरा भोकलक ।
कारगिल केर हार देखि कए, अहाँक मन किए हहरि उठैए ।। दृश्य...
हम अहाँ लग चुट्टी सन, अहाँ विश्वमे शेर कहाबै छी ।
प्रतिबंधित जकरे कएलहुँ, ओकरे लग माथ झुकाबै छी ।
सन अनठानबेक अकड़ आइ, धरती केर घुरि चटैए ।। दृश्य...
चेतू-चेतू आबहु चेतू, सभ केर अपना संग समेटू ।
एक रंग केर नीति बनाकए, विश्व शान्ति केर नारा पिटू ।।
भारतवर्षक नीतिक आगाँ, दुनियाँक माथ झुकैत रहैए ।। दृश्य...

(विधात्रीसँ)

(१४४)

भौजी

भैया हमर परम मौगिआह, सूति उठिक बनबथि चाह ।
पहिलुक कप भौजी के देथि, तैखन दोसर अपने लेथि ।।
पलंग बैसि चाहक चुस्की लए, कनिको कमी जँ देखै छथि ।
सौंसे घर के माथ उठौने, सातो पुरुखा उकटै छथि ।

भैया भेल निरीह ठाढ़ छथि, कर जोड़ि हुनका सोझाँ ।
जेना ठाढ़ रहैत अछि मुजरिम, न्यायालयमे जज सोझाँ ।।
जेहने रूप-रंग खापड़ि सन, चालि चलन अद्भुत ओहने ।
सब किछु पहिनहिसँ बुझल छल, घटक छला सेहो कहने ।।
मुदा पिताजी टाकाक लोभें, घटकक बात ने कान देलन्हि ।
भैयाक भरल-पुरल जीवनकेँ, अभिशापित क' क' छोड़लन्हि ।
स्कूलक दर्शन नहि कहिओ, पोथीसँ नहि भेटो भेल ।
अलंकार सबटा सिखने छथि, भाखथि ओले सन के बोल ।
अन्हरा गोंगा, भीतरघुन्ना, भैयाक नाम धएने छथि ।
बात-बात पर तुनैक उठै छथि, व्यंग्य बाण मारै छथि ।
मुदा बेचारा भैया सदिखन, अपन कर्म पर क़ानथि ।
पूर्व जन्म केर कृत्य मानि कए, मन के ढाढ़स बान्हथि ।।

(विधात्रीसँ)

(१४५)

लोकपाल-1

भारत अछि बेहाल, जागू देशक जन-जन ।
सगरो भ्रष्टाचार, जागू देशक जन-जन ।।
पैंसठ वर्षक भेल आजादी, तैओ मुँह पर लागल जाबी ।
लाल टोप तँ भागि पड़ायल, उजरा टोपी सबठाँ हाबी ।
बाजब तँ कारागार, जागू देशक जन-जन ।।
ककरहु अन्नक दरस ने होइछ, केओ मरै अछि खाइते-खाइते ।
ककरहु फुटो-पाथ ने भेटए, केओ मोट भेल राता-रातिये ।
झूट्ठा अछि सरकार, जागू देशक जन-जन ।।
गाँधीजी केर त्याग-तपस्या, केर परिणाम इएह अछि भेटल ।
एकरहि लेल शहीद भेलाह की, भगत, राजगुरु आर चन्द्रशेखर ।
केहेन भेटल सरदार, जागू देशक जन-जन ।।

(१४६)

लोकपाल-2

जवाना केहेन एलै रे बाउ, जवाना केहेन एलै रे बाउ ।।
जनतासँ जे वादा कयलक, कुर्सी बैसितहि सब बिसरि गेल ।
नाम लेल जनता केर सेवक, पावर भेटितहि सब बिसरि गेल ।
बिसरि गेल सब तौर-तरीका, बिसरि गेल सब भाव ।। जवाना० ।।
संसद पाँच छियालीस केर अछि, सब अपनहि लेल बेकल रहै अछि ।
राजनीति करै बेर विकासक, वेतन वृद्धिमे एक रहैत अछि ।
अलग-अलग सुर-तान अलापै, चलत ने कोनो दाव ।। जवाना० ।।
जाति-पाति केर राजनीतिसँ, जनता केर मन मोहैत रहतै ।
ओकर विरोध करत जे केओ, तकरा ऊपर लाठी चलतै ।
रंग ओकर गिरगिट सन बदलत, आओत जखन चुनाव ।। जवाना० ।।

(१४७)

लोकपाल-3

कोना ई रुकतै भ्रष्टाचार ।
एकरहि कारण बढ़लै महँगी, भेलै सब लाचार ।।
आशक एक किरण फूटल अछि, संसद लोकपाल बिल गेल अछि ।
संसद एकरा पारित करतै, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगतै ।
हेतै सब उद्धार ।। कोना...
नीचाँसँ ऊपर धरि देशक, सब एकरहि अधीनमे रहतै ।
भ्रष्टाचार करत जे केओ, लोकपाल केर सोझाँ अओतै ।
भेटतै कारागार ।। कोना...
सबटा काज समय पर हेतै, घूस-घास केओ नहि लेतै ।
जन-जन सबठाँ आदर पओतै, आब ने ओकरा केओ दुरदुरैतै ।
समरसताक संचार ।। तखन ई जेतै भ्रष्टाचार ।।

(१४८)

लोकपाल-4

रामलीला मैदान यौ भैया, रामलीला मैदान ।
जत' करै अछि अनशन अन्ना, चलियौ ओही ठाम ।।
दिन छलै सोलह अगस्त केर, अन्ना छल घरहिमे बैसल ।
दिल्ली पुलिस पकड़ि क' ओकरा, जेल तिहाड़मे ल' क' पैसल ।
शुरू भेलै अन्ना केर अनशन, खूब भेलै घमासान ।।
सौंसे देशक लोक उमड़ि गेल, जे.पी. पार्क तिहाड़ो भरि गेल ।
सगरो अन्ना-अन्ना गुंजए, शासक लेल मुसीबत बनि गेल ।
तखन तिहाड़सँ आयल अन्ना, रामलीला मैदान ।।
रामलीला मैदानमे अन्ना, लीला अपन देखौलक जैखन ।
देशक सब क्षेत्रसँ अन्ना, पओलक पूर्ण समर्थन तैखन ।
सरकारो नतमस्तक भ' क', रखलक अन्नाक मान ।।

(१४९)

टाका

टाका बिना ने पूजित होयब, केहनो सुजन समाज ।
टाका थिक ओ गंगाजल, जे सिद्ध करत सब काज ।।
टाका मंदिर, टाका मस्जिद, टाका थिक गुरुद्वारा ।
बिनु टाकाकेँ धक्का खायब, कतहु ने होयत गुजारा ।।
टाका राम-रहीम, गुरु ओ टाका ईसा-मसीह ।
बिनु टाका नहि दरशन पायब, चलत ने किछु तरकीब ।।
पति-पत्नी केर मधुर मिलन बीच, केन्द्र बिंदु अछि टाका ।
बाप-बेटा ओ सर-सम्बन्धी, रिस्ता-नाता टाका ।।
टाका थिक त्रिभुवन केर स्वामी, पूर्ण करत सब आश ।
जखन होयत लक्ष्मीक कृपा, ई तखनहि आओत पास ।।

भूखसँ जे बिलबिला रहल अछि, भूख मेटाओत टाका ।
उजरल घरकेँ एकहि क्षणमे, आबि बसाओत टाका ।
टाकासँ ऊपर नहि केओ, एहि धन धाम-धरा पर ।
एकरहि लेल देवगण केर, अवतरण होइछ एहि भू-पर ।
टाका रहत 'नन्द' सब पूछत, घर-बाहर केर लोक ।
अनचिन्हारो आबि सटत, जेना वर्षा ऋतुमे जोंक ।।

(१५०)

गीत

अपन सुवासकेँ जन-जनमे, लुटाबैत रहियौ ।
प्यास-प्यासल केर हियमे, जगाबैत रहियौ ।।
घटा आयल उमड़ि बरसत कत', ई केओ ने बुझै अछि ।
पुहारो बनि जड़ल मनके, जुड़ाबैत रहियौ ।।
अहाँ केर देखि मुखमंडल, गगनसँ चान ताकै अछि ।
मरै अछि लाजसँ एना, ने सिहाबैत रहियौ ।।
खिलल छी कमल सन, मरड़ाइत अछि, चहु ओरसँ भौंरा ।
परागक लेल अछि बेकल, नेह बरिसाबैत रहियौ ।।
चलै छी चालि गजगामिनि, बजै अछि नूपुरो रुनझुन ।
लटकलो गाल केर लटकेँ, उठाबैत रहियौ ।।
देल जे घाव ओहि पर 'नन्द' कौखन नोन जुनि रगड़ू ।
जँ मलहम नहि तँ स्पर्शहुसँ, सहलाबैत रहियौ ।।

(१५१)

गीत

नीको ने लागए भौजी, बिजुली बिना ।
हमरा हिया ने जानी, बसली कोना ।।
देखल जहियासँ हुनक सुरतिया, गोल-कपोल कजरायल अँखिया ।
कारी-कारी लट लागइ नागिन जेना ।। नीको०... ।।

आँखिक निन्न हमर सेहो गेल हेराय, जागल-सूतल दै छथि रूप लखाय ।
आँखिक सोझाँ सदिखन, नाचथि जेना ।। नीको०... ।।
हमर कसूर जे अहाँके देखलियै, नयनक बाण अहाँ चट द' फेकलियै ।
घायल केलहुँ तीर-तरकस बिना ।। नीको०... ।।
काटब कठिन अछि, जीवन बाँकी, हिय हहरै अछि, देखबा लय झाँकी ।
अमृतो लगैछ 'नन्द' माहुर जेना ।। नीको०... ।।

(१५२)

गीत

सजि धजि ने चलु बाट मे, सिंगार ने करू ।
दोसरका मन ने भावए, व्यवहार ने करू ।।
लट केश केर लटकल, नागिन जकाँ लगैछ ।।
जानो लेबै त' लिऔ, फुफकार ने करू ।।
थिरकैत अछि डेगो, नूपुर के धूनि पर ।
हौले बजाउ नूपुर, झनकार ने करू ।।
दमकैत अछि मुँहोँ, फुलल कमल सन ।
चानो मरैछ लाजे, गुलजार ने करू ।।
सूतल मदन के जगबए, काजर आँखि केर ।
कनखीक मारि मारू, दुत्कार ने करू ।।

(विधात्रीसँ)

(१५३)

अनुशासन

जे ने स्वयं अनुशासित रहइछ, बात करए अनुशासन के ।
शासन केर जे अर्थ ने बुझए, से संचालक शासन के ।।
नीतिक ज्ञान लेश मात्रो नहि, नीतिशास्त्र पर भाषण दैछ ।।
सब नीति अपनहि पक्षक हो, ओहने सदिखन मंत्र रचैछ ।
कुकुरक नाङरि सोझ ने होइए, सेहो सोझ जँ भइओ जायत ।

हिनकर वयन ने बदलत कहियो, कतबहु यत्न कएला केर बाद ।
कोयला उज्जर भ' ने सकै अछि, चाहे कतबहु साबून देव ।
कौआ सबदिन कौए रहतइ, कतबहु करए हंससँ नेह ।
रंग बिरंगक नारासँ सब वर्गमे भेद कराबै छै ।
अनपढ़ अज्ञानी ओकरासँ, प्रमुदित भ' गुण गाबै छै ।।
दंभ भरै सामाजिक न्यायक, मुदा स्वयं असामाजिक अछि ।
भ्रष्टाचारक उन्मूलन पर, भ्रष्ट आचरण स्वयं करैछ ।।
उचित बात कौखन नहि बाजए, फानए जेना बान्हल घोड़ी ।
कायदा-कानून तोड़ि रहल, जेना माल-जाल तोड़ै डोरी ।।

(विधात्रीसँ)

(१५४)

सपना

टुटि गेल जंजीर गुलामीक, चहु दिश सब केओ प्रमुदित भेल ।
गाँधीक सपना साकारो भेल, जन-जन के भाग्योदय भेल ।।
अपन राज सरकारो अपने, नव-नव कानून बनाएब ।।
रामराज्य भारतमे आनब, देशके सुखी समृद्ध बनाएब ।।
भागि जाएत भारतसँ गरीबी, बेरोजगारी दूर रहत ।
औद्योगिक क्रान्तिसँ जगमे, सौसे देशक मान बढ़त ।।
मुदा गरीबी माथ चढ़ल अछि, भ्रष्टाचारक युग आयल ।
संतरीसँ मंत्री धरि सब केओ, सतत घोटालामे लागल ।।
महगाइ सुरसा सन सबठाँ, मुँह बौने चुचकारै छै ।
बेकारी ओकरहुसँ आगाँ, बढ़ि-चढ़ि क' ललकारै छै ।।
स्वर्ण जयन्ती केर अवसर पर, बहुत चीजमे उन्नति भेल ।
ओहिमे किछु आलू पिआज, आ संग अछि सरिसो केर तेल ।।
नेता सब कुर्सी लेल रस्साकस्सीमे छथि लागल ।
पिसा रहल अछि जनता जे छल, आजादीक लेल पागल ।।

(विधात्रीसँ)

(१५५)

जन व्यथा

अहाँ चैन सँ सूतल छी आ कहि रहलहुँ हम सेवक छी ?
देश डुबौने छी गरकमे, फर्क ने अछि नाली सड़कमे ।
राति-दिन दुर्घटना होइत अछि, जीवन अछि भगवान भरोसे ।
जनता केर सपनामे सड़क, हेमाक गाल सनक बनबै छी ।
कर केर राशिकेँ राखि बीचमे कोषागार तक जाय ने दै छी ।
मुदा अहाँ पर कोनो असरि नहि, हमहूँ सब भेल बेबस छी ।। अहाँ...
शिक्षा के व्यवसाय बना कए, ओकरहु कएल कालाबाजारी ।
प्रतिभा केर दाबि कए गरदनि, डिग्री केर बनलहुँ व्यापारी ।
प्रतिभावान मारै अछि माछी, नोट बला डिग्री पाबै अछि ।
भ्रष्टाचारक एहि युगमे आब, गरीब बेचारा की क' सकै अछि ।
सत्ता पर आसीन रहैतो अपनहि स्वार्थक पोषक छी ।। अहाँ...
भीषण बाढ़िक पड़ि चपेटमे घर-घड़ारी सबटा बहि गेल ।
ऊपरसँ निर्झर जल बरिसए, नीचाँसँ जलधारा बढ़ि गेल ।
राशन केर चूरा मे अगबे, सह-सह करइत सूरा छल ।
गुड़क नाम पर पुड़ियामे चुट्टी केर जकीरा छल ।
जेहि राशनके कुकुर ने पूछए, से हमर प्राणपोषक छी ।। अहाँ...
पहिने आँखि मिचौनी होइ छल, आब तँ दुर्लभ मासक मास ।
बिजुली पानिसँ जन तबाह अछि, उद्योगक भेल सत्यानास ।
नेता छथि वोटक व्यापारी, कोना क' देशक होएत विकास ।
पैघ लोक लेल जेनेरेटर अछि, छोटका के डिबिये पर आस ।
चालि-ढालिसँ बुझना जाइछ, प्रतिनिधि नहि अहाँ शोषक छी ।। अहाँ...
राजनीतिमे अपराधीके सबसँ बेसी अछि वर्चस्व ।
अपराधो के राष्ट्रीकृत कए संविधानमे दिअ' महत्व ।

डाका चोरी अपहरणहु के आई.पी.सी. मे राखल जाय ।
तैखन केओ ने आँखि उठाओत, जँ बाजत तँ लेब फरिआइ ।
भारत रत्नक दय उपाधि, इतिहास रचू नव चेतक छी ।। अहाँ...

(विधात्रीसँ)

(१५६)

गीत

मन होइए अहाँ के देखिते रही ।
आँखिक सोझाँमे नचिते रही ।।
गोल कपोल कमल मुखमंडल, मात करै अछि चानो के ।
मधुकर दल लोभी रस लोलुप, नाचि रहल रसपानो लए ।
एकटा हम सदिखन तरपिते रही ।। मन...
मृगनयनी ऊपरसँ काजर, सूतल मदनो जगबै छी ।
चंचल लोचन चितबति चहुदिश बिहुँसैत अधरहु दाबै छी
कमलक दल सन बिहुँसिते रही ।। मोन...
कंटक माँझ कुसुम अछि फुलल, भार सहल नहि जाइत अछि ।
हे रसवन्ती चैन अहाँ बिनु कौखन केओ ने पाबैत अछि ।
बेली जूही सन गम-गम गमकिते रही ।। मोन....
केहरि सम कटि गजगामिनि सन चालि जखन अहाँ चलैत छी ।
सब केर सुधि हरि लै छी तैखन, दामिनि बनिक' दकमैत छी ।
बिजुरिक छटा सन छिटकिते रही ।। मोन...
मन्द बयारक चलल झकोर, आँचर उड़ल आकाशमे ।
स्वच्छंदो भेल युगल मनोहर, दाबल छल बाहुपाशमे ।
पुरबा हवा सन सिहकिते रही ।। मोन....
वाणी मधुर जेना बाजै अछि कोकिल सतत वसन्तमे ।
आतुरतासँ जोहि रहल छथि, बाट निहारथि कंतकेँ ।
दिन-राति सपनो सजबिते रही ।। मोन...

(विधात्रीसँ)

(१५७)

छोड़ू एहेन मचान

गौवाँ, छोड़ू एहेन मचान ।
जत' होइछ हित केर नहि चर्चा, तोड़ू एहेन दलान ।।
चर्चा करू विकासक सबठाँ, जकरासँ सबकेर हित होयत ।
पर निंदा नहि सुनु ने बाजू, संस्कार उत्तम बनि पाओत ।
अदखोइ-बदखोइ जत' होइत हो, त्यागू एहेन बथान ।। ० ।।
जे दोसरकेँ झगड़ा लगबए, ओ कहबए सबसँ बुधियार ।
मिठ-मिठ बाजि क' करए चुगिलपन, ओकरहि मानै सब सरदार ।
जरबू साम-चकेबा जेना, चुगिला केर मुँह-कान ।। ० ।।
अपन देह पर लटकल गुदरी, दूसए दोसर केर पटोर ।
सुझए ककरहु अपन ने टेटर, दोसरक देखितहि पीटए ढिढोर ।
जे करैछ कनफुसकी सब मिलि, ऐंठू ओकरहु कान ।। ० ।।
राजनीति केर अर्थ न जानए, धोती-कुर्ता पहिरि क' घुमए ।
दोसर लग बुधियार बनै अछि, मुखियाकेँ जा' तरबा चाटए ।
दूटा घोंट सोमरस खातिर, बुझए अपन ने आन ।। ० ।।
अपनहुँ पढ़ियौ सबकेँ पढ़बियौ, जाति-धर्मसँ द्वेष ने करियौ ।
'नन्द'क हित एकरहिसँ होयत, बढ़त देश केर मान ।। ० ।।

(दूरदर्शन, मुजफ्फरपुरसँ प्रसारित)

(१५८)

इएह हमर छी हिन्दुस्तान

इएह हमर छी हिन्दुस्तान ।
जत' होइत अछि झूठक खेती, अस्सी प्रतिशत अछि बैमान ।।
सच केर मुँह अछि जाबी लागल, झूठक गाड़ी सर-सर भागल ।
आतंकी और भ्रष्टाचारी, छाती तानि करए सरदारी ।।
छलाह की देखने एहने सपना, आजादी केर वीर जवान ।। ० ।।

जत' होइत छल शक्तिस्वरूपा, नारी केर सब दिन सम्मान ।
आइ ओकर लुटल जा रहल शील-सतीत्व सगरे सरेआम ।
भ्रूणहिमे बेटी केर हत्या, डेग-डेग नारीक अपमान ।। ० ।।
दिनो-दिन द्वेष बढ़ि रहलै, जाति-धर्म केर अंतर बढ़लै ।
एक दोसर लए खाधि खूनि क', दुनू जा' ओकरहिमे खसलै ।
बेलसँ आबि बबूर लटकलहुँ, बदलि गेल विधि और विधान ।। ० ।।
सुग्गा आइ बनल निगरानी, पाठ पढ़ौने पढ़ैए ।
सरकारक इशारा पबितहि, विपक्षी पर मे झपटैए ।
दुनू दिशसँ दोहन होइत अछि, संकटमे अछि सब केर प्राण ।। ० ।।
कुर्सी पर जे बैसि गेल अछि, अपन बपौती बुझैए ।
दीन-हीनकेँ बुझि क' कूकुर, कौड़ा आगू फेकैए ।
छः सय टाका मासिक द' क' कीनि रहल अछि ओकर इमान ।। ० ।।
अपन बड़प्पनकेँ सब भूखल, देशक दिशा-दशा नहि देखए ।
भाषणमे सब सत्य अहिंसक, मुदा सदैव असत्ये भाषए ।
गाँधी, सुभाष, नेहरू, राजेन्द्रक, मेटा रहल सब नाम-निशान ।। ० ।।
इएह हमर छी हिन्दुस्तान ।।

(१५९)

की करबै

नाचि रहल सब अपनहि ताले, की करबै ।
सब अपनहि मर्जी केर मालिक, की करबै ।।
गामक बुढ़बा-सुढ़बा बैसल झख मारै ।
धिया-पूता सब कान कटै अछि, की करबै ।।
माय-बापसँ केओ ने मतलब राखै छै ।
कनियाँक सोझाँ तितल बिलाड़ि तँ, की करबै ।।

दोसरक टेटर देखि सब केओ ऐंठैत छै ।
अपन घेघ नहि देखि रहल तँ, की करबै ।।
जे करैत अछि सौंसे गामक पंचैती ।
खुट्टा गाड़त बीच बाट तँ, की करबै ।।
पालि-पोसि जे ककरहु मनुष बना देलकै ।
ओकरहि पाछाँ बाँस करत तँ, की करबै ।।
सौंसे गामकेँ झाड़ि-पोछि क' आबि गेलहुँ ।
चिनुवारे अछि नरक बनल तँ, की करबै ।।
'नन्द' अहाँ लए की सोचत देशक नेता ।
अपन पेट नहि भरि रहलै तँ की करबै ।।

(१६०)

माटिक लाज

हे दानवीर अछि अहीँक सुयशसँ, चमकि रहल ई माटि ।
अहीँक कीर्ति केर फहरए झंडा, धन्य अंग केर माटि ।।
अहीँक द्वारि देवेन्द्र आबि क', छलसँ लेलनि दान ।
कुंडल-कवच छल जे जीवन, बूझल माटि समान ।।
पड़ल छलहुँ रणभूमिमे जैखन, मृत्युक क' आलिंगन ।
याचक बनलाह तीनू लोकक, स्वामी स्वयं निरंजन ।।
किछु नहि संग दाँत केर सोना, तोड़ि दानमे देलहुँ ।
दानवीरसँ भेलहुँ अलंकृत, जगमे सुयश बढ़ेलहुँ ।।
दान देबासँ विमुख ने कौखन, पिता वचन पर देल ने ध्यान ।
याचक बनल स्वयं जननीकेँ, देलहुँ पाँचो पुत्रक दान ।।
अहाँ बिनु अहाँक भूमि अछि आकुल, व्याकुल मन सब तड़पि रहल ।
पुनः आबि करु शान्त पिपासा, बाट सब केओ जोहि रहल ।।
दानीसँ विहीन भेल धरती, ककरहु नहि ककरहुसँ काज ।
सब दोसरक शोणित केर प्यासल, आबि बचाबू माटिक लाज ।।

(१६१)

देशक व्यवस्था

सब केओ एकहि काज करै अछि ।
अपन घेघ सूझए नहि ककरो एक दोसर के ताना दैत अछि ।
गणतंत्रक मंदिरकेँ सब केओ, दिन-दहाड़े लुटि रहल अछि ।। ० ।।
आजादी नेता अफसर लेल, आजादी सेठक श्रृंगार ।
जनता सब दिन तकितहि रहि गेल, आइयो नहि पओलक अधिकार ।
होइतहुँ ओ आजाद देशकेर, बदतर जीवन बिता रहल अछि ।।
छोट चोर अछि जेलक भीतर, बड़का बाहर राज करै अछि ।
घूस लैत जे पकड़ायल अछि, घूसे द' क' छुटि रहल अछि ।
सबटा चोरबा एक संग भ' इमानदारकेँ सता रहल अछि ।।
भाय-भाय केर खूनक प्यासल, दोसरक की कल्याण करै अछि ।
सबके अपना आपक चिंता, तेँ दोसर केर आरि कटै अछि ।
सब किछु अछि एहि ठाम बिकाऊ, आत्मा तककेँ बेचि रहल अछि ।।
तीन रंगसँ बनल तिरंगा, तीन हजारमे देश बँटल अछि ।
ककरहु पर विश्वास ने ककरो, अपनहि ताकमे सब रहल अछि ।
एक दोसर समुदायक लोककेँ बेरहमीसँ पीटि रहल अछि ।।
वोट बैंक लेल अफरा-तफरी, झूठक डंका पीटि रहल अछि ।
मुँहमे राम बगलमे छूरी, ऊपर घेंटसँ घेंट मिलै अछि ।
मैंजन के मैंजनी चल गेल, नेता कोंचा सीटि रहल अछि ।। ० ।।
जनता लेल जनता केर द्वारा, जनता केर गणराज्य बनल अछि ।
कोल्हु जनता बड़दो जनता, घानी जनता पेड़ा रहल अछि ।
किछु नहि बदलल विधि व्यवस्था, पुरने कानून घिचा रहल अछि ।।
जे केओ करत विरोध कहाओत, देशद्रोही, आतंकी ।
सब दिन चलत ने हिनका लोकनिक, ई नव-नव नौटंकी ।
'नन्द' एतेक आरक्षण देलहुँ, तैओ जूता सीबि रहल अछि ।।
जनतंत्रक मंदिर के सब केओ दिन-दहाड़े लुटि रहल अछि ।।

(१६२)

मर्यादाक विनाश

युग केर अछि दस्तूर केओ एहिमे की बाजत ।
पुतोहुक आगाँ सासु आइ नंगटे भ' नाचत ।।
सासु पिटै अछि डंका कनियाँ धीरे चोट करै अछि ।
सासु गबै अछि डहकन, कनियाँक आँखि-मुँह चमकै अछि ।।
चंदा रानी दौड़ि-दौड़ि क' सबकेँ करथि पुछारि ।
सौसे टोल घुमि क' थकली, केओ नहि देलक उबारि ।।
बिसरि गेली जे पूर्वमे कयने रहथि कोन व्यवहार ।
झोंट पकड़ि सौसे आङनमे सासु के करथि दुलार ।।
कयल कर्म नहि बाम जाइछ, ई बुझैत अछि सब लोक ।
जएह अरजब, सएह भोगब खाहे कतबहु करब उद्योग ।।
'नन्द' करू ओ कृत्य, करै छी दोसरसँ पुनि आश ।
सुखी रहब सब दिन ने होयत मर्यादाक विनाश ।

(१६३)

कनियाँ बाजू ने

सबटा केलहुँ करार, कनियाँ बाजू ने ।।
जे जे कहलहुँ सबटा केलियै, माइयो-बापो सबकेँ तेजलियै ।
भाय-बहिनकेँ केलहुँ बेघर, सासुरक लोककेँ माथ चढ़ौलियै ।
तखन किएक फुफकार, कनियाँ बाजू ने ।। ० ।।
घरसँ निकलैत लाज लगै अछि, गामक लोक सब हमरे तकै अछि ।
देखितहि हमरा मारए ताना, पैर तर छै दबने जनाना ।
केलहुँ बंटाढार, कनियाँ बाजू ने ।।
हे जग तारिणि नग्र उजारिणि, हे आकाशक सहस्र बाढ़नि ।

आबहु समटू अपन भाभट, कतेक करब हम आगत-भागत ।
करू एतेक उपकार, कनियाँ बाजू ने ।।
सगरो जा क' डींग मारै छी, आङन अबितहि थोथी गोल ।
सबटा केलहा-धेलहा बिसरलहुँ, बिसरि गेलहुँ इतिहास-भूगोल ।
संकटमे अछि प्राण, कनियाँ बाजू ने ।।
जेहेन कारणी वैद्यो ओहने, बनबै हमहूँ सुकना जेहने ।
झोंट पकड़ि क' डेंगा दैत छै, माल-जाल सन जखने-तखने ।
जस रोग तस उपचार, कनियाँ बाजू ने ।। ० ।।

(१६४)

पैंसठि वर्षक बाद

चमकि रहल देशक आजादी, पैंसठि वर्षक बाद ।
शासक नहि सेवक अछि भेटल, पैंसठि वर्षक बाद ।।
भारतकेँ जयघोष विश्वमे, पैंसठि वर्षक बाद ।
दुश्मन पस्त बिना किछु कयनहि, पैंसठि वर्षक बाद ।।
एक फकीर दहाड़ि रहल अछि, पैंसठि वर्षक बाद ।
होश उड़ै अछि धन्नासेठक, पैंसठि वर्षक बाद ।।
कालाधनसँ मुक्त देश भेल, पैंसठि वर्षक बाद ।
नोटो नहा रहल अछि गंगा, पैंसठि वर्षक बाद ।।
जन-धन-खाता भरि रहलै अछि, पैंसठि वर्षक बाद ।
बिना टिकट के लॉटरी खूजल, पैंसठि वर्षक बाद ।।
सस्ता सुलभ चुनाव व्यवस्था, पैंसठि वर्षक बाद ।
माटि भेल हवालाक कारोबारी, पैंसठि वर्षक बाद ।।
अर्थव्यवस्था सुदृढ़ 'नन्द', पैंसठि वर्षक बाद ।
जन-गण मनमे फूल फुलायल, पैंसठि वर्षक बाद ।।

(१६५)

गीत

जो रे पुरबा संदेशा पिया के सुना,
आब सहलो ने जाइछ यौवन केर भार ।।
कोना खेलैत छलहुँ नित आङन घर,
आब बाहरो जयबामे लगैत अछि डर ।
मन होइत अछि जे उड़ि क' पहुक लग जाइ,
ओ बसैत छथि सात-समुन्दर के पार ।। ० ।।
हुनका देखैत छलहुँ हम बचपनसँ,
मन व्याकुल ने भेलै कहिओ धरि एहेन ।
आब कुच-युग लगै अछि पहाड़े सनक,
तैपर आँचर सेहो भ' गेलै बेसम्हार ।। ० ।।
आइ सखि सब निहारै छै हम्मर देह,
जेना हम छी अपराधी करैत अछि संदेह ।
हमर सुधि-बुधि हेरायल भेलहुँ हम बताहि,
दिन-रातिओ लगै अछि एके रंग अन्हार ।। ० ।।

(१६६)

जूड़शीतल

जलसँ जुड़ा रहल छथि माथ दादी जूड़शीतलमे ।
भेलौ अनघोल भोरे-भोर देखू जूड़शीतलमे ।।
मास बैसाखक भेल शुरुआत देखू जूड़शीतलसँ ।
जुड़ायल बाट-बटोही बाटो-घाटो जूड़शीतलमे ।।
चढ़ाओल जाइछ पीड़ी पर मिथिलाक घरे-घरमे ।
भात बासी बड़ी केर संग मुनिगा जूड़शीतलमे ।।

निपल जाइछ घर-आङ्गन, गोबर-माटिसँ सगरो ।
जुड़ाबथि एक दोसरकेँ सब केओ जूड़शीतलमे ।।
फर्क नहि ऊँच-नीचक आइ भेटैत अछि कतहु 'नन्दो'
सभक मुँह थाल-कादोसँ सनायल जूड़शीतलमे ।।

(१६७)

कविवर किरणजीक पुण्य स्मृतिमे

किरण सन के किरण बनि आओत
किरणक मान के राखत ।
बनाक' शायर सिंह, सपूत जकाँ
नव बाट के साजत ।।
जनमि कृत-कृत्य कयलहुँ
धर्मपुर उजान मिथिलाकेँ ।
विविध विधामे रचि-रचिक'
गढ़ल इतिहास मिथिलाकेँ ।।
'मधुरमनि'सँ महाकाव्यो 'पराशर'
केर रचना कयल ।
अंधविश्वास पर क' चोट
प्रगतिवादक पथकेँ धयल ।।
नमन 'नन्द' क' रहल मैथिलीक
अपराजेय योद्धाकेँ ।
कहू तँ आब मिथिला मैथिली
केर मान के राखत ।।

(१६८)

गुरु गोविन्द सिंहजी

धन्य भेली माता गुजरी, आ धन्य गुरु तेग बहादुरजी ।
धन्य भेल पटना बिहार, जत' जनमल गुरु गोविन्द सिंहजी ।।
जुल्मी, जुल्मक नाशक खातिर, गुरुजीक अवतरण भेलैक ।
बचपनहिसँ युद्धाभ्यासक, खेल सखा संग मिलि खेलैक ।।
नेनपनहि साहुकारक पत्नी, पाँच पुत्र केर लेल वरदान ।
बदलामे नौका चढ़ि कयलनि, सैर-सपाटा सगर जहान ।।
राम रूपमे दर्शन द' पंडित, शिवदत्तकेँ कयलनि नेहाल ।
राजा फतेहचन्द मैनी घर, पुत्र रूप धयलनि तत्काल ।।
सोनक कंगन जलमे फेकल, कयल प्रतिज्ञा जन सेवाक ।
दीन-दुःखी केर सेवा संगहि, दुष्टक अंत होयत निर्बाध ।।
ऊँच-नीच आ जाति-पाति केर भेद ने रहतै जग भरिमे ।
जाहिसँ होयत हित जन-जन केर, कयल संकल्प मनहि मनमे ।।
कतेक पीर नतमस्तक भेला, आबि खसल गुरु चरणनमे ।
सब पओलक किछुओ किछु, जे ओ चाहि रहल अन्तर्मनमे ।।
सगरो हाहाकार मचल छल, औरंगजेबक शासनमे ।
नारी केर आबरू लुटायल, चलली रसा-रसातलमे ।।
कश्मीरी पंडित सुनाओल, ज़ा' क' व्यथा 'आपजी' केँ ।
अपन धर्मकेँ त्यागि ग्रहण करु, इस्लामकेँ जँ जिअब तँ ।।
ल' कृपाण गुरु गोविन्द सिंह जी, केलनि अनाचारी केर नाश ।
सिख पंथकेँ सुदृढ बना क' केलनि विश्वमे पुनः प्रकाश ।।

(१६९)

मच्छरक आत्मकथा

पूर्व जन्ममे छलहुँ हम कार्यालय केर किरानी ।
किछु बाँकी ओसूल करबाक लेल बनलहुँ मच्छर रानी ।।
घूस लेब अधिकार हमर थिक, देब अहाँक कर्त्तव्य ।
दान कयलासँ घटत ने कहिओ, करैत रहू किछु खर्च ।।
हम तँ किछुओ ल' द' क' पुनि करब अहाँ केर मान ।
भीख मङै अछि भिखमङा जे देखू ओकरहु शान ।।
केओ माङै अछि भीख घुमि क' केओ माँगै अछि चन्दा ।
केओ ओसूल करए रंगदारी, देखा-देखा क' डंडा ।।
भटकैत रहल आत्मा हम्मर, किछु उधार रहि गेल ।
ओकरहि करब ओसूल एहि लेल, मच्छर भ' जन्म लेल ।।
पूर्वज हमर ने छोड़लक ककरहु, हम कोना क' छोड़ि दिअ' ।
सोझाँ आयल शिकार देखि क' कोना क' मुँहके मोड़ि लिअ' ।।
कतबहु दुनियाँ होयत आधुनिक, मुदा हम ओहि बाट चलब ।
कुल केर हम नहि नाम हँसायब, पगचिह्ने पर डेग धरब ।।
हमर अहाँ जुनि दोष दिअ' औ, हम स्वभावसँ छी लाचार ।
एतेक अछि प्रतिरोधक तैओ, छाड़-भार किएक हमर कपार ।।
संख्या हमर तँ बढ़िते रहतै, जाधरि भ्रष्टाचार बढ़त ।
मरतै हमर दियादवाद जे, आबि क' मच्छरमे जनमत ।।
बिनु मुसहरी केओ नहि सुतए, कतेक तेज अछि डंक ।
हमरा सोझाँ फेल छै गब्बर, रामगढ़क आतंक ।।
हमरा पर मे कोनो दफा नहि, लागत आइ.पी.सी.क' ।
एकके मारब सयटा जनमत, हमरा कुल केर रीति ।।

एक गोटेसँ हमहूँ डरै छी, ओ छथि नेता समाज ।
तोड़ताह कौखन हमर एकता, एतबहि हुनकर काज ।।
मुदा एखन ओ हमरा ऊपर क' रहला उपकार ।
प्रतिरोधकमे करैत मिलाबटि, कयलनि सब बेकार ।।
हमरा तँ जे भेल से भेल, हुनकहु फायदा खूब ।
मोट कमीशन ल' क' देलनि, गंगामे जा' डूब ।।
जतेक आइ पसरल बिमारी, हमरहि कारण भेल ।
जाधरि नेताक पीठ हाथ पर, चलैत रहत ई खेल ।।
जे समाज रहइछ हिलि-मिलि क', ओत' जँ नेताकेर वास ।
बिखरि जायत सब एकहि क्षणमे, होयत सबटा सत्यानाश ।।
आधा पेट किएक नहि खायब, हिलि-मिलि क' सब एक रहब ।
कतबहु देत प्रलोभन 'नन्द', नेताक छाँहसँ दूर रहब ।।

(१७०)

ताकै टुक-टुक मुँह

जनता ताकै टुक-टुक मुँह, थर-थर काँपि रहल छै रूह ।
कहू तँ के असली के नकली एहि बजरियामे,
भुखे मारि रहल छै दिन-दुपहरियामे ।।
दूटा नेता एकठाँ होइत छै, एक दोसर के ताना दै छै ।
दूधक धोअल अपनाके बुझै, एक-दोसरके भ्रष्ट कहै छै ।
दुनू जन केर घेँट कटै छै, मुदा केओ नहि बुझि पबै छै ।
नव-नव चक्रव्यूह रचै छै, जनता सोझाँ फज्झैत करै छै ।
कहू तँ के नहला, के दहला एहि बजरियामे ।
जनता कुहरि रहल छै महगी केर भँवरियामे ।।
सूनमे दुनू गला मिलै छै, जाति-धर्ममे ओझराबै छै ।
पहिने माथा फोड़बाबै छै, बादमे मलहम लगबाबै छै ।

वचनसँ अमृत टपकाबै छै, उपरसँ शोणित बोकराबै छै ।
गरीबक काटि-काटि क' पेट, जेबी अपन भरबाबै छै ।
कहू तँ के दुश्मन, के मीत एहि अटरियामे ।
दुनू हाथे लुटि क' राखै अपन पेटरियामे ।।

(१७१)

कनेक सुनि लिअ

कहताह कनेक सुनि लिअ' ।
गप होयत अहगरसँ, मतलब नहि रसगरसँ ।
निकालथि भड़ास अपन, देखथि सुबास सपन ।
सबतरि अछि एके हाल, सब अपनहिमे बेहाल ।
सौंसे गाम घुमि लीअ' कहताह कनेक सुनि लिअ' ।। ० ।।
दोस्त-हित, मीत-यार, अपन-आन, घर-परिवार ।
आनक दुःख ककरो नहि सूझ, जानि-बुझि क' बनल अबूझ ।
सब किछु बिसरि जाउ, चुप-चाप ससरि जाउ ।
अनुचित-उचित चुनि लिअ', कहताह कनेक सुनि लिअ' ।।
फायदा अछि अर्पणमे, फायदा समर्पणमे ।
देखू समाजकेँ साहित्यक दर्पणमे ।
सबटा रस भोगमे, सबटा गुण योगमे ।
कर्त्तव्य अपन गुनि लिअ', कहताह कनेक सुनि लीअ' ।।
मरै अछि सब धन लेल, मरै अछि अपन जन लेल ।
लोभे अन्हरायल अछि, लोभमे समायल अछि ।
हड़पैमे पागल अछि, पचबैमे लागल अछि ।
आँखि अपन मुनि लिअ', कहताह कनेक सुनि लिअ' ।।
ककरहु ने केओ मालिक ककरहु ने केओ नौकर ।
मतलब नहि ककरहुसँ ककरहु नहि मोजर ।

सब अपनहि ठाठमे, सब अपनहि बाटमे ।
माथ-कपार धुनि लिअ', कहताह कनेक सुनि लिअ' ।।
अलगे छथि नेता, अलगे अभिनेता ।
अलगे रामायण, अलगे अछि गीता ।
अलगे सरकारो अछि, अलगे अछि जनता ।
अपनहि खसबाक लेल, खाधि अपनहि खुनि लिअ' ।
कहताह कनेक सुनि लिअ' ।। ० ।।

(१७२)

असहिष्णुता

निकलि गेल तीर तरकशसँ ने आपस आबि ओ सकतै ।
जे बाहर भेल मुँहक बोल, आपस घुरि ने ओ सकतै ।।
अहाँकेँ कष्ट भेल हमरासँ ओकरहु ढोल पीटै छी ।
केलहुँ हमरा जे आहत ध्यान ओकरहु किए ने राखै छी ।।
भेलहुँ असहिष्णु एकहि चोटमे अछि दोष की हम्मर ।
हजारो चोट हम सहलहुँ ओकर नहि ध्यान राखै छी ।।
सहिष्णु हम जे बहुमतमे रहितहुँ मुँह ताकै छी ।
करब जँ कारबाई तँ कहब बदला सधाबै छी ।।
असहिष्णु देश ई भेलै जखन दू फाँक भारत के ।
जे भारत माँक दिल टूटल, ओकरा जोड़ि पयबै की ?
छिनायल जाहि दिन एहि देशमे अधिकार अभिव्यक्तिक ।
कत' मरि गेल छल ओ विवेक जे पुनि आइ अछि जागल ।।
किएक सम्मान आपस कयल नहि बेटीक आबरू पर ।
किएक सूतल छलहुँ अपराध, भ्रष्टाचार, घोटाला पर ।।
सुरक्षा लेल करु शिक्षित अपना बाल-बच्चाके ।
धरत जँ डेग अनुचित बाट तँ परिणाम ओएह भेटत ।।

विविध भाषा, विविध संस्कृति के संगम पर अछि ई देश ।
सजल अछि पुष्पमाला सन एकर प्रतिघात जुनि करिऔ ।।
सहिष्णु सब दिनसँ देश आ ई देशवासी अछि ।
अपना स्वार्थ लेल असहिष्णु एकरा 'नन्द' जुनि कहिऔ ।।

(१७३)

अपनहि धुनमे

कहब ककरा सुनत के सब अपनहि धुनमे लागल छै ।
बेकल अपनहि स्वार्थक लेल जे नस-नस समायल छै ।।
काटै लेल घेँट दोसर के सतत तत्पर रहै अछि जे ।
ने ओकरा डर कानून के, ने ओ ककरो लगाबै छै ।।
बिकै अछि सब किछु एहि ठाम शिक्षासँ कानूनो धरि ।
बिकै अछि आबरू बेटीक सगरो हाट लागल छै ।।
जे जतबा पैघ ओतबहि मोट गुंडा पोसि रखने छै ।
जखन रक्षक बनल भक्षक तँ दोसरसँ की आशा छै ।।
ई हालत देखि दुनियाँ के केओ नहि मुँह बाजै अछि ।
कत' गेल भाइचारा, कुटुम्ब-परिजन, सर-सम्बन्धी ।।
केओ करै नोट बंदी तँ केओ संसदके बंदी यौ ।
जवाना बंदीके आयल, केओ भारतके बंदी यौ ।।
ई दुनियाँ स्वार्थ केर थीक, सब अछि स्वार्थेमे पागल यौ ।
एहेन स्वार्थीसँ कोना देश दुनियाँ 'नन्द' बचतै यौ ।। ० ।।

(१७४)

की हम आजाद छी ?

आइ हम आजाद छी, आ देश अछि आजाद की ?
सब दिशासँ गुञ्जि रहलै, लुट-पाटक सोर छै ।
मुँह बौने माथ पर, महगी सेहो बेजोड़ छै ।

आइ झुलसैत अछि मनुक्खो, जाति-पातिक आगिमे ।
मुदा देशक शांत चित्त, नेता बनल चितचोर छै ।।
धैर्य धारण करू दुःखमे, उक्ति ई गीताक अछि ।
एकर पालन पूर्णतः देशक हमर नेता करैछ ।।
अहाँ जीबू वा मरू, एहिसँ ने कोनो काज अछि ।
धर्म अछि बाँटब समाजो, करब हमरा राज अछि ।।
लुटि सरकारी खजाना, अपन घर भरैत अछि ।
नोर भरने आँखिमे, ऊपरसँ कुहरैत अछि ।।
देश केर टाका विदेशी, बैंकमे अछि जा रहल ।
सार्वजनिक सम्पत्ति के, नित बेचि क' अछि खा रहल ।।
नित्य खेलैत खेल अछि, सर्वत्र आरक्षण केर ।
माथसँ अछि माथ फुटैत, देश टुटत आइ फेर ।।
की करत केओ काज देशक, जीवन सुरक्षित नहि एत' ।
गर्म अछि बाजार, अपहरण फिरौती केर जत' ।।
आइ अनुशासन जरूरी, सभक लेल एहि देशमे ।
चाहे नेता अफ़सर जनता, जे रहत एहि देशमे ।।
देश हो सर्वोपरि, बादमे जाति-सम्प्रदाय हो ।
तखन जन-गण-मन केर मंगल, गान हो एहि देशमे ।।

(१७५)

आतंकवाद

अपनहि घरक सर्वनाश लेल, अपनहि केर शोणित बहबैछ ।
दोसरक झाँसामे आबि क', अपनहि देशक नाश करैछ ।
धर्मक नाम पर मानव, मानवताक रक्त पिबैछ ।
ई तँ अछि छोटका आतंकी, जे भटकल अछि बाट ।
बड़का ओ आर्थिक आतंकी, मारै धोबिया पाट ।

एकरा तँ सभ देखि रहल अछि, जे शोणित बहाबैत अछि ।
ओकरा केओ ने देखि रहल अछि, जे सिरिंच सटाबैत अछि ।
ई तँ जखन-तखन, एकरा-ओकरा नोचैत अछि ।
ओ तँ एकहि ठाम बैसिक', सौंसे दुनियाँ लुटैत अछि ।
एकर माल तँ देशक भीतर, सब केओ मिलि क' बाँटै अछि ।
ओकर माल चुप-चाप ससरि क', स्वीश बैंकमे पहुँचैत अछि ।
एक दिन एहेन भ' जायत, देश होयत कंगाल ।
खाता जकर विदेशमे, रहतै माला-माल ।
स्वीश बैंकमे अपना देशक, एतेक धयल छै टाका ।
तीस वर्ष धरि बनत योजना, सधि नहि पओतै टाका ।
जकरा पकड़त ओ अछि छोटका, जे पकड़त ओ बड़का अछि ।
छोटका भागैछ गली-कुचीमे, बड़का कुर्सी अटकल अछि ।
आब कहू ककरा के पकड़त, खेलैछ चोर-सिपाहिक खेल ।
'नन्दो' टुक-टुक देखि रहल अछि, बाजत तँ कसि जायत नकेल ।। ० ।।

(१७६)

समय

एक समय छलैक,
समयक विशेष महत्व ।
सभ काज समय पर
घड़ी जकाँ टिक-टिक ।
रेल चलल समय पर,
आफीस जायब समय पर ।
रोजगार भेटत समय पर, भोजन समय पर ।
आराम समय पर, मनोरंजन समय पर ।
सामग्री अंकित मूल्य पर, घूसक कतहु चर्च नहि ।

बाजब तौलि क', डेग धरब थाहि क' ।
मुदा आइ-
समय केर मोल नहि, शिक्षाक मान नहि ।
आफीसक बेर नहि, सामग्रीक निर्धारित मूल्य नहि ।
सुरसाक मुँह सनक, बेतहासा मूल्यवृद्धि ।
अस्पतालमे डाक्टर नहि, स्कूलमे टीचर नहि ।
आफीसमे किरानी नहि, फाइलमे आवेदन नहि ।
पाइपमे जल नहि, घरमे बिजुली नहि ।
कोठीमे अन्न नहि, मंदिरमे देव नहि ।
दीपमे तेल नहि, बाप-बेटामे मेल नहि ।
संसदमे वक्ता नहि, पार्टीमे प्रवक्ता नहि ।
झूठ के मथैत छथि, व्यर्थ समय कटैत छथि
जनताक आवाजक नाम पर, 'नन्द' दुनियाँके ठकैत छथि ।।

(१७७)

घूस

एक समय छलैक, अजनबीसँ भय छलैक ।
घूस देनहु नहि लैत छल, लाज छल, संकोच छल ।
काज झट भ' जाइत छल, स्वचालित मशीन जकाँ ।
लोक तँ ओएह अछि, भाव बदलि गेलैक ।
मनमे डर छलैक, जासूसक, निगरानीक ।
बड़का-बड़का भीतर चलि गेल,
जे बाहर छल ओहो,
सशंकित, साकांक्ष, खतरासँ बाहर नहि ।
बादमे-
बाम हाथ टेबुलक नीचाँ, आँखिसँ आँखि नहि मिलए ।

बिचौलिया पर बेसी आश, तकदीर पर विश्वास ।
आब–
चारि आँखि, हाथ टेबुल पर,
जन्मसिद्ध अधिकार, बिना देने गपो नहि ।
गप करबाक हो तँ, बगल केर कुर्सी, आरक्षित करबाउ ।
नहि तँ लाइनमे लागल रहू, नम्बर कहिआ अओत, पता नहि ।
प्रेफरेन्स आरक्षणबलाकेँ, अभिव्यक्तिक आजादीक नाम पर ।
सोर नहि,
अन्यथा घोषित भ' जायब 'नन्द',
आतंकी,
देशद्रोही,
पता नहि की...की.....?

(१७८)

कुर्सी

जेहने जनता, तेहने नेता, बाजब खूब करब किछु नहि ।
एकटा प्रधानमंत्री, आर सब बागी ।
सब त्रस्त आपातकालसँ,
आपातकाल हटल कानून बदलल ।
राहतक साँस लेल, सैंय-बहु मिलि गेल ।
खूब खयलक, खूब लुटलक,
परिवारवादक विरोधी, परिवारवादक पृष्ठपोषक ।
चरित्र गेल चरैक लेल, आँखिक पानि सुखि गेल ।
लाजो पड़ा गेल, लाजसँ, दोसरक कोन गप ।
बस एकहि नारा, कुर्सी पर कब्जा,
येन-केन-प्रकारेण ।

कुर्सीक लेल सब नैतिक, किछु नहि अनैतिक ।
घटकक दबाबे, चुनाव आयोग पर सिकंजा ।
संविधान संशोधन, मौलिक अधिकारक हत्या ।
वोटरक हत्या,
वोटक लूटपाट,
केवल कुर्सीक लेल ।।

(१७९)

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार प्रजातंत्रक अंग,
अंग थिक ओ प्रजातंत्रक, जेना खाटमे खटमल ।
कुर्सीक चारि पौआ,
न्याय पालिका, विधायिका, कार्यपालिका आ मीडिया ।
सब अवसरवादी,
दोसरकेँ ओ भ्रष्ट कहै अछि, स्वयं जे अपने भ्रष्ट ।
एहि बाजारमे सब किछु भेटत, होयत ने कनिञो कष्ट ।
नाक घुमाक' पकड़ब थीक ई, चाहे अहाँ जे बुझी ।
चोर-चोर मसियौत भाय, बिनु ओकरे चिन्हत केओ नहि ।
समाजमे पहचान बनेबाक माध्यम ।
नकली चमक-दमक,
व्यक्तित्वक मोल नहि, टाकाक मोल ।
जाति-धर्म-भगवान, सब किछु टाका ।
बिनु टाका सब सून ।
टाका रहने चिन्हत 'नन्द',
मङने भेटत ने चून ।।

(१८०)

हमर गाम

अनुपम सुखद सुभाषित, हमर गाम सुन्नर लगैए ।
कीर्तिध्वजा फहरैए, हमर गाम सुन्नर लगैए ।।
उत्तर जकर तरौनी शोभित, पांडित्यहुँसँ महिमामंडित ।
दक्षिण भव्य अछि शिवराम, जत' होइछ नयनाभिराम ।
पूर्व अमैठी शिव केर धाम, कहबै अछि अभियंत्रण ग्राम ।
सकल संपदा गामक पश्चिम, जीवछ धार बहैए ।। हमर गाम० ।।
एत' विराजित ब्रह्म देवता, नंद कुमार ठाकुर छथि डीहबार ।
दुर्गा, काली, वीणावादिनि, बिषहारा सबके रखबार ।
संकटमोचन वीर बजरंगी, रामेश्वरम् नाथक एकबाल ।
नाथ नरेश्वर सद्यः जहिठाँ, मनकामना पुरैए ।। हमर गाम० ।।
सब केर भरल-पुरल फुलबाड़ी, धन-धान्यहुँसँ भरल बखारी ।
निर्धनता केर लेश कतहु नहि, प्रमुदित छथि गामक नर-नारी ।
सब केओ धर्मार्चामे तत्पर, सुसंस्कृत सब परोपकारी ।
नव पीढ़ीमे केओ नहि अनपढ़, ज्ञानक दीप जरैए ।। हमर गाम० ।।
छलाह चौधरी चेत रायजी, हंसराज देव, शाह हुसैन बक्स ।
झोंटी चाँढ़, राउत ननकिरबू, अही गाछ केर डारि-पात सब ।
आपसमे सब हिलि-मिलि रहिऔ, एक दोसरसँ द्वेष ने करिऔ ।
ककरोसँ नहि रहल असर्द्धा, स्नेह सुधा बरिसैए ।
हमर गाम सुन्नर लगैए ।। हमर गाम० ।।

(१८१)

राज मिथिला हम लेबै

अपन माटि ओ अपन पानि, आ अपन लेबै अधिकार ।
सहजहि नहि तँ लड़ि क' लेबै, कफन बान्हि तैयार ।।
राज मिथिला हम लेबै, राज मिथिला हम लेबै ।।
गौतम, कपिल कणादक पावन, सुन्दर मिथिला धाम ।
भारती, मंडन और अयाची, याज्ञवल्क्य केर गाम ।
जनमलि जत' जगत केर जननी, पड़लनि सीता नाम ।। ० ।।
गंगा, कमला, कोसी, गंडक, बहै जत' अछि धार ।
डारि बैसि क' कीर करै अछि, वेदमंत्र संचार ।
जनकनंदिनी संग जोड़ल अछि, प्रीत जत' श्रीराम ।। ० ।।
भेल ने कतहु विकास एहिठाँ दिग दिंगत-दिंगाचलमे ।
लुप्त भेल जे पहिनहुँसँ छल, लघुद्योग मिथिलांचलमे ।
माछ-मखान अलोपित, दाही-रौदीसँ नहि त्राण ।। ० ।।
कर्मभूमि राजा सलहेसक, लोरिक, दुलरा दयाल ।
चमकि रहल दीनाभद्री, कारु-खिरहरि केर ढाल ।
पूर्ण होयत सपना मिथिला केर, 'नन्द' करए अनघोल ।।
राज मिथिला हम लेबै...

हम तबाह छी

1. भोरक चाहसँ ।
माल मरखाहसँ ।
जन-हरबाहसँ ।
सौतिनिक डाहसँ ।
कुकुर कटाहसँ ।

2. टिनही लोटासँ
चिल्काक पोटासँ ।
आजुक अभिनेतासँ ।
दलबदलू नेतासँ ।
एकलौता बेटासँ ।

3. भङ्गठल कारसँ ।
टाइफाइड बोखारसँ ।
युवक बेरोजगारसँ ।
दिल्ली दरबारसँ ।
राबड़ी सरकारसँ ।

4. नवका भाङ्गसँ ।
कननमुहाँ समाङ्गसँ ।
लटर-पटर टाङ्गसँ ।
दैवक डाङ्गसँ ।
दहेजक माङसँ ।

5. टूटल खाटसँ ।
धोबिया घाटसँ ।
कोशीक पाटसँ ।
ओकीलक काटसँ ।
एकपेड़िया बाटसँ ।

6. छुच्छ फुटानीसँ ।
तेल नूरानीसँ ।
बेमेल कहानीसँ ।
घटक खानदानीसँ ।
सासुक किरदानीसँ ।

7. बाँसक मेहसँ ।
चितारक मेघसँ ।
पड़ोसिन केर नेहसँ ।
बिमारी प्रमेहसँ ।
जेठ सासुक घेघसँ ।

8. सोखा भगवतीसँ ।
भादवक जुरपित्तीसँ ।
छौड़ा अगत्तीसँ ।
फुटपाथक अगरबत्तीसँ ।
घोड़ीक दुलत्तीसँ ।

9. मूनल कोठीसँ ।
माछमे पोठीसँ ।
सासुक गलथोथीसँ ।
सारिक चोटीसँ ।
कनियाँक ठेसीसँ ।

10. तीतल जाड़निसँ ।
कोकनल लाड़निसँ ।
कनियाँक बाढ़निसँ ।
काकी पड़तारनिसँ ।
बुढ़िया घर उजारनिसँ ।

11. फाटल जालसँ ।
सूखल तालसँ ।
हरही मालसँ ।
पूनम केर गालसँ ।
सासुरक जंजालसँ ।

12. तिरछी नयनवाणसँ ।
मन्द मुस्कानसँ ।
पत्नीक कमानसँ ।
पड़ोसिन केर शानसँ ।
बिनु मौसम केर तानसँ ।

13. फुसियाही नोरसँ ।
पाकल परोड़सँ ।
चतुर्थीक भोरसँ ।
घटा घनघोरसँ ।
कनियाँ मुँहजोरसँ ।

14. जेठक दुपहरियासँ ।
साओनक बदरियासँ ।
भादवक अन्हरियासँ ।
पूसक इजोरियासँ ।
चमचिकनी बहुरियासँ ।

15. अनमुनहा अधिकारीसँ ।
कार्यालय सरकारीसँ ।
बैगनक तरकारीसँ ।
सुक्खल सोहारीसँ ।
लालुक होशियारीसँ ।

16. बस केर ओभरलोडसँ ।
बिहारक रोडसँ ।
विधायक केर मोडसँ ।
इंडियन पिनाइल कोडसँ ।

17. माय सतमायसँ ।
हरही गायसँ ।
सहोदर भायसँ ।
रूसल जमायसँ ।
स्टेशन केर चायसँ ।

18. अरिया चोरसँ ।
पड़ोसिन चितचोरसँ ।
नेताक गठजोड़सँ ।
माल उजोरसँ ।
जोगीड़ाक तोड़सँ ।

19. अपना गामसँ ।
पिलुआहा आमसँ ।
कनहा मामसँ ।
घाव कुठामसँ ।
कनियाँक ताम-झामसँ ।

20. बेटिक बाढ़िसँ ।
दियादक कुकुरमारिसँ ।
करीकबी सारिसँ ।
जेठक बिहाड़िसँ ।
बिझायल तरुआरिसँ ।

21. नारी दूधारीसँ ।
बाबाक बखारीसँ ।
पाजीक सरदारीसँ ।
सड़ल सुपाड़ीसँ ।
दालि खेसारीसँ ।

22. बेटा भुस्कौलसँ ।
बनियाँ कमतौलसँ ।
सासुरक चौलसँ ।
ओल सनके बोलसँ ।
दूरक ढोलसँ ।

23. ट्रेनक उड़ीससँ ।
ट्रेफीक पुलीससँ ।
भजहा महींससँ ।
सौतिनिक खबीससँ ।
डाक्टर के फीससँ ।

(विधात्रीसँ)

(१८२)

देशभक्ति गीत

जय जय भारत देश हमर ई, जय जय भारत देश ।
विविध धर्म-भाषासँ भूषित, विविध रंग ओ भेष ।।
मुकुट बनल अछि जकर हिमालय, उत्तर सीमा ठाढ़ ।
दक्षिण चरण पखारि रहल अछि, नित सागर सम्राट् ।।
महावीर ओ बुद्ध देलनि अछि, जतए प्रेम संदेश ।। जय....
स्वर्गहुँसँ सुन्दर लागै अछि, कश्मीरक फुलवाड़ी ।
जकरा देखबा लेल अबैत अछि, संसारक नर-नारी ।
सत्य अहिंसा छोड़ि सकब नहि, कतबहु होएत कलेश ।। जय....
जतए जन्म लेलनि जवाहर, गाँधी, पटेल, सुभाष !
तोड़ि देलनि जंजीर गुलामीक, देश कैलनि आजाद ।
भगतसिंह केर बलिदानो नहि, बिसरत कहियो देश ।। जय....

(१८४)

देशभक्ति गीत

थिकै गाँधी केर देश ई विद्यापति के ग्राम ।
बौआ हाथ जोड़ि करू एहि माटि के प्रणाम ।।
मंडन अयाचीक पावन ई भूमि छै ।
डारि-डारि बैसि कीर वेदो पढ़ैत छै ।
प्रीतो जोड़ल जतए सीतासँ राम ।। बौआ...
सब ठाम शान्ति केर सरिता बहैत अछि ।
घर-घरमे रामायण गीता गुञ्जैत अछि ।
उगना जतए आबि बनलइ गुलाम ।। बौआ...
स्वर्गहुसँ सुन्दर ई देशो हमर छै ।
गौतम-महावीरक उद्गम एतहि छै ।
जगतजननी जानकीक पावन ई धाम ।। बौआ...
सत्य ओ अहिंसा के हम छी पुजारी ।
राग-द्वेष भेद-भाव फेकबै बहारी ।
गाँधी केर सपना के देबै अंजाम ।। बौआ...

(विधात्रीसँ)

श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

जन्म	:	2 जनवरी, 1950
जन्म स्थान	:	भैरव बलिया (मातृक)
पिता	:	स्व. बैद्यनाथ मिश्र सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण
माता	:	स्व. गोसाउनि देवी करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
पत्राचारक पता	:	ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233
शिक्षा	:	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर
वृत्ति	:	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)
रुचि	:	गीत-संगीत, मैथिली कथा आ कविताक माध्यमे सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य रचना
प्रकाशित पोथी	:	विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) 2004 गामघर - (कथा संग्रह) 2005 सुजाता - (उपन्यास) 2006 महारानी कैकेयी - (प्रवचनात्मक निबंध) 2008 गुदड़ीक लाल - उपन्यास) 2008 अनठिया कुकुर - (उपन्यास) 2011 सुन्दरकाण्ड - (सम्पादन) 2015 आडम्बर - (कथा संग्रह) 2017 दिल्लीक पार्क - (शब्दचित्र) 2018 सुकन्या - (उपन्यास) 2019 स्वर्ण कमल - (बाल उपन्यास) 2019
उपाधि	:	'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ; भागलपुर, बिहार)
	:	'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' (राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर)
	:	'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)
	:	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)।
सम्पर्क	:	08986261756